प्रवासन और भारतीय प्रवासी समूह - सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास

(Migration and Indian Diaspora-Social and Cultural Histories)

बी.ए. (प्रोग्राम) इतिहास

सेमेस्टर-VII

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE (DSE)

COURSE CREDIT-4

As per the UGCF - 2022 and National Education Policy 2020

READING NOTES

अनुक्रम

		पेज नं.
इकाई 1	प्रवासन और डायस्पोरा की समझ: सैद्धांतिक और ऐतिहासिक रूपरेखा	1-14
इकाई 2	(खण्ड-1) प्रवासी भारतीयों का सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास	15-33
	(खण्ड-2) भारतीय डायस्पोरा के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास का विस्तृत विवरण	34-41
इकाई 3	प्रवासी भारतीयों में राजनीतिक अर्थव्यवस्था और समकालीन मुद्दे	42-53
इकाई 4	भारतीय प्रवासी समुदायों के समक्ष चुनौतियाँ	54-62

Printed at: Vikas Publishing House Pvt. Ltd. Plot 20/4, Site-IV, Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad - 201 010 (1000 Copies) October 2026

प्रवासन और डायस्पोरा की समझ: सैद्धांतिक और ऐतिहासिक रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

यह इकाई प्रवासन (Migration) और डायस्पोरा (Diaspora) की जटिल संकल्पनाओं को उनके सैद्धांतिक एवं ऐतिहासिक रूपरेखाओं के संदर्भ में व्याख्यायित करने हेतु संरचित है। डायस्पोरा पद (term) आज व्यापक रूप से उन समुदायों का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त होता है जिन्हें 'वित्राजित' (deterritorialised) या 'पारराष्ट्रीय' (transnational) माना जाता है। ये वे जनसंख्याएँ हैं जिनकी उत्पत्ति उस भूमि के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर हुई है जहाँ वे वर्तमान में निवास करती हैं, और जिनके नेटवर्क राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं को पार करते हैं। डायस्पोरा सिद्धांत आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की प्रभुसत्ता (hegemony) के समक्ष एक अनूठी चुनौती प्रस्तुत करता है, क्योंकि यह प्रदर्शित करता है कि एक राजनीतिक या भौगोलिक इकाई के साथ पहचान द्विआधारी (binary) नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसमें एक से अधिक संस्थाओं के प्रति निष्ठा शामिल हो सकती है। डायस्पोरा की संकल्पनाओं को प्रायः मातृभूमि के फैलाव के इतिहास (history of dispersal), मातृभूमि की सामूहिक स्मृति या मिथकों और सामूहिक पहचान के निर्माण के माध्यम से परिभाषित किया जाता है।

भारतीय प्रवासन के ऐतिहासिक प्रतिरूपों में प्राचीन, मध्यकालीन और प्रारंभिक आधुनिक चरण शामिल हैं, जिसके बाद औपनिवेशिक काल की महत्वपूर्ण लहर आई। इस चरण में गिरमिटिया श्रम प्रणाली (Indentured Labour) के तहत श्रमिकों का वैश्विक प्रसार हुआ, जिसे 'गुलामी की एक नई प्रणाली' (A New System of Slavery) के रूप में भी वर्णित किया गया है। तत्पश्चात, उत्तर-औपनिवेशिक प्रवासन में एक नई लहर का उदय हुआ, जिसमें उत्तरी अमेरिका, यूरोप और मध्य पूर्व जैसे क्षेत्रों में उच्च-कुशल पेशेवरों का विस्थापन हुआ। समकालीन संदर्भ में, भारतीय डायस्पोरा को भारत के लिए मज़बूत आर्थिक, रणनीतिक, बौद्धिक और राजनयिक संपत्ति के रूप में देखा जाता है। यह इकाई इन विविध ऐतिहासिक प्रक्रियाओं और पारराष्ट्रीय पहचानों के सैद्धांतिक विश्लेषण पर केंद्रित है, जो आत्मसात्करण (assimilation) और बहुसंस्कृतिवाद (multiculturalism) जैसे मेज़बान देश के मानदंडों से निरंतर संवाद में रहती है।

1.2 प्रवासन और डायस्पोरा की संकल्पनाएँ और सैद्धांतिक रूपरेखा

प्रवासन अध्ययन के संदर्भ में, गतिशीलता (mobility) सबसे सामान्य अवधारणा है। इसमें भौगोलिक हलचलों (territorial movements) के सभी रूप सम्मिलित हैं, चाहे वे अस्थायी हों या स्थायी। ऐतिहासिक साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि प्रवासन कोई नई घटना नहीं है बल्कि मनुष्य हमेशा से अपनी जीवन शैली की प्रगति के लिए विस्थापित होते रहे हैं।

डायस्पोरा शब्द ने एक व्यापक अर्थ संबंधी डोमेन (semantic domain) अर्जित कर लिया है। अब यह राजनीतिक शरणार्थियों, अतिथि श्रमिकों, अप्रवासियों, निष्कासित लोगों, जातीय और नस्लीय अल्पसंख्यकों, तथा विदेशी समुदायों (overseas communities) जैसे विविध समूहों को समाहित करता

है। इसका उपयोग उन विस्थापित व्यक्तियों द्वारा तेज़ी से किया जाता है जो अपनी पूर्व मातृभूमि (prior home) के साथ किसी संबंध को महसूस करते हैं, उसे बनाए रखते हैं तथा उसे पुनर्जीवित करते हैं।

डायस्पोरा की संकल्पनाओं में कई आवश्यक विशेषताएँ शामिल हैं। ऐसे जनसंख्या का अपने मूल 'केंद्र' से दो या दो से अधिक विदेशी क्षेत्रों में प्रसरण, जो प्रायः आघातजन्य तरीके से, या काम, व्यापार, या औपनिवेशिक महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए हुआ था। इसमें अपनी मूल मातृभूमि के स्थान, इतिहास और उपलब्धियों के बारे में एक सामूहिक स्मृति या मिथक को बनाए रखने की प्रवृत्ति होती है। वास्तविक या काल्पनिक पैतृक घर का आदर्शीकरण और उसके रखरखाव, सुरक्षा, समृद्धि या यहां तक कि उसके निर्माण के लिए एक सामूहिक प्रतिबद्धता शामिल है। डायस्पोरा मेज़बान देश में विसंगति या परायापन (alienation) का अनुभव करता है। वह एक ऐसी सामूहिक पहचान जो उपरोक्त संबंधों द्वारा परिभाषित होती है से अलग पहचान स्थापित करता है।

1.3 डायस्पोरा का सैद्धांतिक प्रतिमान और मुख्य घटक

डायस्पोरा सिद्धांत की संरचना तीन प्रमुख अभिकर्ताओं (principal actors) के इर्द-गिर्द की जाती है। मातृभूमि (Homeland), डायस्पोरा समूह (Diaspora Group), और मेज़बान (Host)। इन तीनों का संबंध बहुआयामी और परिवर्तनशील होता है। विद्वानों का लक्ष्य वर्णनात्मक अनुसंधान से आगे बढ़कर एक व्यापक वर्गीकरण (typology) विकसित करना है जो डायस्पोरा के विभिन्न प्रकारों की विशेषताओं का मानचित्रण (mapping) कर सके।

सैद्धांतिक संबंध और अंतर्क्रियाएँ: डायस्पोरा सिद्धांत अन्य प्रमुख सैद्धांतिक विषयों से गहराई से जुड़ा हुआ है।

जातीय सिद्धांत (Ethnic Theory)

जातीय सिद्धांत (Ethnic Theory) की संकल्पना डायस्पोरा सिद्धांत (Diaspora Theory) के साथ आंतरिक रूप से जुड़ी हुई है, और यह एक स्वतंत्र सैद्धांतिक श्रेणी होते हुए भी अन्य विमर्शों से गहन रूप से संबंधित है। यह सिद्धांत इस मूल धारणा पर आधारित है कि व्यक्ति एक साझा सामाजिक पहचान (shared identity) की तलाश करता हैं। यह तलाश विशेष रूप से बड़े पैमाने पर शहरीकरण (urbanization) के युग में और स्थानीय, विशिष्ट संबंधों के कमज़ोर होने की स्थिति में महत्त्वपूर्ण हो जाती है। जातीय सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य उन प्रक्रियाओं को समझना है जिनके माध्यम से लोग इतिहास, भाषा (कुछ मामलों में धर्म), और पिछली उपलब्धियों की समानताओं के आधार पर अपनी पहचान व्युत्पन्न करते हैं। यह साझा पहचान सामूहिक एकजुटता (solidarity) का एक आधार प्रदान करती है।

सैद्धांतिक दृष्टि से, डायस्पोरा का गठन जातीयता का एक विशेष मामला माना जाता है, क्योंकि वे काल्पनिक पारराष्ट्रीय समुदाय (imagined transnational communities) होते हैं जो क्षेत्रीय रूप से पृथक स्थानों पर रहने वाले लोगों के वर्गों को एकजुट करते हैं। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सभी प्रवासी समुदाय नहीं बनाते हैं, और सभी प्रवासी समुदायों को डायस्पोरा के रूप में समान मानना एक वैचारिक त्रुटि है। जातीय पहचान में "मातृभूमि" (homeland) के तत्व को जोड़ना एकजुटता के लिए एक अतिरिक्त केंद्रबिंदु (additional focus) प्रदान करता है। उदाहरणार्थ, देश (मातृभूमि) के प्रयोग के पीछे अक्सर विशिष्टता (exclusivism) और शुद्धता पर आधारित जातीय सिद्धांत खड़े होते हैं, जो समूह की धार्मिक रूप से आधारित सांप्रदायिक एकजुटता से जुड़े हो सकते हैं।

ऐतिहासिक रूप से, 1960 के दशक से पहले, आप्रवासी समूहों से अपनी जातीय पहचान को त्यागने और स्थानीय मानदंडों में आत्मसात (assimilate) होने की सामान्य अपेक्षा की जाती थी। परंतु जब यह आत्मसात्करण मॉडल प्रभावी ढंग से विफल हो गए, तो 1970 के दशक के बाद कुछ समाजों ने आप्रवासियों को उनकी जातीय परंपराओं के विभिन्न पहलुओं को बनाए रखने की अनुमति दी या उसे प्रोत्साहित किया। इस प्रकार, जातीयता का पुनरुत्थान (resurgence of ethnicity) ऐसे समय में हुआ जब पुराने आधुनिकीकरण सिद्धांत (modernization theory) के अनुसार इसे लुप्त हो जाना चाहिए था। यह पुनरुत्थान बहु-जातीय (multi-ethnic) एवं बहु-सांप्रदायिक राज्यों की समकालीन वास्तविकता को पुष्ट करता है।

पारराष्ट्रीयता और वैश्वीकरण

पारराष्ट्रीयता (Transnationalism) और वैश्वीकरण (Globalization) का विमर्श डायस्पोरा सिद्धांत (Diaspora Theory) के सैद्धांतिक आधार से गहराई से जुड़ा हुआ है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में विश्वव्यापी वित्तीय, आर्थिक, तकनीकी और पारिस्थितिक पारस्परिक निर्भरता (interdependence) अभिव्यक्त होती है। यह प्रक्रिया वस्तुएँ, पूँजी, ज्ञान और संस्कृति जैसी अनेक चीजों को क्षेत्रीय सीमाओं के आर-पार प्रवाहित करती है। विगत दो दशकों में संचार माध्यमों (लिखित, मौखिक, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट) में हुई नाटकीय वृद्धि ने एक तेज़ी से परस्पर जुड़ी दुनिया का निर्माण किया है। सस्ते परिवहन के साधनों के साथ मिलकर, उन्नत संचार प्रौद्योगिकियाँ सूचना और छवियों के त्वरित प्रसार को संभव बनाती हैं, जिससे विश्वव्यापी अंतर्संबंधों की तीव्रता और वेग (velocity) में वृद्धि हुई है।

इस भूमंडलीकृत पृष्ठभूमि में, पारराष्ट्रीयता की संकल्पना उन निरंतर सीमा-पार संबंधों (sustained cross-border relationships), विनिमय के प्रतिरूपों और सामाजिक विन्यासों को संदर्भित करती है जो राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं को लांघते हुए व्यक्तियों या संस्थाओं को जोड़ते हैं। विद्वान टॉल्योल्यान (Tololian) इस संबंध को रेखांकित करते हुए कहते हैं कि "डायस्पोरा पारराष्ट्रीय क्षण के अनुकरणीय समुदाय हैं"। पारराष्ट्रीय विमर्श निरंतर पारराष्ट्रीय नेटवर्क का एक अंग होने की भावना को परिलक्षित करता है जिसमें मूल मातृभूमि भी शामिल होती है।

पारराष्ट्रीय जीवन की विशिष्टता यह है कि यह एक स्थान पर रहने के साथ-साथ, दूसरे स्थान को याद करने अथवा उसकी लालसा रखने की भावना से चिह्नित होता है। यह दृष्टिकोण उन बहु-केंद्रित डायस्पोरा (multiple centred diasporas) की अवधारणा को जन्म देता है, जिनका जीवन दो या दो से अधिक राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं के पार संचालित होता है। पारराष्ट्रीयता आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की प्रभुसत्ता को एक अनूठी चुनौती प्रस्तुत करती है। यह इस पारंपरिक मान्यता को भंग करती है कि किसी राजनीतिक या भौगोलिक इकाई के प्रति निष्ठा अनन्य (exclusive) होनी चाहिए, और इसके स्थान पर यह स्थापित करती है कि पहचान में एक से अधिक संस्थाओं के प्रति निष्ठा शामिल हो सकती है। इस प्रकार, पारराष्ट्रीयता, आत्मसात्करण (assimilation) की अवधारणाओं और राष्ट्र-राज्य की एकाधिकार निष्ठा (exclusive loyalty) के दावों को बहु-पहचानों (multiple identities) के विकल्प से चुनौती देती है। यह पारराष्ट्रीय संबंध समूहों और समाजों के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्यों में परिवर्तन लाते हैं।

पहचान की प्रकृति

समकालीन साहित्य में, डायस्पोरा की संकल्पना को समझने के लिए तीन सुसंगत अर्थों की पहचान की गई है, जिन्हें क्रमशः सामाजिक स्वरूप, चेतना के प्रकार और सांस्कृतिक उत्पादन की विधा के रूप में समझा जाता है। डायस्पोरा को एक सामाजिक संरचना के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो भावनाओं, चेतना, स्मृति, पौराणिक कथाओं, इतिहास, सार्थक आख्यानों, सामूहिक पहचान (group identity), लालसाओं और आभासी तत्वों पर स्थापित होती है। सामाजिक स्वरूप के रूप में डायस्पोरा वैश्विक रूप से फैले हुए उन जातीय समूहों को दर्शाता है जो स्वयं की एक सामूहिक पहचान बनाए रखते हैं। यह प्रायः एक त्रिपक्षीय संबंध (triadic relationship) के माध्यम से संचालित होता है, जिसमें फैला हुआ समूह, निवास के क्षेत्रीय राज्य, और मूल मातृभूमि राज्य शामिल होते हैं। विद्वानों ने डायस्पोरा को "पारराष्ट्रीय क्षण के अनुकरणीय समुदाय" के रूप में भी वर्णित किया है।

चेतना एक विशिष्ट प्रकार की जागरूकता है जो समकालीन पारराष्ट्रीय समुदायों में उत्पन्न होती है। इसकी विशेषता द्वैत या विरोधाभासी प्रकृति है। एक ओर, यह भेदभाव और बहिष्कार के अनुभवों से नकारात्मक रूप से निर्मित होती है, और दूसरी ओर, यह ऐतिहासिक विरासत या समकालीन वैश्विक सांस्कृतिक/राजनीतिक शक्तियों के साथ सकारात्मक पहचान से पोषित होती है। जेम्स क्लिफोर्ड (James Clifford) के अनुसार, डायस्पोरा चेतना हानि और आशा (loss and hope) के परिभाषित तनाव में जीती है। यह बहु-स्थानिकता (multi-locality) की जागरूकता है, जहाँ "यहाँ रहते हुए भी, वहाँ के साथ एक एकजुटता और जुड़ाव माना जाता है"।

सांस्कृतिक उत्पादन की विधा का आयाम वैश्वीकरण के साथ जुड़ा हुआ है और डायस्पोरा को पारराष्ट्रीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिघटनाओं के उत्पादन एवं पुनरुत्पादन की विधा के रूप में देखता है। इस प्रक्रिया में सांस्कृतिक वस्तुओं, छवियों और अर्थों का विश्वव्यापी प्रवाह शामिल होता है, जिसके परिणामस्वरूप संकरण (hybridity), क्रियोलाइज़ेशन (creolisation), और परिवर्तन की विविध प्रक्रियाएँ सामने आती हैं। स्टुअर्ट हॉल (Stuart Hall) के दृष्टिकोण में, डायस्पोरा पहचान सार या शुद्धता पर आधारित नहीं है, बल्कि आवश्यक विषमता (necessary heterogeneity) और विविधता की मान्यता पर आधारित है। ये पहचानें निरंतर परिवर्तन और भिन्नता के माध्यम से स्वयं को पुनः उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार, डायस्पोरा "संस्कृति की एक संकरित, अनिश्चित, और वि-क्षेत्रीयकृत (deterritorialized)" अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

डायस्पोरा, आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की प्रभुसत्ता के लिए एक अनूठी चुनौती प्रस्तुत करता है। यह स्पष्ट करता है कि किसी राजनीतिक या भौगोलिक इकाई के प्रति पहचान या निष्ठा द्विआधारी (binary) (या तो सब कुछ या कुछ नहीं) होने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इसमें एक से अधिक संस्थाओं के प्रति निष्ठा शामिल हो सकती है। इस प्रकार, आत्मसात्करण (assimilation) की पारंपरिक धारणाओं और एक राष्ट्र के प्रति अनन्य निष्ठा के दावों को डायस्पोरा द्वारा चुनौती दी जाती है, जो एक साथ मेज़बान राष्ट्र-राज्य और अन्य राष्ट्र-राज्यों में स्थित लोगों से संबंध रखते हैं। यह सामाजिक पहचान के गैर-क्षेत्रीयकरण (deterritorialization) को जन्म देता है, जिससे एकाधिकार निष्ठा के लिए राष्ट्र-राज्य के दावों को बहु-पहचानों (multiple identities) के विकल्प से चुनौती मिलती है।

हाल के वर्षों में, सामाजिक रचनावादी (social constructionist) आलोचनाएँ भी सामने आई हैं। इनका

तर्क है कि पोस्टमॉडर्न दुनिया में पहचानें गैर-क्षेत्रीय और लचीली (flexible) हो गई हैं, जिन्हें एक तरल और स्थितिजन्य तरीके से निर्मित और विखंडित किया जाता है। ब्रूबेकर (Brubaker) ने इस प्रसार को "डायस्पोरा का डायस्पोरा" कहा है। इन आलोचनाओं के बावजूद, एक समेकन चरण में सैद्धांतिकों ने डायस्पोरा के तीन मुख्य तत्वों यथा फैलाव, मातृभूमि की ओर उन्मुखीकरण, और सीमा अनुरक्षण को पुन: स्थापित किया है ।

डायस्पोरा में एक विशेष प्रकार की चेतना उत्पन्न होती है, जिसे द्वैत या विरोधाभासी प्रकृति द्वारा चिह्नित किया जाता है। यह एक ओर भेदभाव और बहिष्कार के अनुभवों से, और दूसरी ओर ऐतिहासिक विरासत या समकालीन विश्व शक्तियों के साथ पहचान से निर्मित होती है। विद्वान यह सुझाव देते हैं कि डायस्पोरा चेतना हानि और आशा को एक परिभाषित तनाव के रूप में जीती है।

1.4 भारतीय प्रवासन प्रतिरूप: प्राचीन से उत्तर-औपनिवेशिक काल तक

भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवासन की प्रक्रियाएँ कोई समकालीन परिघटना नहीं हैं; यह हड़प्पा युग और वैदिक युग के दौरान भी विद्यमान रही है। पुराने डी.एन.ए. अध्ययनों से यह स्थापित होता है कि भारत में प्रवासन एक चिरस्थायी घटना रही है। ईसा पूर्व की अवधि से पहले महान मैदानी क्षेत्र का बसाव भारतीय वैश्विक इतिहास में एक जलविभाजक क्षण था। प्रारंभिक प्रवासन की लहरों में, ईरान के जैग्रोस क्षेत्र से आए कृषकों ने पहले भारतीयों के साथ मिलकर संभवतः हड़प्पा सभ्यता को जन्म दिया (लगभग 9,000 से 5,000 वर्ष पूर्व)। इसके अतिरिक्त, लोग तीर्थयात्रा, व्यापार और जलवायुगत कारणों से विस्थापित होते रहे। राजनीतिक और आर्थिक गतिविधियों को सुगम बनाने के लिए मार्गों का विकास किया गया। उदाहरण के लिए, मौर्य प्रशासन ने तक्षशिला से पाटलिपुत्र तक एक शाही राजमार्ग का निर्माण किया था, जिसे बाद में शेरशाह, मुगलों और ब्रिटिशों द्वारा ग्रैंड ट्रंक रोड के रूप में पुनर्निर्मित किया गया। इस प्रकार के संपर्क ने दूर-दराज के क्षेत्रों को व्यापारिक नेटवर्क से जोड़ा। प्रारंभिक आधुनिक काल में, सिंधी और पारसी जैसे व्यापारिक समूहों ने व्यापार डायस्पोरा के रूप में अपनी उपस्थिति स्थापित की, विशेष रूप से खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) देशों में व्यावसायिक अवसरों का लाभ उठाते हुए।

औपनिवेशिक काल का प्रवासन

गिरमिटिया श्रम: भारतीय प्रवासन इतिहास में सबसे व्यापक और आघातजन्य चरण औपनिवेशिक काल में आया, जो मुख्य रूप से गिरमिटिया श्रम प्रणाली (Indenture System) द्वारा चिह्नित है। यह प्रवासन औद्योगिक क्रांति के साथ आरंभ हुआ, क्योंकि औपनिवेशिक शक्तियों को गन्ने, चाय, कॉफी और रबड़ के बागानों के लिए सस्ते और प्रचुर श्रम की आवश्यकता थी। गिरमिट को एक ठेका-बद्ध शारीरिक श्रम समझौता के रूप में परिभाषित किया गया था, जिसका उद्देश्य श्रमिकों को एक निर्धारित अवधि के लिए कार्य हेतु बाध्य करना था। यह प्रणाली औपचारिक रूप से 1834 में अस्तित्व में आई और 1917 में कानून द्वारा समाप्त होने तक चली। इतिहासकार ह्यू टिंकर ने इस व्यवस्था को "गुलामी की एक नई प्रणाली" (A New System of Slavery) की संज्ञा दी।

इस प्रणाली के तहत, एक मिलियन से अधिक भारतीयों को विस्थापित किया गया। उत्प्रवासित लोग मुख्यतः भूमिहीन कृषि मज़दूर, सीमान्त किसान, अशिक्षित और बाहरी दुनिया की वास्तविकताओं से अनभिज्ञ भोले-भाले ग्रामीण निर्धन थे, जिन्हें अक्सर छल से भर्ती किया जाता था। इनमें से अधिकांश उत्तरी, दक्षिणी और मध्य भारत के क्षेत्रों, जैसे संयुक्त प्रांत, बिहार, उड़ीसा और अवध से आए थे। प्रस्थान

का मुख्य बंदरगाह कलकत्ता था, जिसके कारण ये प्रवासी 'कल्कत्तिया' कहलाए। इन श्रमिकों को मॉरीशस, ब्रिटिश गुयाना, त्रिनिदाद, जमैका, फीजी और नेटाल जैसे सुदूर उपनिवेशों में भेजा गया। मेज़बान समाजों में उन्हें बहिष्करण और शत्रुतापूर्ण रवैये का सामना करना पड़ा। बागान का जीवन कठोर था, जिसे "नर्क" (hell - *नारक*) या "वेश्यालय" (brothel - *कसभागर*) के रूप में वर्णित किया गया है।

गिरमिटिया श्रमिक और भारतीय श्रमिकों का वैश्विक प्रसार

भारतीय प्रवासन इतिहास में औपनिवेशिक काल का प्रवासन एक जलविभाजक क्षण रहा है, जो मुख्य रूप से गिरमिटिया श्रम प्रणाली द्वारा परिभाषित है। यह विशाल श्रमिक उत्प्रवास औद्योगिक क्रांति के बाद शुरू हुआ, जब 1833 में दास प्रथा समाप्त होने के पश्चात् ब्रिटिश उपनिवेशों में गन्ना, चाय, कॉफी और रबड़ के बागानों के लिए सस्ते और अप्रशिक्षित श्रम की भारी माँग उत्पन्न हुई। इतिहासकारों ने इस व्यवस्था को "गुलामी की एक नई प्रणाली" की संज्ञा दी है।

'गिरमिट' को एक ठेका-बद्ध शारीरिक श्रम समझौते के रूप में परिभाषित किया गया था, जिसके तहत श्रमिक एक निश्चित अवधि (प्रायः पाँच वर्ष) के लिए काम करने हेतु बाध्य होते थे। यह व्यवस्था औपचारिक रूप से 1834 में शुरू हुई, जब मॉरीशस को पहले जत्थे के लिए "महान प्रयोग" (Great Experiment) के केंद्र के रूप में चुना गया। 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान, इस प्रणाली ने एक मिलियन से अधिक भारतीयों को विस्थापित किया।

इस सामूहिक उत्प्रवास के मूल में भारत में व्याप्त दयनीय सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ थीं। ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के कारण उत्पन्न हुए कुटीर उद्योग का पतन, अत्यधिक भू-राजस्व, और बार-बार पड़ने वाले अकाल ने भूमिहीन कृषि मज़दूरों और सीमान्त किसानों को प्रवासन के लिए मजबूर किया। अधिकांश भर्ती उत्तरी भारत (मुख्यतः पश्चिमी बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश) तथा दक्षिणी भारत की मद्रास प्रेसीडेंसी से की जाती थी। इन श्रमिकों को छल से या बेहतर जीवन की झूठी उम्मीदों से आकर्षित करके भर्ती किया जाता था।

इन गिरमिटिया श्रमिकों (Girmitiyas), जिन्हें उनके समझौते (Agreement) के कारण यह नाम मिला, का फैलाव व्यापक था। प्रमुख गंतव्यों में ब्रिटिश गुयाना, त्रिनिदाद, फिजी, नेटाल (दक्षिण अफ्रीका), जमैका और सूरीनाम शामिल थे। लंबी और कष्टदायी समुद्री यात्राओं के दौरान पारंपरिक जाति, धर्म और भाषा की बाधाएँ समाप्त हो गईं, और बचे हुए प्रवासी एक-दूसरे को 'जहाजी भाई' (Ship brothers) कहकर संबोधित करते थे। यद्यपि यह व्यवस्था 1917 में कानून द्वारा समाप्त कर दी गई, इन 6 मिलियन शुद्ध उत्प्रवासियों की संतति ने आज एक विशाल वैश्विक भारतीय डायस्पोरा का निर्माण किया है, जो अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोए हुए है।

गिरमिटिया श्रम प्रणाली

गिरमिटिया श्रम प्रणाली, जो कि ठेका-बद्ध शारीरिक श्रम समझौता (Indenture System) पर आधारित थी, भारतीय प्रवासन इतिहास का एक महत्वपूर्ण और आघातजन्य चरण है। इस प्रणाली को कुछ इतिहासकारों ने "गुलामी की एक नई प्रणाली" (A New System of Slavery) के रूप में वर्णित किया है। यह व्यवस्था 1834 में औपचारिक रूप से अस्तित्व में आई और यह औद्योगिक क्रांति के बाद शुरू हुई, जब 1833 में दास प्रथा समाप्त होने के कारण ब्रिटिश उपनिवेशों में गन्ने, चाय, कॉफी और रबड़ के बागानों के लिए सस्ते और प्रचुर श्रम की आवश्यकता उत्पन्न हुई।

गिरमिटिया श्रमिकों का उत्प्रवास भारत में व्याप्त सामाजिक-आर्थिक विपन्नता के कारण हुआ, जिसमें कुटीर उद्योग का पतन, अत्यधिक भू-राजस्व की नीतियाँ, और बार-बार पड़ने वाले अकाल शामिल थे। भर्ती किए गए अधिकांश लोग भूमिहीन कृषि मज़दूर, सीमान्त किसान, और अशिक्षित ग्रामीण निर्धन थे। ये प्रवासी प्रायः उत्तरी भारत के सघन आबादी वाले क्षेत्रों, जैसे संयुक्त प्रांत (United Provinces), अवध (Oudh), बिहार और उड़ीसा से आते थे। चूँकि उनका प्रस्थान मुख्य रूप से कलकत्ता बंदरगाह से होता था, इसलिए वे 'कल्कत्तिया' कहलाए।

गिरमिट समझौते के तहत, श्रमिकों को एक निश्चित अवधि (अक्सर पाँच वर्ष) के लिए काम करने हेतु बाध्य किया जाता था। इस प्रणाली के माध्यम से, एक मिलियन से अधिक भारतीयों को वैश्विक स्तर पर विस्थापित किया गया। उन्हें मॉरीशस, ब्रिटिश गुयाना, त्रिनिदाद, फिजी, और नेटाल जैसे सुदूर उपनिवेशों में भेजा गया। बागानों पर जीवन अत्यंत कठोर था, जिसे नर्क (*नारक*) या वेश्यालय (*कसभागर*) के रूप में वर्णित किया गया है।

हालाँकि गिरमिटिया व्यवस्था 1917 में कानूनी रूप से समाप्त कर दी गई, परंतु इन श्रमिकों और उनके वंशजों ने एक विशाल डायस्पोरा का गठन किया। अनुबंध अवधि समाप्त होने के बाद, श्रमिकों को वापसी यात्रा का प्रावधान था, लेकिन कई कारणों से उनमें से अधिकांश ने मेज़बान देशों में ही रहना चुना, जिसने त्रिनिदाद और ब्रिटिश गुयाना जैसे स्थानों में बड़े भारतीय जातीय समुदायों को जन्म दिया

गंतव्य और प्रसार:

भारतीय प्रवासन के इतिहास में श्रम डायस्पोरा (Labour Diaspora) का कालखंड औपनिवेशिक युग की एक प्रमुख और शोषणकारी विशेषता है, जिसे गिरमिटिया श्रम प्रणाली (Indentured Labour System) द्वारा परिभाषित किया गया। इस प्रकार के प्रवासन को एक आदर्श प्रकार (Ideal Type) के रूप में 'श्रम डायस्पोरा' या 'सर्वहारा डायस्पोरा' (Proletarian Diaspora) के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जहाँ प्रवासियों को विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय बागानों (tropical plantations) में श्रम के लिए भर्ती किया गया था।

इस सामूहिक उत्प्रवास की प्रेरणा काम की तलाश में विस्तार करने या औपनिवेशिक महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाने की नीतिगत अनिवार्यता में निहित थी। इस प्रणाली के तहत एक मिलियन से अधिक भारतीयों को उनके मूल स्थान से विस्थापित किया गया। यह विशाल फैलाव मुख्य रूप से उत्तरी भारत के भूमिहीन कृषि मज़दूरों और सीमान्त किसानों से हुआ, जिसमें संयुक्त प्रांत, बिहार, उड़ीसा, और अवध जैसे क्षेत्र प्रमुख थे।

इन श्रमिकों का वैश्विक प्रसार (Global dispersal) व्यापक और बहु-क्षेत्रीय था, जो उन्हें दो या दो से अधिक विदेशी क्षेत्रों तक ले गया। प्रमुख गंतव्य, जहाँ ये श्रमिक शक्कर, चाय, कॉफी और रबड़ के बागानों में लगाए गए, उनमें मॉरीशस, ब्रिटिश गुयाना, त्रिनिदाद, नेटाल, दक्षिण अफ्रीका तथा फिजी शामिल थे।

इनके अतिरिक्त, जमैका और सूरीनाम भी भारतीय श्रम डायस्पोरा के महत्वपूर्ण गंतव्य थे। इस प्रकार का फैलाव, जो अक्सर दर्दनाक विसर्जन (traumatic dispersal) के रूप में शुरू हुआ, अंततः इन प्रवासियों के लिए मेज़बान देशों में एक सामूहिक पहचान और बहु-निष्ठा (multiple loyalty) की भावना को बनाए रखने का आधार बना। इस श्रम डायस्पोरा ने मेज़बान राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं को लांघते हुए निरंतर सीमा-पार संबंध स्थापित किए, जिससे आधुनिक डायस्पोरा की नींव पड़ी।

उत्पत्ति और सामाजिक संरचना

श्रमिक व्यापक रूप से उत्तरी, दक्षिणी और मध्य भारत (जैसे संयुक्त प्रांत, बिहार, मध्य प्रांत) से लिए गए थे। वे मुख्य रूप से मध्यम किसान जातियों से, उसके बाद निचली जातियों (दलितों) से, और उच्च जातियों के एक अंश और मुसलमानों से आए थे।

भारतीय प्रवासन की उत्पत्ति ऐतिहासिक और सामाजिक-आर्थिक कारकों की एक जटिल श्रृंखला में निहित है, जिसने प्राचीन काल से लेकर औपनिवेशिक युग तक विविध स्वरूप ग्रहण किए हैं। प्रवासन की सबसे गहन लहर गिरमिटिया श्रम प्रणाली के आगमन के साथ आई, जो 1833 में दास प्रथा की समाप्ति के बाद ब्रिटिश उपनिवेशों में गन्ना, चाय और कॉफी के बागानों के लिए सस्ते और प्रचुर श्रम की आवश्यकता से उत्प्रेरित हुई थी।

यह सामूहिक उत्प्रवास भारत में उत्पन्न हुई दयनीय सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का सीधा परिणाम था। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत कुटीर उद्योग के पतन, अत्यधिक भू-राजस्व और बार-बार पड़ने वाले अकाल ने ग्रामीण भारत में भूमिहीन कृषि मज़दूरों का एक बड़ा वर्ग उत्पन्न किया, जो जीविका की तलाश में विदेश जाने के लिए विवश था। उत्प्रवासी मुख्यतः भूमिहीन कृषि मज़दूर, सीमान्त किसान, और अशिक्षित ग्रामीण निर्धन थे, जिन्हें प्रायः छल द्वारा भर्ती किया जाता था क्योंकि वे बाहरी दुनिया की वास्तविकताओं से अनभिज्ञ थे।

डायस्पोरा की सामाजिक संरचना को एक सैद्धांतिक प्रतिमान के रूप में देखा जाता है, जो मातृभूमि, डायस्पोरा समूह और मेज़बान समाज नामक तीन अभिकर्ताओं के इर्द-गिर्द संरचित होता है। श्रम डायस्पोरा के संदर्भ में, ये प्रवासी समूह आरंभ में जातीय रूप से सजातीय नहीं थे; उनमें धार्मिक भिन्नताएँ (हिंदू, मुस्लिम), जातिगत भिन्नताएँ, और भाषाई एवं क्षेत्रीय भिन्नताएँ (जैसे उत्तरी भारत के कलकत्तिया और दक्षिण भारत के मद्रासी) विद्यमान थीं।

बागानों तक की लंबी समुद्री यात्रा के दौरान, पारंपरिक जाति और धर्म के भेद अस्थायी रूप से कमज़ोर हो गए, जिससे बचे हुए यात्रियों ने एक-दूसरे को 'जहाजी भाई' कहकर संबोधित किया। हालांकि, मेज़बान समाजों में बसने के बाद, भारत से लाई गई सामाजिक पदानुक्रमित संरचनाएँ, विशेष रूप से जाति के भेद, फिर से स्थापित हो गए। उदाहरण के लिए, त्रिनिदाद में 1876 से 1885 के बीच, हिंदू प्रवासियों में लगभग 41% निम्न जातियों से थे, जबकि 18% ब्राह्मण और अन्य उच्च जातियों से संबंधित थे। मेज़बान समाजों में बसने पर, ब्राह्मण और चमार जैसी जातियों के बीच का अंतर काफी हद तक पुनर्स्थापित रहा। इस प्रकार, डायस्पोरा की पहचान का निर्माण मातृभूमि की स्मृतियों, विस्थापन के आघात और मेज़बान समाज में जातीय विशिष्टता को बनाए रखने के संघर्ष से चिह्नित हुआ।

उत्तर-औपनिवेशिक काल का प्रवासन: 1960 के दशक के पश्चात "नई डायस्पोरा" का उदय हुआ, जो वैश्वीकरण और अति-गतिशीलता की पृष्ठभूमि में हुआ। यह प्रवासन मुख्यतः उच्च-कुशल, पेशेवर और अधिक मानव-पूंजी गहन था। इस चरण में, भारतीय अप्रवासी बड़ी संख्या में खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) देशों में चले गए, विशेष रूप से 1970 के दशक के तेल उछाल के कारण, जहाँ उन्होंने निर्माण, स्वास्थ्य सेवा और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में योगदान दिया। इसके साथ ही, कुशल पेशेवर उत्तरी अमेरिका (यूएस और कनाडा) और यूरोप जैसे विकसित देशों में स्थानांतरित हुए। यह समुदाय सामान्यत मेज़बान देशों के औसत नागरिकों की तुलना में बेहतर शिक्षित और अधिक समृद्ध है। हालाँकि, यह प्रवासन मानवीय

लागतों से मुक्त नहीं रहा है। उदाहरण के लिए, अमेरिका में एच1बी वीज़ा पर काम करने वाले पुरुषों पर आश्रित एच-4 वीज़ा धारक पत्नियाँ अक्सर घरेलू हिंसा और वित्तीय निर्भरता का शिकार होती हैं। इस प्रकार, भारतीय प्रवासन के प्रतिरूपों में बलपूर्वक विस्थापन से लेकर उच्च-कुशल स्वैच्छिक गतिशीलता तक एक व्यापक संक्रमण देखा गया है।

भारतीय डायस्पोरा के अध्ययन में यह तर्क दिया गया है कि इसका पूर्ण बोध तभी संभव है जब **'पुराने' (Old)** और **'नए' (New)** डायस्पोरा के विशिष्ट स्थानों पर ध्यान केंद्रित किया जाए।

1.5 डायस्पोरा समुदायों में पहचान निर्माण और मेज़बान देशों से संवाद

डायस्पोरा समुदायों में पहचान का निर्माण एक जटिल सामाजिक प्रक्रिया है जो मूल देश से विस्थापन, मेज़बान समाज के साथ अंतर्क्रिया और पारराष्ट्रीय नेटवर्क के निरंतर रखरखाव से उत्पन्न होती है। डायस्पोरा सिद्धांत इस पहचान को तीन प्रमुख अभिकर्ताओं, मातृभूमि, डायस्पोरा समूह, और मेज़बान देश के इर्द-गिर्द संरचित सैद्धांतिक प्रतिमान का एक अनिवार्य परिणाम मानता है, जो समूह की सामूहिक पहचान को समझने का आधार प्रदान करते हैं। डायस्पोरा की पहचान मातृभूमि के मिथकों और स्मृतियों को बनाए रखने पर निर्भर करती है, जिसके अंतर्गत मेज़बान देश में अलगाव (alienation) और परायापन का अनुभव भी शामिल है। यह चेतना हानि (loss) और आशा (hope) के एक विरोधाभासी तनाव में जीती है।

मेज़बान देशों की नीतियाँ और आत्मसातीकरण का संघर्ष: मेज़बान देशों के साथ डायस्पोरा समुदायों का संवाद मुख्य रूप से उनकी सांस्कृतिक अनुकूलन नीतियों (acculturation policies) द्वारा निर्धारित होता है। उत्तरी अमेरिका में दो प्रमुख प्रतिमान देखने को मिलते हैं। एक ओर, संयुक्त राज्य अमेरिका में आत्मसातीकरण (Assimilation) का दृष्टिकोण प्रभावी रहा है, जिसे "पिघलते बर्तन" (melting pot) की अवधारणा से जोड़ा जाता है। इस मॉडल में, अप्रवासियों से मेज़बान संस्कृति में घुलमिल जाने की अपेक्षा की जाती है, और सफल अप्रवासी व्यक्ति, जिन्हें "मॉडल अल्पसंख्यक" (model minority) समझा जाता है, अक्सर मुख्यधारा के मानदंडों के अनुरूप होने का दबाव महसूस करते हैं। दूसरी ओर, कनाडा की आधिकारिक नीति बहुसंस्कृतिवाद (Multiculturalism) की रही है। बहुसंस्कृतिवाद अंतर-समूह भिन्नताओं को एक मूल्यवान संसाधन मानते हुए, सभी नागरिकों को अपनी पहचान बनाए रखने और अपनी वंश-परंपरा पर गर्व करने का आश्वासन देता है। यह नीति अल्पसंख्यक समूहों द्वारा अधिक राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देती है। हालांकि, बहुसंस्कृतिवाद की आलोचना भी है कि यह अनजाने में सांस्कृतिक भिन्नता को पुनरुत्पादित कर सकता है, जिससे जातीय समूहों को उनकी "हाइफन वाली" (hyphenated) पहचान के अनुरूप विशिष्ट सांस्कृतिक प्रदर्शनों के लिए बाध्य होना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, यूनाइटेड किंगडम में, "जवाबदेह जातीय" (accountable ethnic) की राजनीति के तहत, पहचान को राष्ट्र-राज्य की एक श्रेणी के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो एशियाई समूहों को सदैव गैर-ब्रिटिश के रूप में चिह्नित करता है।

सांस्कृतिक अनुकूलन, संकरण और राजनीतिक सक्रियता: डायस्पोरा समुदाय केवल अपनी मूल संस्कृति के वाहक नहीं होते, बल्कि वे संस्कृति के निर्माता भी हैं, जो मेज़बान और मातृभूमि के तत्वों को मिलाकर संकरण (hybridity) को जन्म देते हैं। उदाहरण के लिए, हिंदू डायस्पोरा में, संकरण के परिणामस्वरूप सांस्कृतिक परंपराओं का परिवर्तन हुआ है। कुछ हिंदू समुदायों ने गुजराती संस्कृति के पहलुओं (जैसे परिवार संरचना और भाषा) को अर्द्ध-धार्मिक (quasi-religious) घटना के रूप में मानना शुरू कर दिया, जिससे

धर्म और संस्कृति के बीच की सीमाएँ धुंधली हो गईं। मेज़बान समाजों में अक्सर राजनीतिक बहिष्कार की प्रक्रियाएँ भी संचालित होती हैं। उदाहरणार्थ, त्रिनिदाद में, भारतीय आबादी को उनके इतिहास के प्रारंभिक चरण में बहिष्कृत रखा गया था। इस समुदाय ने राष्ट्रीय पहचान की परिभाषा को चुनौती देकर, अपनी जातीय विशिष्टता को बनाए रखते हुए, राष्ट्र का वैध हिस्सा बनने का प्रयास किया। इस प्रकार, डायस्पोरा राजनीतिक और प्रशासनिक पदों पर आसीन होकर या अंतरराष्ट्रीय पैरवी (lobbying) के माध्यम से मेज़बान देश की विदेश नीति को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं, जैसा कि भारतीय-अमेरिकी समुदाय ने किया है। ये समुदाय अपने मूल देश के लिए रणनीतिक संपत्ति के रूप में भी कार्य करते हैं। हालांकि, इस पारराष्ट्रीय जीवन में गंभीर सामाजिक चुनौतियाँ भी हैं, जैसे अमेरिका में एच-4 वीज़ा धारक पत्नियों के बीच घरेलू हिंसा की उच्च दर।

संक्षेप में, डायस्पोरा समुदायों में पहचान का निर्माण एक गतिशील और पारराष्ट्रीय प्रक्रिया है, जिसमें समूह सांस्कृतिक परिवर्तन और राजनीतिक सक्रियता के माध्यम से मेज़बान समाज के साथ अपने संवाद की शर्तों को निरंतर पुनर्परिभाषित करते हैं।

1.6 समकालीन प्रवासन की प्रकृति

समकालीन प्रवासन की प्रकृति को समझना, उत्तर-औपनिवेशिक काल (Post-colonial era) और वैश्वीकरण की शक्तियों को समझने से जुड़ा है। यह चरण प्रवासन के पारंपरिक चित्रण (conventional depictions) से पर्याप्त रूप से भिन्न है, जो मुख्य रूप से एक-तरफ़ा और स्थायी प्रवाहों पर केंद्रित थे। यह परिवर्तन 1960 के दशक के बाद से अति-गतिशीलता (Hypermobility) की पृष्ठभूमि में हुआ।

समकालीन प्रवासन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका कुशल और व्यावसायिक स्वरूप है। यह प्रवासन मुख्य रूप से उच्च-कुशल पेशेवरों और अधिक गहन मानव-पूँजी श्रमिकों के विस्थापन द्वारा चिह्नित है। भारत से विस्थापित होने वाले इस 'नए डायस्पोरा' में अधिकांशत: अंग्रेज़ी बोलने वाले, डिग्री-शिक्षित, मध्यम वर्ग के व्यक्ति शामिल हैं, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी (IT) क्षेत्र के विशेषज्ञ, जो उत्तरी अमेरिका, यूरोप और जापान जैसे विकसित देशों की ओर प्रवास करते हैं।

इस युग के प्रवासन की मुख्य सैद्धांतिक रूपरेखा पारराष्ट्रीयता (Transnationalism) की संकल्पना से परिभाषित होती है। पारराष्ट्रीयता एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें प्रवासी अपनी इच्छा से कई राष्ट्रीय सीमाओं के पार बहुआयामी संबंध स्थापित करते हैं और बनाए रखते हैं। उन्नत संचार प्रौद्योगिकियाँ और सस्ते परिवहन के साधन, जैसे इंटरनेट, ई-मेल, सैटेलाइट टी.वी., ने 'संपर्क की तकनीक' को नाटकीय रूप से बढ़ाया है। इन तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप, मूल स्थानों और गंतव्य स्थानों के बीच परिसंचारी प्रवाहों (circular flows) तथा सतत अंतःक्रियाओं की गति और तीव्रता बढ़ी है।

इसके परिणामस्वरूप, प्रवासियों के जीवन अब दो स्थानों में एक साथ संचालित होते हैं, जो "नई डायस्पोरा" की एक प्रमुख विशेषता है। इस पारराष्ट्रीय नेटवर्क के कारण प्रेषण (remittances) का पैमाना (scale) और प्रवाह अभूतपूर्व रूप से बढ़ा है। प्रेषण अब कई राष्ट्रों की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक महत्वपूर्ण और स्थिर बाहरी विकास वित्त स्रोत बन गए हैं। यह समग्र प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि समकालीन प्रवासन मात्र व्यक्तियों का भौगोलिक आवागमन नहीं है, बल्कि एक पारराष्ट्रीय सामाजिक यथार्थ (transnational social reality) है जो मूल और मेज़बान, दोनों समाजों के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिदृश्यों को रूपांतरित करता है।

मध्य पूर्व में डायस्पोरा

खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) के देश, जिनमें बहरीन, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात शामिल हैं, भारतीय प्रवासियों के लिए ऐतिहासिक रूप से एक महत्वपूर्ण गंतव्य रहे हैं। भारतीय डायस्पोरा की जड़ें सदियों पुराने व्यापार मार्गों (trade routes) में निहित हैं, जो भारत को अरब प्रायद्वीप से जोड़ते थे। हालाँकि, इस प्रवासन में वास्तविक वृद्धि उत्तर-औपनिवेशिक काल के दौरान हुई, विशेष रूप से 1970 के दशक के तेल उछाल (oil boom) के परिणामस्वरूप यह प्रवाह नाटकीय रूप से बढ़ा। तेल संपन्न अर्थव्यवस्थाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अत्यधिक श्रम की माँग उत्पन्न की।

यह सामूहिक और अद्वितीय प्रवाह एक ऐसा घटनाक्रम है जिसने दक्षिण-दक्षिण प्रवासन प्रतिरूप (South-South migration pattern) को पुनर्गठित किया, जो पूर्ववर्ती साम्राज्यवादी (imperial) ढाँचों के भीतर संगठित प्रवासन से स्पष्ट रूप से भिन्न है। आज, GCC देश 8 मिलियन से अधिक भारतीयों का घर हैं, एक ऐसी जनसंख्या जो इस क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। भारतीय डायस्पोरा ने निर्माण, स्वास्थ्य सेवा, वित्त, शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

केरल जैसे भारतीय राज्यों का प्रवासन प्रवाह भारी मात्रा में खाड़ी देशों की ओर केंद्रित है, जिसके कारण केरल भारत में अंतरराष्ट्रीय प्रेषण (international remittances) प्राप्त करने वाले शीर्ष राज्यों में शामिल है। यह प्रेषण प्रवाह इन राज्यों को अपनी सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के अनुपात में उच्च निर्भरता वाला क्षेत्र बनाता है। मेज़बान देश और डायस्पोरा के बीच का संबंध पारस्परिक सम्मान और सांस्कृतिक आदान-प्रदान द्वारा भी चिह्नित होता है, जहाँ दिवाली जैसे भारतीय त्योहार मनाए जाते हैं। यद्यपि, GCC देश अपनी मूल आबादी में बेरोज़गारी को नियंत्रित करने के लिए श्रम राष्ट्रीयकरण कार्यक्रम (Labour Nationalization Programme) जैसी नीतियाँ भी लागू करते हैं। वैश्वीकरण ने इस अंतर्संबंध को और मज़बूत किया है, जिससे यह डायस्पोरा पारराष्ट्रीय संदर्भ में आर्थिक और रणनीतिक सहयोग के लिए एक प्रमुख केंद्र बन गया है।

उत्तरी अमेरिका और यूरोप में डायस्पोरा

उत्तरी अमेरिका और यूरोप में भारतीय डायस्पोरा का उद्भव मुख्य रूप से उत्तर-औपनिवेशिक काल की एक घटना है, जो वैश्वीकरण और अति-गतिशीलता (Hypermobility) के व्यापक संदर्भ में विकसित हुई। यह 'नया डायस्पोरा' मुख्य रूप से उच्च-कुशल पेशेवरों और अधिक मानव-पूँजी गहन श्रमिकों का समूह है। कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) दोनों में, भारतीय डायस्पोरा आर्थिक उपलब्धि और शैक्षिक योग्यता के संदर्भ में अत्यधिक सफल प्रवासी समूह सिद्ध हुआ है। अमेरिकी जनगणना ब्यूरो के अनुसार, भारतीय-अमेरिकी समुदाय सबसे तेज़ी से बढ़ने वाले जातीय समूहों में से एक है। ये प्रवासी समूह सामान्य अमेरिकी या कनाडाई नागरिकों की तुलना में अधिक समृद्ध और बेहतर शिक्षित हैं। उदाहरणार्थ, 25 वर्ष से अधिक आयु के 58% से अधिक भारतीय-अमेरिकियों के पास कॉलेज की डिग्री है (राष्ट्रीय औसत 26% की तुलना में), और 40% से अधिक के पास परास्नातक (मास्टर्स) या डॉक्टरेट की डिग्री है।

उत्तरी अमेरिका में मेज़बान देशों की सांस्कृतिक अनुकूलन नीतियाँ (Acculturation Policies) इस समुदाय के परिणामों को निर्धारित करती हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका ने ऐतिहासिक रूप से आत्मसातीकरण (Assimilation) के दृष्टिकोण का समर्थन किया है, जिसे 'पिघलते बर्तन' (melting pot) के रूप में

परिभाषित किया जाता है। आत्मसातीकरण में अल्पसंख्यक समूहों से पूर्ण नागरिकता प्राप्त करने के लिए प्रमुख संस्कृति के अनुरूप होने की अपेक्षा की जाती है। इस पर ज़ोर देने के कारण, पीढ़ी-दर-पीढ़ी क्षेत्रीय संस्कृतियों को संरक्षित करना कठिन हो जाता है, जिसके फलस्वरूप डायस्पोरा में भौगोलिक फैलाव अधिक होता है। इसके विपरीत, कनाडा की आधिकारिक नीति बहुसंस्कृतिवाद (Multiculturalism) की रही है। बहुसंस्कृतिवाद अंतर-समूह भिन्नताओं को एक मूल्यवान संसाधन के रूप में महत्व देता है, और सभी नागरिकों को अपनी पहचान बनाए रखने पर गर्व करने का आश्वासन देता है। यह नीति कुछ क्षेत्रीय समूहों (जैसे पंजाबियों) के लिए कनाडा को एक आकर्षक गंतव्य बनाती है क्योंकि यहाँ क्षेत्रीय संस्कृति का संरक्षण आसान होता है। भारतीय-अमेरिकी समुदाय अपनी वित्तीय संपत्ति के अनुरूप राजनीतिक प्रभाव भी तेज़ी से प्राप्त कर रहा है, और भारत के लिए उनकी पैरवी (lobbying) के प्रयास इंडो-कनाडाई समुदायों की तुलना में कहीं अधिक मज़बूत माने जाते हैं।

यूरोपीय संदर्भ में, यूनाइटेड किंगडम के अतिरिक्त पश्चिमी यूरोप (जैसे जर्मनी, फ्रांस) 21वीं सदी के मोड़ पर ही एक उभरता हुआ गंतव्य बना। भारतीय प्रवासन कुल भारतीय प्रवासन का लगभग 5 प्रतिशत है, और ये समुदाय हाल के वर्षों में यूरोप में सबसे तेज़ी से बढ़ने वाले प्रवासी समुदायों में शामिल रहे हैं।

आर्थिक और राजनीतिक भूमिका

डायस्पोरा समुदाय अपने मूल और मेज़बान देशों के लिए महत्वपूर्ण आर्थिक और राजनीतिक कार्यों का निर्वहन करते हैं। आर्थिक मोर्चे पर, डायस्पोरा का सबसे महत्वपूर्ण और स्पष्ट योगदान प्रेषण (remittances) के रूप में होता है। प्रेषण, जो अब वैश्विक स्तर पर $300 बिलियन से अधिक हो गया है, को स्रोत क्षेत्रों में परिवारों के लिए आय बढ़ाने, उपभोग को बढ़ावा देने तथा गरीबी कम करने का एक स्थिर बाहरी विकास वित्त स्रोत माना जाता है। भारत 2003 में प्रेषण प्राप्त करने वाला शीर्ष देश बन गया था। प्रेषण की मात्रा के कारण, केरल, पंजाब और गोवा जैसे भारतीय राज्य अपनी अर्थव्यवस्थाओं के लिए इन निधियों पर अत्यधिक निर्भर हैं। इसके अतिरिक्त, डायस्पोरा अंतरराष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाने और उच्च-कुशल पेशेवरों के रूप में अपनी विदेशी-होनित पूंजी और कौशल को भारतीय उद्योगों में निवेश करने हेतु रणनीतिक संपत्ति के रूप में कार्य करता है। इन आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से, मेज़बान देश के साथ-साथ मातृभूमि की अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं।

राजनीतिक रूप से, डायस्पोरा आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की प्रभुसत्ता के लिए एक अनूठी चुनौती प्रस्तुत करता है, क्योंकि यह प्रदर्शित करता है कि एक राजनीतिक इकाई के प्रति निष्ठा द्विआधारी होने के बजाय एक से अधिक संस्थाओं के प्रति निष्ठा में शामिल हो सकती है। डायस्पोरा समूह मातृभूमि के राजनीतिक परिणामों को प्रभावित करने के लिए लामबंद (mobilized) किए गए हैं, जिसमें राजनीतिक समर्थन और आर्थिक/सैन्य सहायता प्रदान करना शामिल है। भारतीय-अमेरिकी समुदाय इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जिसने अपनी शैक्षिक उपलब्धि और वित्तीय संपन्नता के कारण, मेज़बान देश की नीतियों को प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त की है। भारत की विदेश नीति अब सरकार-से-सरकार संबंधों से हटकर जन-केंद्रित कूटनीति (people-centric diplomacy) में स्थानांतरित हो गई है, जहाँ डायस्पोरा एक महत्वपूर्ण स्तंभ और रणनीतिक संपत्ति है। यह समुदाय भारत के लिए सांस्कृतिक पहचान और सॉफ्ट पावर (soft power) का मशाल वाहक भी है, जिसे भारत की सॉफ्ट पावर का सबसे बड़ा साधन माना जाता है। उच्च शिक्षा और राजनीतिक प्रभाव के साथ, प्रवासी भारतीय अब प्रभावशाली प्रशासनिक और राजनयिक पदों पर हैं, जो वैश्विक मंचों पर भारत के हितों को सुरक्षित करने में सहायता करते हैं। इस तरह, डायस्पोरा न केवल

आर्थिक विकास में, बल्कि मातृभूमि की अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक सक्रियता में भी निर्णायक भूमिका निभाता है।

1.7 सारांश

भारतीय प्रवासन इतिहास प्राचीन काल से लेकर उत्तर-औपनिवेशिक युग तक विविध प्रतिरूपों को दर्शाता है। इसका सबसे परिभाषित चरण गिरमिटिया श्रम प्रणाली (1834-1917) थी, जिसके तहत दस लाख से अधिक भूमिहीन कृषि मज़दूरों और ग्रामीण निर्धनों का वैश्विक फैलाव हुआ। यह श्रम डायस्पोरा फिजी, त्रिनिदाद और मॉरीशस जैसे उपनिवेशों में स्थापित हुआ, जहाँ इन गिरमिटिया श्रमिकों को कठोर परिस्थितियों का सामना करना पड़ा।

समकालीन प्रवासन की प्रकृति उच्च-कुशल 'नई डायस्पोरा' द्वारा चिह्नित है, जिसमें प्रमुख रूप से आई.टी. विशेषज्ञ शामिल हैं, जो उत्तरी अमेरिका, यूरोप और खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) देशों में पारराष्ट्रीय नेटवर्क स्थापित करते है। ये प्रवासी मेज़बान देशों के औसत नागरिकों की तुलना में अधिक शिक्षित और समृद्ध हैं।

डायस्पोरा समुदायों में पहचान का निर्माण मातृभूमि की स्मृतियों और मेज़बान समाज की नीतियों, जैसे अमेरिका में आत्मसातीकरण या कनाडा में बहुसंस्कृतिवाद, के साथ निरंतर संवाद से परिभाषित होता है। आर्थिक मोर्चे पर, डायस्पोरा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान प्रेषण (remittances) के रूप में है; भारत अंतरराष्ट्रीय प्रेषण प्राप्त करने वाला शीर्ष देश है, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं और घरेलू उपभोग के लिए एक स्थिर वित्त स्रोत है। राजनीतिक रूप से, ये समुदाय भारत की विदेश नीति के लिए एक रणनीतिक संपत्ति और पैरवी (lobbying) बल के रूप में कार्य करते हैं।

1.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची

- Vertovec, Steven. (2009). Transnationalism. London: Routledge.
- Cohen, Robin. (2008). Global Diasporas: An Introduction. London: Routledge.
- Jayaram, N. (Ed.). (2004). The Indian Diaspora: Dynamics of Migration. New Delhi: Sage.
- Tinker, Hugh. (1974). A New System of Slavery: The Export of Indian Labour Overseas 1830–1920. Oxford: Oxford University Press.
- Jain, Ravindra K. (1993). Indian Communities Abroad: Themes and Literature. New Delhi: Manohar.
- Safran, William. Ajaya Sahoo, Ajaya & Brij V. Lal (Ed.). (2019). Transnational Migrations The Indian Diaspora. Routledge India.
- Mishra, Vijay (2007). The Literature of the Indian Diaspora: Theorizing the Diasporic Imaginary. New Delhi: Routledge.

(खण्ड-1)

प्रवासी भारतीयों का सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास

प्रस्तावना

भारतीय प्रवासन और डायस्पोरा का अध्ययन प्राचीन काल से लेकर वर्तमान पारराष्ट्रीय नेटवर्क तक फैली एक जटिल, बहु-आयामी प्रक्रिया को दर्शाता है। 'डायस्पोरा' शब्द में राजनीतिक शरणार्थी, अतिथि श्रमिक, और अप्रवासी जैसे विविध समूह शामिल हैं, जो विस्थापन के आघात के बावजूद अपने मूल घर से भावनात्मक या काल्पनिक संबंध बनाए रखते हैं। यह पहचान फैलाव के इतिहास और मातृभूमि की स्मृतियों द्वारा परिभाषित होती है।

प्रवासन के ऐतिहासिक प्रतिरूप में गिरमिटिया श्रम प्रणाली (1834-1917) सबसे महत्वपूर्ण चरण है, जिसे 'गुलामी की एक नई प्रणाली' के रूप में वर्णित किया गया है। इस प्रणाली के तहत दस लाख से अधिक भूमिहीन कृषि मज़दूरों को मॉरीशस, ब्रिटिश गुयाना और फिजी जैसे उपनिवेशों में कठोर परिस्थितियों में काम करने के लिए भेजा गया था। इन श्रमिकों ने सामूहिक 'जहाजी भाई' पहचान का निर्माण किया, जिसने पारंपरिक जातिगत बाधाओं को तोड़ा।

समकालीन प्रवासन का स्वरूप 1970 के दशक के तेल उछाल के बाद GCC देशों में गए श्रमिकों और उत्तरी अमेरिका तथा यूरोप में स्थापित उच्च-कुशल पेशेवरों (नई डायस्पोरा) द्वारा परिभाषित होता है। ये प्रवासी मेज़बान देशों के सबसे धनी और सबसे शिक्षित समुदायों में से हैं। आर्थिक रूप से, डायस्पोरा अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण का विश्व में सबसे बड़ा स्रोत है। भारत की विदेश नीति डायस्पोरा को रणनीतिक संपत्ति और नरम शक्ति के एक साधन के रूप में देखती है।

साहित्य और सिनेमा जैसे सांस्कृतिक माध्यमों से पहचान का लगातार पुनर्निर्माण होता है, जो संकरता (hybridity) की भावनाओं को दर्शाता है। इन समुदायों को मेज़बान समाजों में नस्लवाद, ज़ेनोफोबिया और आत्मसातीकरण के दबाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जहाँ उन्हें अक्सर 'सदैव अन्य' (perpetual other) के रूप में देखा जाता है।

भाग A: सैद्धांतिक और संकल्पनात्मक आधार

प्रवासन (Migration) और डायस्पोरा (Diaspora) के अध्ययन में, गतिशीलता (Mobility) को सबसे सामान्य संकल्पना माना जाता है। गतिशीलता सभी प्रकार की क्षेत्रीय आवाजाही (territorial movements) को समाहित करती है, चाहे वह अस्थायी हो या स्थायी। हालाँकि, जैसे-जैसे अंतर्राष्ट्रीय और आंतरिक प्रवासन में वृद्धि हुई है, डायस्पोरा प्रवासन (Diaspora Migration) 21वीं सदी में एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरा है। 'डायस्पोरा' शब्द का अर्थशास्त्रीय क्षेत्र (semantic domain) अत्यंत व्यापक हो चुका है। अब इसमें राजनीतिक शरणार्थी (political refugees), अतिथि श्रमिक (guest workers), आप्रवासी (immigrants), जातीय और नस्लीय अल्पसंख्यक समूह (ethnic and racial minorities), और विदेशी समुदायों (overseas communities) जैसे विविध समूहों का समावेश हो गया है। स्टीवन वर्टोवेक के अनुसार, 'डायस्पोरा' शब्द आज ऐसी किसी भी आबादी का वर्णन करने के

लिए उपयोग किया जाता है जो 'वि-प्रादेशिकीकृत' (deterritorialised) या 'पारराष्ट्रीय' (transnational) मानी जाती है—यानी, वह जिसका उद्गम स्थान उसके वर्तमान निवास स्थान से अलग है और जिसके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक नेटवर्क राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं को पार करते हैं। यह व्यापक उपयोग, जो परिभाषा की अस्पष्टता को जन्म देता है, इसकी वर्णनात्मक उपयोगिता के लिए खतरा उत्पन्न करता है।

डायस्पोरा की संकल्पना उन विस्थापित व्यक्तियों द्वारा उपयोग की जाती है जो अपने पूर्व घर से संबंध महसूस करते हैं, बनाए रखते हैं, आविष्कार करते हैं या पुनर्जीवित करते हैं। डायस्पोरा की अवधारणा में कई मूलभूत घटक शामिल हैं:

1. फैलाव का इतिहास (history of dispersal)

2. मातृभूमि के मिथक/स्मृतियाँ (myths/memories of the homeland)

3. मेज़बान देश में अलगाव (alienation in the host country)

4. वापसी की इच्छा (desire for eventual return)

5. मातृभूमि का निरंतर समर्थन (ongoing support of the homeland)

6. उपरोक्त संबंधों द्वारा परिभाषित एक सामूहिक पहचान (collective identity)

यह मानना गलत है कि डायस्पोरा हमेशा निर्वासन (exile) का परिणाम होता है। वास्तव में, कुछ लोग राजनीतिक प्रभुत्व और दमन, आर्थिक असमानता, शक्तिहीनता या अल्पसंख्यक स्थिति के कारण प्रवासन का विकल्प चुन सकते हैं। डायस्पोरा समूहों को अन्य प्रवासन प्रकारों से अलग करने वाला कारक पुरानी संस्कृति और विशिष्ट रूप से मातृभूमि के प्रति उनका निरंतर या पुनर्जागृत लगाव और निष्ठा है।

A.2 डायस्पोरा सिद्धांत और प्रासंगिक ढांचे

डायस्पोरा को बेहतर ढंग से समझने के लिए, जूडिथ टी. शुवल एक सार्थक सैद्धांतिक प्रतिमान (theoretical paradigm) प्रस्तुत करती हैं, जो तीन प्रमुख अभिकर्ताओं या घटकों पर संरचित है: मातृभूमि, डायस्पोरा समूह, और मेज़बान। ये तीनों अभिकर्ता एक बहुआयामी और परिवर्तनशील संबंधों के समुच्चय में परस्पर क्रिया करते हैं। यह दृष्टिकोण डायस्पोरा के सामाजिक प्रक्रियाओं की गतिशील प्रकृति को स्वीकार करता है। इसका अर्थ है कि एक समूह समय की एक अपरिभाषित अवधि में डायस्पोरा की भावना को प्राप्त कर सकता है, उसे खो सकता है, या उसमें बदलाव ला सकता है।

A.2.1. पारराष्ट्रीयता (Transnationalism) और वैश्वीकरण (Globalization)

आधुनिक डायस्पोरा को वैश्वीकरण (Globalization) और पारराष्ट्रीयता (Transnationalism) के संदर्भ में समझा जाता है। उन्नत संचार प्रौद्योगिकियाँ वैश्विक संस्कृति को बनाए रखती हैं और सीमाओं तथा संस्कृतियों के पार सूचना और छवियों के त्वरित फैलाव (accelerated dispersal) की सुविधा प्रदान करती हैं। खुले बॉर्डर, गतिशील रोज़गार बाज़ार, और परिवहन के आधुनिक साधन प्रवासियों को अपने मूल देशों और वहाँ के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखने में सक्षम बनाते हैं। डायस्पोरा समूह की पारराष्ट्रीय गतिविधियाँ प्रवासी भारतीयों की वित्तीय और बौद्धिक पूंजी को भारतीय उद्योगों में निवेश करने हेतु रणनीतिक संपत्ति के रूप में कार्य करती हैं।

स्टीवन वर्टोवेक, डायस्पोरा की जटिलताओं को सुलझाने के लिए, तीन सामान्य अर्थों का प्रस्ताव करते हैं जो विशेष रूप से दक्षिण एशियाई धर्मों के संदर्भ में अनुनाद रखते हैं:

1. सामाजिक रूप में डायस्पोरा: यह सबसे आम अर्थ है, जो ऐतिहासिक फैलाव के अनुभवों, पीड़िता (victimisation), और नुकसान (loss) के साथ जुड़ा है, जिसमें वापसी का सपना भी शामिल है। यह विश्वव्यापी पैमाने पर समूहवाद की भावना से उत्पन्न आर्थिक रणनीतियों को भी शामिल करता है।

2. चेतना के प्रकार के रूप में डायस्पोरा: यह अनुभव की विविधता, मन की स्थिति, और पहचान की भावना पर अधिक ज़ोर देता है। यह बहु-स्थानीयता की जागरूकता और साझा कल्पना के माध्यम से एक समूह को एक साथ रखने या पुन: बनाने का कार्य करता है।

3. सांस्कृतिक उत्पादन के माध्यम के रूप में डायस्पोरा: यह संकरित (hybridized) सांस्कृतिक रूपों और प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है जिसे प्रवासी समूह अपने नए संदर्भों में उत्पन्न और पुनरुत्पादित करते हैं।

A.2.2. राष्ट्र-राज्य और निष्ठा (Loyalty)

डायस्पोरा की उपस्थिति आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की प्रभुसत्ता के लिए एक अनूठी चुनौती प्रस्तुत करती है। डायस्पोरा यह प्रदर्शित करता है कि राजनीतिक इकाई के प्रति निष्ठा द्विआधारी (binary) होने के बजाय एक से अधिक संस्थाओं के प्रति निष्ठा में शामिल हो सकती है। मेज़बान समाज को डायस्पोरा समूहों की प्रतिस्पर्धी निष्ठाओं (competing loyalties) के प्रति सहिष्णु होना चाहिए।

मातृभूमि के प्रति डायस्पोरा समूह का रवैया अक्सर दुविधापूर्ण (ambivalent) होता है—यह लालसा और दूरी का एक संयोजन होता है। कई मामलों में, प्रवासी स्वेच्छा से मातृभूमि नहीं लौटते क्योंकि यह "अत्यधिक विघटनकारी या आघातजन्य" (disruptive or traumatic) हो सकता है। कई डायस्पोरा के लिए, मातृभूमि एक काल्पनिक, आभासी या यूटोपियन लक्ष्य के रूप में परिभाषित हो सकती है, जो यह दर्शाता है कि "जहाँ लाभ है, वहीं मेरा देश है" (*ubi lucrum, ibi patria*)। दूसरी ओर, मातृभूमि डायस्पोरा का उपयोग मेज़बान देशों से राजनीतिक या भौतिक समर्थन प्राप्त करने के लिए भी करती है।

A.2.3. डायस्पोरा समूह की संरचना और पैरामीटर

डायस्पोरा के सैद्धांतिक प्रतिमान के भीतर, डायस्पोरा समूह, मातृभूमि और मेज़बान—प्रत्येक को विशिष्ट पैरामीटर द्वारा वर्णित किया जाता है:

I. डायस्पोरा समूह की विशेषताएँ: डायस्पोरा समूह के अध्ययन के लिए प्रमुख पैरामीटर में फैलाव के कारण (जैसे उत्पीड़न, आर्थिक असमानता), जातीय संस्कृति का प्रतिधारण (सक्रिय या निष्क्रिय), और सदस्यों के बीच संबंधों की गुणवत्ता शामिल है। स्थानिक आयाम: सदस्य भौगोलिक रूप से विकेन्द्रीकृत हो सकते हैं (कई सेटिंग्स में व्यापक रूप से फैले हुए) या कुछ मेज़बान देशों में केंद्रित हो सकते हैं। मातृभूमि के प्रति रवैया: इसमें समर्थन का स्तर (वित्तीय, नैतिक, राजनीतिक), भावनात्मक लगाव का स्तर (उत्साही, शांत, तर्कसंगत), और सतत संपर्क की सीमा शामिल है।

II. मातृभूमि की विशेषताएँ: मातृभूमि के लिए महत्वपूर्ण पैरामीटर में उसकी वास्तविकता का स्तर (आभासी, दुर्गम, या सुलभ), वैधता, और डायस्पोरा समुदायों की वापसी के प्रति वहाँ के निवासियों और सरकार का रवैया (स्वीकृत, अस्वीकृत, या शत्रुतापूर्ण) शामिल है।

III. मेज़बान की विशेषताएँ: मेज़बान समाज की विशेषताएँ जातीय समूहों के प्रति सांस्कृतिक-वैचारिक रुख द्वारा निर्धारित होती हैं। इसमें आत्मसातीकरण (assimilation) या बहुलतावादी (pluralistic) मानदंडों का समर्थन शामिल हो सकता है। मेज़बान सरकार और उपसमूहों का व्यवहार उदासीन, तिरस्कारपूर्ण, शत्रुतापूर्ण, या भेदभावपूर्ण हो सकता है। मातृभूमि की प्रासंगिकता मेज़बान की विदेश नीति और आंतरिक राजनीतिक हितों के लिए उच्च हो सकती है।

यह सैद्धांतिक प्रतिमान डायस्पोरा के विभिन्न प्रकारों को मैप करने और उनके बीच संरचनात्मक अंतरों तथा समानताओं को स्पष्ट करने में सहायक है, जिससे तुलनात्मक अनुसंधान को प्रोत्साहन मिलता है।

भाग B: ऐतिहासिक प्रवासन प्रतिरूप (Historical Migration Patterns)

B.1. प्राचीन, मध्यकालीन, और प्रारंभिक आधुनिक भारतीय प्रवासन प्रतिरूप

भारतीय प्रवासन का इतिहास केवल आधुनिक काल की घटना नहीं है, बल्कि यह प्राचीन काल से ही निरंतर क्षेत्रीय आवाजाही (territorial movements) की विशेषता रखता है। इतिहास की आरंभिक अवधियों में भी प्रवासन के प्रमाण मौजूद हैं, और गतिशीलता (mobility) को प्रवासन अध्ययनों की सबसे सामान्य संकल्पना माना जाता है, जिसमें अस्थायी और स्थायी दोनों प्रकार के क्षेत्रीय आवाजाही शामिल होते हैं। प्रवासन के पीछे कई कारण थे, जैसे बेहतर जीवन शैली की तलाश, व्यापार, तीर्थयात्राएँ, मेले और त्यौहार, और जलवायु परिवर्तन।

प्रारंभिक भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि बस्तियों के प्रमाण मिले हैं, जैसे कि बलूचिस्तान के पास मेहरगढ़ में, जहाँ मिट्टी-ईंट की झोपड़ियों में रहने वाले लोग गेहूं और जौ उगाते थे और मवेशी पालते थे। यह विकास खानाबदोश जीवनशैली (nomadic ways) से एक मौलिक विचलन को चिह्नित करता है। इसके अतिरिक्त, हड़प्पा सभ्यता के लोग भी विभिन्न नस्लीय प्रकारों के थे, जो अलग-अलग प्रवासन धाराओं की ओर इशारा करता है। इस सभ्यता के पतन का एक संभावित कारण बाहरी प्रवासन (outmigration) माना जाता है।

वैदिक काल में भारत-आर्यों के भौगोलिक स्थान में समय के साथ पूर्व की ओर बदलाव देखा गया। वैदिक ग्रंथों, जैसे शतपथ ब्राह्मण (Satpatha Brahmna) में, गंगा के मैदानों में प्रवासन के संदर्भ मिलते हैं। विधेह माधव को अपने लोगों को पूर्व की ओर गंडक नदी तक ले जाने वाला माना जाता है। उत्तर वैदिक काल के अंत तक, यह आवागमन पूर्वी उत्तर प्रदेश में कोशल और उत्तरी बिहार में विदेह तक फैल गया। इन आर्यों ने ऐसे सूखे और अधिक सुलभ क्षेत्रों के माध्यम से यात्रा की, जो उनकी मिश्रित अर्थव्यवस्था (पशुपालन, गेहूं और जौ की खेती) की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

बिहार के संदर्भ में, पाटलिपुत्र के आसपास के क्षेत्र का उदय प्रवासन और राज्य निर्माण के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। 2000 ईसा पूर्व और 300 ईसा पूर्व के बीच, राजनीतिक और शहरी केंद्र का गुरुत्वाकर्षण सिंधु घाटी से यमुना-गंगा दोआब की ओर, और फिर पाटलिपुत्र के आसपास के क्षेत्र में क्रमशः पूर्व की ओर स्थानांतरित हो गया। पाटलिपुत्र, जो बाद में मौर्य और गुप्त साम्राज्यों की सीट बना, एक रणनीतिक स्थल के रूप में उभरा। इसके दक्षिण और पश्चिम में शुष्क क्षेत्र थे जो प्रवासियों की कृषि पद्धतियों के लिए उपयुक्त थे, साथ ही इसे छोटा नागपुर पठार के खनिज संसाधनों तक पहुँच और उत्तर तथा पूर्व में अधिक उपजाऊ आर्द्र क्षेत्रों का समर्थन प्राप्त था।

B.1.2. गंगा के मैदानों में प्रवासन और मौर्य प्रशासन की भूमिका

मौर्य प्रशासन ने प्रवासन के प्रबंधन और नए कृषि बस्तियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कौटिल्य के अर्थशास्त्र (Arthashatra) के माध्यम से प्राचीन दुनिया में प्रवासन के बारे में जानकारी मिलती है। मौर्यों ने आंतरिक संचार प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए, जिससे व्यापार को बढ़ावा मिला और नए ग्राम बस्तियों के विस्तार में सहायता मिली। उदाहरण के लिए, उत्तर भारत की नदियों ने आंतरिक परिवहन में सुगमता प्रदान की; चुनार में उत्खनित अशोक के विशालकाय अखंड स्तंभ को संभवतः नदी के माध्यम से दूर के स्थानों तक पहुँचाया गया था।

कौटिल्य ने प्रवासन के अन्य कारणों जैसे तीर्थयात्राओं, मेलों और त्योहारों को भी सूचीबद्ध किया है। उन्होंने मुक्त जनजातियों को व्यवस्थित रूप से तोड़ने के तरीकों सहित जनजातीय प्रवासन के पूरे इतिहास का वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त, मगध (बिहार का प्राचीन साम्राज्य) में दो सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक आंदोलन हुए: बुद्ध और महावीर। बौद्ध मठ (जैसे नालंदा) ने चीन से भिक्षुओं और छात्रों को आकर्षित किया। बौद्ध धर्म व्यापारियों और भिक्षुओं के माध्यम से सिल्क रोड से पूर्वी एशिया तक फैला, जबकि जैन धर्म दक्षिण और पश्चिम (गुजरात) की ओर विस्थापित हुआ। दोनों धर्म शहरी-आधारित थे और व्यापारियों द्वारा संरक्षण प्राप्त थे। इस प्रकार, प्राचीन काल में भी प्रवासन ने भारतीय सभ्यता के विस्तार और क्षेत्रीय संरचना को आकार दिया।

B.2 औपनिवेशिक युग का प्रवासन: गिरमिटिया श्रमिक और वैश्विक फैलाव

B.2.1. गिरमिटिया श्रम प्रणाली: परिभाषा, संदर्भ, और "गुलामी की एक नई प्रणाली"

औपनिवेशिक युग का प्रवासन भारतीय इतिहास का एक अत्यधिक शोषणात्मक चरण था, जिसे गिरमिटिया श्रम प्रणाली (Indentured Labour System) द्वारा परिभाषित किया गया। इस प्रणाली की औपचारिक शुरुआत 1834 में हुई और यह 1917 में कानून द्वारा समाप्त हुई, यद्यपि विभिन्न देशों में अनौपचारिक रूप से यह 1920 तक जारी रही। 'गिरमिट' एक ठेका-बद्ध शारीरिक श्रम समझौता (contractual bound manual labour agreement) था, जिसके तहत एक प्रवासी एक निर्धारित अवधि (प्रायः तीन से पाँच वर्ष) के लिए एक नियोक्ता के लिए काम करने हेतु बाध्य होता था। इस समझौते में निश्चित मज़दूरी दर, काम के घंटे, मुफ्त आवास और चिकित्सा सहायता निर्दिष्ट थी।

इस व्यवस्था का मुख्य संदर्भ 1833 में ब्रिटिश उपनिवेशों में दास प्रथा की समाप्ति था, जिसके कारण गन्ना, चाय, कॉफी और रबड़ के बागानों के लिए सस्ते और प्रचुर श्रम बल की भारी कमी हो गई थी। ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने इस कमी को पूरा करने के लिए भारतीय श्रमिकों की ओर रुख किया, जो "आर्थिक इतिहास में एक बिल्कुल नई घटना" (absolutely novel phenomenon in economic history) थी। कई इतिहासकारों और समकालीन आलोचकों ने इस व्यवस्था को "गुलामी की एक नई प्रणाली" (A New System of Slavery) के रूप में वर्णित किया।

B.2.2. प्रवासन के कारण: दास प्रथा की समाप्ति के बाद बागानों के लिए सस्ते श्रम की माँग

गिरमिटिया प्रवासन के पीछे आर्थिक मजबूरी और उपनिवेशों में श्रम की माँग का संयोजन था। भारत में, ब्रिटिश शासन के दौरान व्याप्त प्रतिकूल सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ श्रमिकों को उत्प्रवास के लिए प्रेरित कर रही थीं। इनमें ब्रिटिश विस्तारवाद, विश्व अर्थव्यवस्था के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था का एकीकरण,

कुटीर उद्योग का पतन, अत्यधिक भू-राजस्व और बार-बार पड़ने वाले अकाल शामिल थे। गरीब ग्रामीण प्रवासियों को भर्ती करने वाले एजेंटों (Arkatis) द्वारा स्थिर आय और बेहतर जीवन स्तर के झूठे आश्वासनों के साथ फँसाया जाता था। लॉर्ड जॉन रसेल ने 1840 में ही चेतावनी दी थी कि यह व्यवस्था "जीवन के भयानक नुकसान या एक नई दासता प्रणाली" को जन्म दे सकती है।

B.2.3. उत्पत्ति और भर्ती

गिरमिटिया श्रमिकों की भर्ती मुख्य रूप से उत्तरी, मध्य और दक्षिणी भारत से की जाती थी, लेकिन सर्वाधिक संख्या पश्चिमी बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के हिंदी भाषी जिलों से थी। कलकत्ता बंदरगाह से प्रस्थान करने वाले इन श्रमिकों को 'कल्कत्तिया' कहा जाता था। दक्षिणी भारत के श्रमिक मद्रास बंदरगाह से प्रस्थान करते थे।

अधिकांश प्रवासी भूमिहीन कृषि मज़दूर, सीमान्त किसान, और अशिक्षित ग्रामीण निर्धन थे। प्रवासियों की भर्ती को राज्य द्वारा नियंत्रित किया गया था; 'प्रोटेक्टर ऑफ एमीग्रेंट्स' नामक एक सरकारी अधिकारी बंदरगाहों पर प्रवासन मामलों की देखरेख करता था। प्रवासन को विनियमित करने के लिए 1842 का इंडिया एक्ट XV और 1882 का एमीग्रेशन एक्ट XXII जैसे कानून बनाए गए थे। हालाँकि, वास्तविक प्रक्रियाओं में धोखा और जबरदस्ती आम थी, क्योंकि भर्ती एजेंट अक्सर मेलों और तीर्थ केंद्रों पर लोगों को फँसाते थे।

B.2.4. प्रमुख गंतव्य और प्रसार

यह प्रवासन एक वैश्विक फैलाव था, जिसके तहत एक मिलियन से अधिक भारतीय विस्थापित हुए थे। मॉरीशस को 1834 में पहले जत्थे के लिए 'महान प्रयोग' (Great Experiment) के रूप में चुना गया था। अन्य प्रमुख गंतव्य थे:

• मॉरीशस: 4,53,063 प्रवासी।

• ब्रिटिश गुयाना: 2,38,909 प्रवासी। कैरेबियन में प्रवासन 1838 में 'व्हिटबी' नामक जहाज़ के ब्रिटिश गुयाना पहुँचने के साथ शुरू हुआ।

• त्रिनिदाद: 1,43,939 प्रवासी।

• फिजी: 60,965 प्रवासी।

• नेटाल (दक्षिण अफ्रीका): 1,52,184 प्रवासी।

B.2.5. बागानों पर जीवन की कठोरता, प्रतिरोध और पहचान निर्माण

लंबी और भयावह समुद्री यात्राओं के दौरान, श्रमिक भीड़भाड़ वाले डेक पर अस्वच्छ परिस्थितियों में रहते थे, जिससे कई लोगों की मृत्यु हो जाती थी। इन कष्टों को सहने के बाद, जीवित बचे लोग अपनी पारंपरिक जाति, धर्म और भाषा की बाधाओं को तोड़कर एक-दूसरे को 'जहाजी भाई' या 'जहाजी बहन' (Ship brothers/sisters) कहने लगे।

बागानों पर जीवन को इतिहासकारों ने 'नर्क' (*नारक*) या 'वेश्यालय' (*कसभागर*) कहा है। जीवन अत्यंत नियंत्रित और प्रतिबंधित था। श्रमिकों को लकड़ी के बैरकनुमा आवासों में रखा जाता था, जो पहले गुलामों

के क्वार्टर थे, जिससे खराब जल निकासी और वेंटिलेशन के कारण रोग फैलते थे। उन्हें मामूली अपराधों के लिए भारी दंड और कारावास का सामना करना पड़ता था, और मजिस्ट्रेट अक्सर बागान प्रबंधकों के साथ मिलकर श्रमिकों का शोषण करते थे। ब्रिटिश गुयाना में, 1864 से 1868 के बीच मृत्यु दर 4% तक थी। लिंग असंतुलन इस प्रणाली की एक प्रमुख विशेषता थी। महिलाओं की संख्या बहुत कम थी; मॉरीशस में यह अनुपात 33:100 था। महिला श्रमिकों को बागानों पर विशेष शोषण का सामना करना पड़ा।

अनुबंध समाप्त होने के बाद, श्रमिकों को वापसी यात्रा का अधिकार था। हालांकि, कई वापस नहीं लौटे। त्रिनिदाद से केवल 22.47% (33,294) प्रवासियों ने भारत लौटने का विकल्प चुना। अधिकांश श्रमिकों ने मेजबान देशों में ही रहना चुना, जहाँ उन्हें वापसी यात्रा के बदले में क्राउन भूमि (Crown lands) दी गई, जिससे वे ब्रिटिश गुयाना और त्रिनिदाद जैसे स्थानों में स्वतंत्र किसान और बाद में गन्ना और चावल के सबसे बड़े उत्पादक बन गए।

इस श्रम डायस्पोरा में पहचान का निर्माण जटिल था। लंबी यात्रा ने पारंपरिक जातिगत संरचना को कमजोर कर दिया, जिससे एक समरूप पहचान (homogenous identity) बनी। हालाँकि, मेज़बान समाजों में बसने के बाद, जातिगत भेद पुन: स्थापित हो गए, हालांकि कुछ कमजोर रूप में। इस प्रकार, औपनिवेशिक काल का प्रवासन भारतीय इतिहास का एक दर्दनाक लेकिन सांस्कृतिक और भौगोलिक रूप से व्यापक फैलाव था, जिसने आधुनिक भारतीय डायस्पोरा की नींव रखी।

भाग C: उत्तर-औपनिवेशिक प्रवासन और समकालीन डायस्पोरा

भारतीय प्रवासन के इतिहास में उत्तर-औपनिवेशिक प्रवासन (Post-colonial Migration) का चरण, जिसे प्रायः 'नई डायस्पोरा' (New Diaspora) के रूप में भी जाना जाता है, एक मौलिक बदलाव को चिह्नित करता है, जहाँ प्रवासियों का स्वरूप और गंतव्य दोनों औपनिवेशिक काल के गिरमिटिया श्रम डायस्पोरा से भिन्न हैं [1, Conversation History]। यह समकालीन प्रवासन मुख्य रूप से उच्च-कुशल पेशेवरों (high-skilled professionals) और मानव-पूँजी गहन (Human-Capital Intensive) श्रमिकों के प्रवाह पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य विकसित राष्ट्रों, विशेषकर उत्तरी अमेरिका और यूरोप, में बेहतर आर्थिक अवसर प्राप्त करना है। इसके अतिरिक्त, 1970 के दशक से खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) देशों में श्रम प्रवास की एक समानांतर धारा भी विकसित हुई।

C.1. मध्य पूर्व (GCC) में भारतीय डायस्पोरा

खाड़ी सहयोग परिषद (Gulf Cooperation Council - GCC) के देश—जिनमें बहरीन, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब, और संयुक्त अरब अमीरात शामिल हैं—भारतीय डायस्पोरा की एक महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करते हैं। 1970 के दशक के तेल उछाल (oil boom) के बाद इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर श्रम प्रवाह शुरू हुआ, जिसने इस प्रवासन को एक नई दिशा दी।

यह प्रवासन मुख्य रूप से श्रम-केंद्रित (labour-centric) है, जहाँ प्रवासी भारतीय इन देशों के कार्यबल, व्यापार क्षेत्र, और स्वास्थ्य सेवा उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। 2023 के अनुमानों के अनुसार, GCC क्षेत्र में 8 मिलियन से अधिक भारतीय निवास करते हैं, जिनकी संख्या कई मेज़बान राष्ट्रों के स्थानीय नागरिकों की तुलना में अधिक है। यह समूह इन देशों के आर्थिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि यह प्रवासन मुख्य रूप से अकुशल या अर्ध-कुशल श्रम पर केंद्रित रहा है, और इन्हें प्रायः 3-D (गंदे, खतरनाक और कठिन) नौकरियों में शामिल माना जाता है।

C.2. उत्तरी अमेरिका और यूरोप में भारतीय डायस्पोरा

C.2.1. प्रवास का स्वरूप

उत्तरी अमेरिका और यूरोप में भारतीय डायस्पोरा का उदय 1965 के अमेरिकी आव्रजन अधिनियम (1965 Immigration Act) के बाद गति पकड़ता है, जिसने राष्ट्रीय मूल कोटा समाप्त कर दिया और गैर-यूरोपीय देशों से बड़े पैमाने पर आप्रवासन के लिए द्वार खोल दिए। संयुक्त राज्य अमेरिका में शीत युद्ध (Cold War) के दौरान रक्षा और एयरोस्पेस उद्योगों में इंजीनियरों की आवश्यकता ने भारत से इस प्रकार के उच्च-कुशल प्रवासन को जन्म दिया। 1965 से 1980 के बीच बड़ी संख्या में भारतीय पेशेवरों के रूप में पहुँचे, हालांकि बाद में कई लोग पारिवारिक पुनर्मिलन (family reunification) श्रेणियों के तहत भी आए।

यह समकालीन भारतीय डायस्पोरा मेज़बान देशों में सबसे धनी और सबसे शिक्षित समुदायों में से एक है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय-अमेरिकी समुदाय की वित्तीय स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि उच्च है। 58% भारतीय-अमेरिकियों के पास कॉलेज की डिग्री है (राष्ट्रीय औसत 26% की तुलना में), और 40% के पास मास्टर या डॉक्टरेट की डिग्री है (राष्ट्रीय औसत 10% की तुलना में)। कनाडा में भी इंडो-कनाडाई आबादी में 15 वर्ष से अधिक आयु के 26% के पास विश्वविद्यालय की डिग्री है, जबकि राष्ट्रीय औसत लगभग 12% है।

C.2.2. नृजातीय पारराष्ट्रीय मध्य वर्ग (Ethnic Transnational Middle Class - ETMC)

भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी (IT) पेशेवरों के प्रवास को एक विशेष वर्ग के रूप में पहचाना गया है जिसे 'नृजातीय पारराष्ट्रीय मध्य वर्ग' (Ethnic Transnational Middle Class - ETMC) कहा जाता है। इस वर्ग में इंजीनियर, डॉक्टर, और IT पेशेवर प्रमुख हैं।

ETMC की अवधारणा 'ब्रेन ड्रेन' (Brain Drain) की पारंपरिक सोच को 'ब्रेन सर्कुलेशन' (Brain Circulation) के विचार से प्रतिस्थापित करती है। यह वर्ग वैश्विक पूँजी (global capital) के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये प्रवासी न केवल सस्ते कुशल श्रम (cheap skilled labour) प्रदान करते हैं, बल्कि वैश्विक पूँजी के विकासशील दुनिया में प्रवेश को भी सुगम बनाते हैं। यह श्रम आपूर्ति प्रणाली प्रायः नृजातीयता पर आधारित (ethnicity based labour supply system) होती है। इस तरह, ETMC वैश्विक और स्थानीय के बीच, और पूँजी और श्रम के बीच मध्यस्थ (middle) की भूमिका निभाता है।

C.3 मेज़बान देश की अनुकूलन नीतियाँ और परिणाम

मेज़बान देशों की अनुकूलन नीति (Acculturation Policy) डायस्पोरा समूहों के एकीकरण और उनकी गतिविधियों के परिणामों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा जैसे सांस्कृतिक रूप से समान, लेकिन नीतिगत रूप से भिन्न, देशों के अनुभवों का तुलनात्मक अध्ययन प्रवासन परिणामों को समझने के लिए उपयोगी है।

C.3.1. संयुक्त राज्य अमेरिका (यू.एस.): आत्मसातीकरण (Assimilation / Melting Pot)

संयुक्त राज्य अमेरिका को ऐतिहासिक रूप से 'पिघलता बर्तन' (Melting Pot) मॉडल के रूप में देखा गया है। इस अवधारणा के तहत, यह माना जाता है कि अप्रवासी समूहों को पूर्ण नागरिकता प्राप्त करने के लिए प्रमुख संस्कृति (dominant culture) के अनुरूप होना चाहिए। आत्मसातीकरण की नीतियों का उद्देश्य

अल्पसंख्यक समूहों को प्रमुख संस्कृति के अनुरूप बनाना है, जिसके लिए उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों को त्यागना पड़ सकता है। इस मॉडल में, एक सफल एकीकरण के लिए आत्मसातीकरण को संरचनात्मक समावेशन (structural incorporation) का एक-दिशात्मक मार्ग (unidirectional pathway) माना जाता था, जहाँ आप्रवासी अपनी जातीय विशिष्टता खो देते हैं।

C.3.2. कनाडा: बहुसंस्कृतिवाद (Multiculturalism)

इसके विपरीत, कनाडा की आधिकारिक नीति बहुसंस्कृतिवाद (Multiculturalism) की रही है। यह नीति अंतर-समूह भिन्नताओं (inter-group differences) को एक मूल्यवान संसाधन और सांस्कृतिक शक्ति का आधार मानती है। 1971 में प्रधान मंत्री पियरे ट्रूडो ने इसे आधिकारिक सरकारी नीति घोषित किया।

बहुसंस्कृतिवाद पारस्परिक आवास (mutual accommodation) को स्वीकार करता है और यह सुनिश्चित करता है कि सभी नागरिक अपनी पहचान बनाए रख सकते हैं, अपनी वंशावली पर गर्व कर सकते हैं, और देश के साथ जुड़ाव की भावना (sense of belonging) रख सकते हैं। इस नीति के अनुसार, कोई भी प्रमुख संस्कृति किसी अन्य संस्कृति पर वरीयता नहीं लेती है। हालांकि, इसके आलोचकों का तर्क है कि बहुसंस्कृतिवाद सांस्कृतिक भिन्नता को कायम रखकर 'अन्यत्व' (otherness) को स्थायी बना सकता है, और यह जातीय समुदायों के अलगाव (ghettoization) में योगदान कर सकता है।

परिणामों में अंतर

मेज़बान देश की नीतियों में यह अंतर प्रवासी भारतीयों के व्यवहार को प्रभावित करता है। भारतीय-अमेरिकी समुदाय (मेल्टिंग पॉट मॉडल) मातृभूमि के लिए पैरवी (lobbying) के प्रयासों में इंडो-कनाडाई समुदाय (बहुसंस्कृतिवाद मॉडल) की तुलना में अधिक मजबूत रहे हैं। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण 2006 का नागरिक परमाणु प्रौद्योगिकी समझौता था, जहाँ भारतीय डायस्पोरा द्वारा गहन पैरवी की गई थी, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रपति ओबामा (तब सीनेटर) ने टिप्पणी की थी कि उन्हें हर भारतीय-अमेरिकी व्यक्ति द्वारा संपर्क किया जा रहा है। यह अंतर आंशिक रूप से इस तथ्य के कारण भी है कि संयुक्त राज्य अमेरिका एक बड़ा और अधिक प्रभावशाली देश है, और मेज़बान देश की नीतियाँ भारत सरकार को डायस्पोरा के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

इस प्रकार, उत्तर-औपनिवेशिक डायस्पोरा उच्च-कुशल प्रवासन के माध्यम से आर्थिक शक्ति प्राप्त करता है, लेकिन मेजबान देश में उनकी पहचान और एकीकरण की प्रक्रियाएं उस देश की विशिष्ट अनुकूलन नीतियों द्वारा आकार लेती हैं।

भाग D: राजनीतिक अर्थव्यवस्था और समकालीन मुद्दे

भारतीय डायस्पोरा का अध्ययन केवल सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक अर्थव्यवस्था और समकालीन वैश्विक मुद्दों के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। डायस्पोरा समूह आज भारत के लिए एक शक्तिशाली रणनीतिक, आर्थिक और कूटनीतिक संपत्ति के रूप में कार्य करता है।

D.1. आर्थिक योगदान और प्रेषण

भारतीय डायस्पोरा की आर्थिक भूमिका का सबसे मूर्त और महत्वपूर्ण प्रकटीकरण प्रेषण (Remittances)

के रूप में होता है। प्रेषण को "बाह्य विकास वित्त का एक महत्वपूर्ण और स्थिर स्रोत" माना जाता है, जो प्राप्तकर्ता परिवारों की गरीबी को कम करने में सहायक होता है।

D.1.1. अंतरराष्ट्रीय प्रेषण और भारत की स्थिति

भारत अंतरराष्ट्रीय प्रेषण का विश्व में सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता है। यह प्रवाह, जो पिछले दशकों में तेजी से बढ़ा है, विकासशील देशों के लिए एक स्थिर विदेशी मुद्रा आय का स्रोत माना जाता है, और यह बाहरी पूंजी प्रवाह की तुलना में अधिक स्थिर साबित हुआ है।

2007-08 में, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने $43.5 बिलियन (लगभग 1.74 लाख करोड़ रुपये) को निजी हस्तांतरण के रूप में दर्ज किया। इस निजी हस्तांतरण में तीन मुख्य श्रेणियां शामिल थीं: पारिवारिक भरण-पोषण (family maintenance) (50%), अनिर्वासी भारतीय (NRI) जमाओं से स्थानीय निकासी/भुगतान (43%), और व्यक्तिगत उपहार/दान (6%)। NRI जमाओं से होने वाली निकासी को अक्सर घरेलू निवेश (जैसे रियल एस्टेट या इक्विटी बाज़ार) की ओर निर्देशित माना जाता है।

राज्य-स्तरीय संकेंद्रण और निर्भरता

अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण का प्रवाह देश के कुछ विशिष्ट राज्यों में अत्यधिक केंद्रित है। 2007-08 के आँकड़ों के अनुसार, घरेलू प्रेषण प्रवाह का एक बड़ा हिस्सा केरल (39.9%), पंजाब (12.7%), और तमिलनाडु (12.4%) को प्राप्त हुआ।

प्रेषण पर राज्यों की निर्भरता मापने के लिए प्रेषण को सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के प्रतिशत के रूप में देखा जाता है। इस मापदंड पर, केरल (30.9%), गोवा (20.8%), और पंजाब (11.4%) अत्यधिक निर्भर राज्य थे। ये राज्य विश्व की उन अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हैं जो प्रेषण पर सबसे अधिक निर्भर हैं। उदाहरण के लिए, केरल में, प्रेषण के भारी प्रवाह ने ग्रामीण और शहरी उपभोग के अंतर को पाटने में मदद की है, क्योंकि अधिकांश प्रवाह ग्रामीण परिवारों को जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण के मुख्य स्रोत मध्य पूर्वी क्षेत्र (35%), उत्तरी अमेरिका (35%), और यूरोप (20%) हैं। भारत जैसे देश, जिनके प्रवासन गंतव्य विविध हैं, उन देशों की तुलना में अधिक **लचीले** (**resilient**) हैं जो एक संकीर्ण प्रवासन गलियारे पर निर्भर करते हैं (जैसे मेक्सिको-यूएसए)।

D.1.2. घरेलू प्रेषण

भारत में आंतरिक प्रवासन (Internal Migration) के कारण घरेलू प्रेषण बाज़ार भी विशाल है। 2007-08 में, घरेलू प्रेषण बाज़ार का अनुमानित आकार लगभग $10 बिलियन (लगभग 45,000-50,000 करोड़ रुपये) था। इस प्रवाह का लगभग 80% हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में जाता है। उत्तर प्रदेश (20%) और बिहार (12%) घरेलू प्रेषण प्राप्त करने वाले शीर्ष राज्य थे। बिहार की अर्थव्यवस्था में घरेलू प्रेषण का योगदान उसके सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 5% था, जो इस पर उसकी उच्च निर्भरता को दर्शाता है।

D.1.3. प्रेषण का उपयोग, असमानता और वित्तीय समावेशन

उपयोग: राष्ट्रीय स्तर पर, 90% से अधिक प्राप्तकर्ता परिवार प्रेषण का उपयोग परिवार के उपभोग व्यय (household consumption expenditure) के लिए करते हैं, जो घरेलू उपभोग का एक तिहाई तक वित्तपोषित करता है। क्षेत्रीय भिन्नताएं भी हैं: केरल और तमिलनाडु में उच्च ऋण चुकौती (debt

repayment) रिपोर्ट की गई। ओडिशा में आवास में सुधार और विवाह तथा समारोहों पर अधिक व्यय देखा गया, जबकि पूर्वोत्तर राज्यों में प्रेषण का एक बड़ा हिस्सा शिक्षा पर खर्च किया गया।

असमानता: चूँकि भारत में प्रवासन एक स्व-चयन प्रक्रिया है, जिसमें उच्च शिक्षा और आय वाले लोग अधिक भाग लेते हैं, इसलिए प्रेषण का वितरण भी असमान है। घरेलू प्रेषण का लगभग 50% हिस्सा शीर्ष 25% उपभोग वर्ग के परिवारों को प्राप्त होता है। यह संकेंद्रण दर्शाता है कि प्रेषण स्रोत क्षेत्रों में असमानता को बढ़ा सकते हैं।

वित्तीय समावेशन: भारत में घरेलू प्रेषण का एक बड़ा हिस्सा अनौपचारिक माध्यमों से आता है। अनुमान है कि औपचारिक क्षेत्र (बैंकों और डाकघरों) घरेलू प्रेषण बाज़ार के 30% से भी कम हिस्से को संभालता है। इसकी तुलना में, चीन में औपचारिक क्षेत्र 75% प्रेषण बाज़ार को संभालता है। प्रेषण सेवाओं में सुधार, विशेष रूप से ग्रामीण और अप्रशिक्षित प्रवासी आबादी के लिए, वित्तीय समावेशन को बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता है।

D.2 भारतीय राजनीति और विदेश नीति में डायस्पोरा

डायस्पोरा भारत की विदेश नीति का एक स्तंभ (pillar) बन गया है, जो पारंपरिक सरकार-से-सरकार संबंधों से हटकर एक बहुस्तरीय, समाज-केंद्रित दृष्टिकोण को दर्शाता है।

D.2.1. नीतिगत परिवर्तन और नरम शक्ति

ऐतिहासिक संदर्भ: औपनिवेशिक काल में, गोपाल कृष्ण गोखले और सी.एफ. एंड्रयूज जैसे राष्ट्रवादी नेताओं ने गिरमिटिया श्रमिकों की दुर्दशा को उठाया और 1911 में नेटाल में प्रवासन पर प्रतिबंध लगाने के लिए दबाव डाला। स्वतंत्रता के बाद, प्रधानमंत्री नेहरू ने विदेशों में भारतीयों को अपने निवास के देश की नागरिकता अपनाने की सलाह दी, और कहा कि भारतीय बने रहने पर वे केवल 'सर्वाधिक अनुकूल विदेशी व्यवहार' का दावा कर सकते हैं।

आधुनिक बदलाव: 1980 के दशक में राजीव गांधी के नेतृत्व में नीति में परिवर्तन आया, जब भारतीय डायस्पोरा को भारत और अमेरिका के बीच एक मूल्यवान सेतु के रूप में देखा जाने लगा। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने डायस्पोरा के महत्व को और अधिक अर्थपूर्ण भूमिका के लिए स्वीकार किया।

नरम शक्ति: डायस्पोरा भारत की नरम शक्ति (Soft Power) का सबसे बड़ा साधन है। संस्कृति, मूल्य और भाषा (जैसे हिंदी, तमिल, मलयालम) के माध्यम से, प्रवासी समूह वैश्विक स्तर पर भारत की सभ्यतागत भावना और लोकतांत्रिक छवि का निर्माण करते हैं।

D.2.2. प्रमुख सरकारी पहलें और रणनीतिक भागीदारी

भारत सरकार ने डायस्पोरा के साथ संस्थागत जुड़ाव को मज़बूत करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं:

1. उच्च स्तरीय समिति और पी.आई.ओ. कार्ड: 2000 में एल.एम. सिंघवी की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति (HLC) गठित की गई, जिसने पी.आई.ओ. कार्ड (PIO card) योजना की सिफारिश की, जिसका उद्देश्य वीज़ा मुक्त यात्रा के माध्यम से भारतीय मूल के लोगों को सुविधा प्रदान करना था।

2. प्रवासी भारतीय दिवस (PBD): यह समारोह प्रतिवर्ष 9 जनवरी को महात्मा गांधी की दक्षिण अफ्रीका

से वापसी की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य भारतीय डायस्पोरा की उपलब्धियों को मान्यता देना और उनके साथ जुड़ाव को बढ़ाना है।

3. मंत्रालय का गठन: 2004 में प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय का गठन किया गया, जो डायस्पोरा के साथ साझेदारी बनाने के लिए विशिष्ट कार्यक्रम चलाता है।

D.2.3. आर्थिक और राजनीतिक पैरवी (Lobbying)

डायस्पोरा आज न केवल प्रेषण के माध्यम से, बल्कि प्रत्यक्ष निवेश, आईटी-पेशेवर नेतृत्व और विज्ञान-प्रौद्योगिकी साझेदारी के माध्यम से भी महत्वपूर्ण आर्थिक योगदान दे रहा है।

राजनीतिक क्षेत्र में, भारतीय डायस्पोरा ने मेज़बान देशों में पैरवी (lobbying) के माध्यम से भारत के हितों को प्रभावित किया है। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण 2006 का यू.एस.-इंडिया नागरिक परमाणु प्रौद्योगिकी समझौता था। भारतीय-अमेरिकी समुदाय ने इस समझौते के पक्ष में गहन पैरवी की, जिससे यह पारित हो सका। भारतीय डायस्पोरा 1998 के परमाणु परीक्षणों के बाद भारत पर लगाए गए प्रतिबंधों को कम करने में भी सहायक था।

यह समकालीन जुड़ाव इस बात पर प्रकाश डालता है कि डायस्पोरा ने अपनी पहचान को केवल सांस्कृतिक वारिसों से बदलकर आर्थिक, कूटनीतिक और बौद्धिक संपत्ति के रूप में स्थापित कर लिया है। वे भारत की विदेश नीति के नए आयामों, जैसे सार्वजनिक कूटनीति और विकास कूटनीति में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

भाग E: सामाजिक, सांस्कृतिक इतिहास और पहचान निर्माण

भारतीय डायस्पोरा का सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास पहचान निर्माण (identity formation) की एक जटिल और गतिशील प्रक्रिया को दर्शाता है, जो विस्थापन के आघात, मेज़बान समाजों के सांस्कृतिक अनुकूलन और मातृभूमि की निरंतर स्मृतियों के बीच निरंतर अंतःक्रिया से उत्पन्न होता है। यह भाग डायस्पोरा समुदायों के भीतर संकरता (hybridity) और सामाजिक श्रेणियों के रूपांतरण तथा साहित्य, सिनेमा एवं लोकप्रिय संस्कृति की भूमिका का विश्लेषण करता है।

E.1. सांस्कृतिक अनुकूलन, संकरण, और समन्वय तथा भारतीय डायस्पोरा समुदायों के भीतर सामाजिक श्रेणियाँ।

डायस्पोरा समुदायों के भीतर सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक अनुकूलन को एक सैद्धांतिक प्रतिमान के तहत समझा जाता है, जो मातृभूमि, डायस्पोरा समूह और मेज़बान समाज के बीच बहुआयामी संबंधों से संरचित होता है। डायस्पोरा पहचान फैलाव के इतिहास, मातृभूमि के मिथकों/स्मृतियों और मेज़बान देश में अलगाव की भावनाओं से परिभाषित होती है।

E.1.1. सांस्कृतिक अनुकूलन, संकरण और समन्वय

डायस्पोरा को 'चेतना के प्रकार' के रूप में और 'सांस्कृतिक उत्पादन के माध्यम' के रूप में देखा जाता है। डायस्पोरा में पहचान सार या शुद्धता पर आधारित नहीं होती, बल्कि आवश्यक विषमता और विविधता से परिभाषित होती है, जो रूपांतरण और अंतर के माध्यम से स्वयं को लगातार नया रूप देती है। इस निरंतर निर्माण की प्रक्रिया को संकरता (Hybridity) के रूप में जाना जाता है।

प्रवासी समूह पारस्परिक निष्ठाओं को स्वीकार करते हुए मेज़बान समाज में एकीकरण करते हैं। अनुकूलन की यह प्रक्रिया अक्सर अल्पसंख्यक समूहों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों को बनाए रखने या उन्हें प्रमुख संस्कृति के अनुरूप ढालने की चुनौती प्रस्तुत करती है।

संस्कृति और धर्म का पृथक्करण: प्रवासी भारतीय समुदायों में एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया धर्म और संस्कृति के बीच भेद स्थापित करने की रही है। रूढ़िवाद और अज्ञानता के आरोपों से बचने के लिए, प्रवासी समूहों को एक अनुकूली रणनीति (adaptive strategy) की तलाश करनी पड़ी, जिसके तहत धर्म के मूलभूत और अनिवार्य पहलुओं को सांस्कृतिक अनुषंगों से अलग किया जा सके। हालाँकि, इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप, डायस्पोरा में हिंदू धर्म का एक अधिक विशिष्ट और सजातीय (exclusive and homogenous) संस्करण सामने आया है, जो प्रायः पश्चिमी समाजों की धर्म की संकल्पना के अनुरूप स्वयं को 'ब्राह्मणिक' या 'सेमिटिक' रूप में पुनर्परिभाषित करता है।

अंतःसंस्कृति बनाम आत्मसात्करण: त्रिनिदाद जैसे मेज़बान समाजों में, भारतीय संस्कृति का अनुकूलन अंतःसंस्कृति की प्रक्रिया से हुआ, जिसे द्विपक्षीय आदान-प्रदान के रूप में परिभाषित किया जाता है, न कि आत्मसातीकरण (assimilation) या एकतरफा असममित प्रक्रिया के रूप में। मलेशिया में, तमिलियन संस्कृति के प्रमुख स्तंभ, जैसे जाति और परिजन, क्षेत्रीय आर्थिक मांगों के अनुसार रूपांतरित हुए हैं, जैसे क्रॉस-कज़िन विवाह जैसी पारंपरिक संस्थाओं से दूर जाना।

E.1.2. डायस्पोरा समुदायों के भीतर सामाजिक श्रेणियाँ

गिरमिटिया श्रम प्रणाली के तहत हुए प्रवासन ने भारतीय समाज की कठोर जातिगत संरचना को नए संदर्भों में ढाल दिया। यह परिवर्तन दो चरणों में देखा गया:

1. समुद्री यात्रा के दौरान क्षरण: कलकत्ता से कैरेबियन या मॉरीशस तक की लंबी और कठिन समुद्री यात्रा के दौरान, पारंपरिक जाति, धर्म और भाषा की बाधाएँ कमजोर हो गईं। जो श्रमिक इन यात्राओं में जीवित बचे, उन्होंने एक-दूसरे को 'जहाजी भाई' (Ship brothers) या 'जहाजी बहन' (Ship sisters) कहकर संबोधित किया, जो एक सामूहिक पहचान के उदय को दर्शाता है।

2. मेज़बान समाज में पुनर्स्थापन: हालाँकि, औपनिवेशिक बागानों से 'मुक्त' होने के बाद और नए ग्राम बस्तियों में बसने पर, भारत से लाई गई सामाजिक श्रेणियाँ, विशेष रूप से जातिगत भेद, पुनर्स्थापित हो गए, भले ही वे कमज़ोर रूप (diluted forms) में ही क्यों न हों। उदाहरण के लिए, त्रिनिदाद में, ब्राह्मण (उच्चतम पुजारी जाति) और चमार (अछूतों) के बीच का अंतर 1990 के दशक तक काफी व्यापक बना रहा। 1876 से 1885 के बीच हिंदू प्रवासियों के जातिगत आँकड़ों से पता चलता है कि 41% निम्न जातियों के थे, जबकि 18% ब्राह्मण और अन्य उच्च जातियों से संबंधित थे।

E.2 डायस्पोरा पहचान निर्माण में भारतीय सिनेमा, साहित्य, और लोकप्रिय संस्कृति।

साहित्य और सिनेमा दोनों ही डायस्पोरा समुदायों के खोए हुए आत्म (lost-self), पुरानी यादों (nostalgia), और विस्थापन के आघात को प्रतिबिंबित करने और पहचान के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक पारराष्ट्रीय मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं।

E.2.1. डायस्पोरा साहित्य की भूमिका

डायस्पोरा साहित्य विस्थापितों के उत्प्रवास और निर्वासन के अनुभव (experience of uprooting and exile) को दस्तावेज़ित करता है। यह साहित्य अलगाव, विस्थापन, अस्तित्वगत जड़हीनता, और पहचान की खोज जैसे सार्वभौमिक विषयों पर केंद्रित है।

1. प्रारंभिक लेखन: डीन महोमेद का 'ट्रैवल्स ऑफ डीन महोमेट' (1794), जो एक आत्मकथात्मक यात्रा वृत्तांत है, भारतीय डायस्पोरा साहित्य के अग्रणी (pioneer) कार्यों में से एक था, जो भारत में पहला अंग्रेजी लेखन प्रकाशित होने से बहुत पहले आ गया था।

2. पीढ़ीगत और सांस्कृतिक संघर्ष:

◦ वी.एस. नायपॉल: द्वितीय पीढ़ी के अप्रवासी नायपॉल के अनुसार, मातृभूमि केवल स्मृति और कल्पना के क्षेत्र (realm of imagination) में मौजूद है। उनके यात्रा वृत्तांत 'एन एरिया ऑफ डार्कनेस' में पैतृक मातृभूमि का आलोचनात्मक अवलोकन मिलता है, जो काल्पनिक और वास्तविक घर के बीच के विरोधाभास को दर्शाता है।

◦ सलमान रुश्दी: इस प्रथम पीढ़ी के लेखक ने 'जादुई यथार्थवाद' (magic realism) का उपयोग करते हुए उत्प्रवास और विस्थापन के मुद्दों को रूपकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। रुश्दी ने डायस्पोरा की पहचान को 'बहुवचन और आंशिक' (plural and partial) बताया है, जो एक साथ दो संस्कृतियों के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश करती है। वह डायस्पोरा को काल्पनिक मातृभूमि (imaginary homelands) बनाने के रूप में देखते हैं, जो *वास्तविक शहरों या गाँवों* के बजाय कल्पनाएँ रचता है।

◦ अनिता देसाई: उनके लेखन में अस्तित्वगत जड़हीनता और एकांत की भावनाएँ मुखर हैं। 'द इनहेरिटेंस ऑफ लॉस' में एक पात्र के माध्यम से यह भावना व्यक्त की गई है कि वह अंग्रेजों से ईर्ष्या करता है, भारतीयों से घृणा करता है, और वह जो बनेगा उसके लिए वह अंग्रेज और भारतीय दोनों द्वारा तिरस्कृत (despised by absolutely everyone) होगा।

◦ भारती मुखर्जी और झुम्पा लाहिड़ी: मुखर्जी ने अंतरजातीय प्रेम और आत्मसातीकरण की चुनौतियों का चित्रण किया है, जबकि लाहिड़ी अपने उपन्यासों में एकांत, लालसा, और खोए हुए आत्म के सार्वभौमिक विषयों के लिए जानी जाती हैं, जो प्रवासी जीवन में पहचान संकटों को दर्शाते हैं।

◦ अमिताभ घोष: उन्होंने 'गन आइलैंड' जैसे ऐतिहासिक उपन्यासों में मानव प्रवासन और जलवायु परिवर्तन जैसे समकालीन चुनौतियों को उठाया है, और डायस्पोरा को विश्व संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण ताकतों में से एक मानते हैं।

E.2.2. भारतीय सिनेमा और लोकप्रिय संस्कृति

बॉलीवुड ने 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद से विशेष रूप से डायस्पोरा को लक्षित करते हुए फिल्में बनाना शुरू किया। ये फिल्में प्रवासी भारतीयों की पुरानी यादों और लालसा को गंभीरता से संबोधित करती हैं, जिसके माध्यम से सांस्कृतिक सहानुभूति स्थापित की जाती है।

1. प्रवासी-केंद्रित आख्यान: फिल्मों में अक्सर उच्च-मध्यम वर्ग या उच्च वर्ग के अप्रवासी भारतीय

(NRI/PIO) परिवारों को चित्रित किया जाता है, जैसे 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' (1995), 'परदेस' (1997), और 'कभी खुशी कभी गम' (K3G)। इन फिल्मों में प्रवासी भारतीयों को मॉडल अल्पसंख्यक (model minority) के रूप में चित्रित किया जाता है, जो उनकी वित्तीय और शैक्षिक सफलता को दर्शाता है।

2. सांस्कृतिक पुनर्बलन: ये फिल्में 'भारतीयता' (Indianness) की भावना को बनाए रखने में मदद करती हैं और करवा चौथ जैसे कालातीत परंपराओं (timeless traditions) के महत्त्व को पुनर्स्थापित करती हैं। इस प्रकार, सिनेमा एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करता है जो सांस्कृतिक अलगाव के कारण हुए नुकसान की भावना से निपटने में मदद करता है।

3. पारराष्ट्रीय संचरण: उन्नत संचार प्रौद्योगिकियों (जैसे VCR) ने धार्मिक अनुदेश और पूजा के लिए डायस्पोरा में 'सांस्कृतिक परंपराओं के पुनर्गठन और अनुवाद' को सक्षम बनाया है। रामायण जैसे पौराणिक धारावाहिकों को देखने के दौरान धूप जलाना या 'पवित्र सोप' के प्रति भक्तिपूर्ण अभिवादन करना 'भारतीयता' की भावना को वैश्विक रूप से बनाए रखने का एक उदाहरण है। यह सांस्कृतिक संचरण भारत की नरम शक्ति (Soft Power) का एक प्रमुख साधन भी है।

भाग F: डायस्पोरा समुदायों के समक्ष चुनौतियाँ

भारतीय डायस्पोरा (प्रवासी) समूहों ने, चाहे वे ऐतिहासिक गिरमिटिया श्रमिक रहे हों या समकालीन उच्च-कुशल पेशेवर, मेज़बान समाजों में अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जटिल कानूनी, सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना किया है। ये चुनौतियाँ उनके फैलाव के ऐतिहासिक आघात, मेज़बान देश की आत्मसातीकरण (assimilation) या बहुसंस्कृतिवाद (multiculturalism) की नीतियों, और नस्लीय तथा आर्थिक बहिष्कार के रूपों से उत्पन्न होती हैं।

F.1. नागरिकता, संबंध और मेज़बान राष्ट्र में चुनौतियाँ

प्रवासी समुदायों के समक्ष मूलभूत चुनौतियाँ मेज़बान राष्ट्र के सांस्कृतिक-वैचारिक रुख और समूह को पूर्ण नागरिक के रूप में स्वीकार करने की उनकी अनिच्छा से संबंधित रही हैं।

I. ऐतिहासिक और कानूनी बहिष्कार

गिरमिटिया श्रमिकों का बंधन और दासता का नया रूप: औपनिवेशिक युग के दौरान, गिरमिटिया श्रमिक अनुबंध की कठोर शर्तों के अधीन थे, जिसे ब्रिटिश इतिहासकार ह्यूग टिंकर ने "गुलामी की एक नई प्रणाली" (A New System of Slavery) के रूप में वर्णित किया था। इन श्रमिकों को कठोर श्रम-उत्पीड़क तकनीकों (labour-coercive techniques) के माध्यम से नियंत्रित किया जाता था, और वे कम मज़दूरी, कुपोषण, और खराब आवास जैसी कठोर परिस्थितियों का सामना करते थे। श्रमिकों को सम्पदाओं तक ही सीमित रखने के लिए औपचारिक और अनौपचारिक नियंत्रण प्रणालियों का उपयोग किया जाता था। बागानों पर जीवन को 'नर्क' (narak) या 'वेश्यालय' (kasbhigar) तक कहा गया था।

उत्तरी अमेरिका में वैधानिक भेदभाव: 20वीं सदी की शुरुआत में उत्तरी अमेरिका में प्रवासन करने वाले भारतीयों को तत्काल नस्लीय भेदभाव का सामना करना पड़ा। कनाडा में सिखों को इस तथ्य के बावजूद खुले तौर पर भेदभाव का सामना करना पड़ा कि वे ब्रिटिश साम्राज्य के नागरिक थे। 'निरंतर यात्रा' का नियम विशेष रूप से भारतीयों के प्रवेश को रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया था, क्योंकि उस समय भारत से

कोई सीधी यात्रा कनाडा नहीं आती थी। संयुक्त राज्य अमेरिका में, 1923 के 'यूएस बनाम भगत सिंह थिंड' मामले में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि भारतीय लोग नागरिकता के लिए 'अयोग्य विदेशी' थे।

II. आत्मसातीकरण और बहुसंस्कृतिवाद का विरोधाभास

मेज़बान समाजों में डायस्पोरा के समावेशन का तरीका उस देश की आधिकारिक अनुकूलन नीतियों पर निर्भर करता है: आत्मसातीकरण (Melting Pot) या बहुसंस्कृतिवाद।

आत्मसातीकरण का दबाव (अमेरिका): संयुक्त राज्य अमेरिका को ऐतिहासिक रूप से आत्मसात्करण(Melting Pot) के रूप में देखा गया है, जहाँ अल्पसंख्यक समूहों से अपेक्षा की जाती है कि वे पूर्ण नागरिकता प्राप्त करने के लिए प्रमुख संस्कृति के अनुरूप हों। यह दृष्टिकोण मानता है कि संरचनात्मक समावेशन के लिए **सांस्कृतिक जड़ों का त्याग** आवश्यक हो सकता है।

बहुसंस्कृतिवाद की आलोचना और विसंगति (कनाडा/यूके): कनाडा और यूनाइटेड किंगडम में बहुसंस्कृतिवाद की आधिकारिक नीति का उद्देश्य सांस्कृतिक अंतरों का जश्न मनाना है, लेकिन इसके बावजूद इसने डायस्पोरा के लिए अपनी चुनौतियाँ पैदा की हैं। आलोचकों का तर्क है कि बहुसंस्कृतिवाद सांस्कृतिक अंतरों को बनाए रखकर पहचानों के परिरोध, सीमांतीकरण और बस्तीकरण में योगदान कर सकता है। सांस्कृतिक भिन्नता को एक **'समस्या'** के रूप में देखा जाता है जिस पर काबू पाना है।

III. पहचान संकट और 'मूल स्थान' का प्रश्न (The Identity Question)

डायस्पोरा के समक्ष सबसे गहन चुनौतियों में से एक उनकी 'बहु-निष्ठा' को मेज़बान समाज द्वारा स्वीकार किए जाने की आवश्यकता है। आधुनिक डायस्पोरा, जो पारराष्ट्रीय हैं, को अक्सर मेज़बान समाज द्वारा 'सदैव अन्य' (perpetual other) के रूप में देखा जाता है।

अस्थायी निवास की अनिवार्यता: मेज़बान समाज में, प्रवासियों से अक्सर यह प्रश्न पूछा जाता है: "आप मूल रूप से कहाँ से हैं?"। यह प्रश्न निहितार्थ रूप से व्यक्ति को एक विस्थापित स्थान से जोड़ता है और मेज़बान समाज में उसके जुड़ाव को नकारता है। यह 'विदेशीपन के सिद्धांत' पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि प्रवासी एक स्थायी आगंतुक है और 'वास्तव में यहाँ से नहीं है'।

राज्य द्वारा पहचान का निर्धारण: ब्रिटेन में जनगणना प्रपत्रों में 'भारतीय' जैसे जातीय वर्गीकरणों का उपयोग किया गया है, जो अप्रवासी या उनके बच्चों के लिए सदैव एक आप्रवासी सिंड्रोम और एक दूरस्थ राष्ट्र-राज्य के प्रति निष्ठा को दर्शाता है। पहचान का यह प्रमाणीकरण बहुसंस्कृतिवाद के 'शून्य योग' का निर्माण करता है, जिसमें अंतर को एक निश्चित स्थान से जोड़ा जाता है, जिससे प्रवासी को 'जवाबदेह जातीय' बना दिया जाता है।

IV. दोहरे प्रवासन का आघात

उत्तर-औपनिवेशिक संदर्भ में, कई भारतीय डायस्पोरा समुदायों ने अपने निवास के पहले देश में बहुसंख्यक राष्ट्रवाद (majoritarian nationalism) के कारण जातीय या नस्लीय भेदभाव का सामना किया है, जिसने उन्हें 'दो बार प्रवासी' (twice migrants) बनने के लिए मजबूर किया है। उदाहरण के लिए, फिजी में सैन्य तख्तापलट (military coups), भेदभावपूर्ण कानूनी प्रावधानों और बढ़ते रूढ़िवाद के परिणामस्वरूप इंडो-फिजी समुदाय को कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में फिर से उत्प्रवास करने के

लिए मजबूर होना पड़ा।

F.2. समकालीन मुद्दे: नस्लवाद, ज़ेनोफोबिया और शोषण

समकालीन डायस्पोरा, विशेषकर श्रम बाज़ार में, नस्लवाद और ज़ेनोफोबिया (विदेशी द्वेष) के कारण उत्पन्न चुनौतियों का सामना करता है।

I. ज़ेनोफोबिया और भेदभाव

ज़ेनोफोबिया को विदेशियों के प्रति अस्वीकृति और कलंक की भावना के रूप में परिभाषित किया गया है, जो अक्सर गंभीर आर्थिक असमानताओं और प्रमुख संस्कृति द्वारा सीमांतीकरण की भावना से प्रेरित होता है।

श्रम बाज़ार में शोषण: प्रवासी श्रमिक, विशेष रूप से खाड़ी देशों में, अक्सर 3-डी नौकरियों (गंदी, खतरनाक और कठिन) में लगे रहते हैं। श्रम बाज़ार में, मेज़बान देश के नागरिकों और विदेशी श्रमिकों की मज़दूरी में बड़ा अंतर पाया जाता है। उदाहरण के लिए, कोरिया में एक सर्वेक्षण में पाया गया कि विदेशी श्रमिकों को राष्ट्रीय श्रमिकों द्वारा अर्जित मज़दूरी का आधे से भी कम प्राप्त होता था। कई पश्चिमी यूरोपीय देशों में जातीय अल्पसंख्यक और अप्रवासी श्रमिकों के बीच उच्च बेरोजगारी दर दर्ज की गई है। इसके अतिरिक्त, अध्ययनों से पता चलता है कि रोजगार तक पहुँच में सीधा भेदभाव मौजूद है, भले ही अन्य कारक (जैसे शिक्षा या अनुभव) समान हों।

अनाधिकृत प्रवासियों की असुरक्षा: जिन प्रवासियों के पास कोई कानूनी दर्जा या नागरिकता नहीं होती, वे राज्य की कल्याणकारी, पुलिस, न्यायिक और स्वास्थ्य सेवा एजेंसियों के लिए 'अदृश्य' हो जाते हैं, जिससे उनके शोषण और भेदभाव का जोखिम बढ़ जाता है। अनधिकृत श्रमिकों को जबरन श्रम संघों में शामिल होने या विरोध करने से रोकने के लिए निर्वासन की धमकी या वास्तविक अभ्यास का उपयोग करके आसानी से डराया जाता है। मानव तस्करी (धोखाधड़ी के साथ शोषण) और प्रवासी तस्करी (लाभ के लिए अवैध आवाजाही) के शिकार लोगों को भी बुनियादी मानवाधिकार सुरक्षा का अधिकार है, फिर भी वे अक्सर हिंसा और दुर्व्यवहार के शिकार होते हैं।

II. हिंसा और राजनीतिक कट्टरता का समर्थन

डायस्पोरा समुदायों को कभी-कभी मेज़बान देशों में नस्लीय रूप से प्रेरित हिंसा का भी सामना करना पड़ता है, जैसे कि 9/11 के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका में सिखों के खिलाफ हमलों की खबरें आईं।

पारराष्ट्रीय कट्टरता और राजनीतिक विभाजन: डायस्पोरा का एक बड़ा वर्ग मातृभूमि की राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेता है, जिसे 'दूरस्थ राष्ट्रवाद' कहा जाता है। यह भागीदारी अक्सर सीमाओं के पार वित्त और धार्मिक पहचान के एक जटिल नेटवर्क के माध्यम से इस्लामिक कट्टरपंथ और खालिस्तानी गतिविधियों जैसे विभिन्न वैश्विक कट्टरपंथों से जुड़ी हुई है।

• खालिस्तान आतंकी गतिविधियों को यूनाइटेड किंगडम, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका की वि-प्रादेशिकीकृत सिख आबादी से समर्थन प्राप्त था। इस आंदोलन को धन और जनशक्ति से समर्थन मिला, और यह 1985 के एयर इंडिया बमबारी जैसी घटनाओं का कारण बना, जिसने भारत-कनाडाई संबंधों पर 'एक काला धब्बा' डाल दिया। इसी प्रकार, भारत में हिंदू धार्मिक और राष्ट्रवादी राजनीतिक संगठनों को

प्रवासी समुदायों से भारी समर्थन और वित्तपोषण प्राप्त होता है।

उच्च-कुशल प्रवासियों के लिए मानवीय लागत: भले ही आईटी पेशेवरों का प्रवासन ब्रेन सर्कुलेशन (Brain Circulation) को बढ़ावा देता है, यह उच्च मानवीय लागत के साथ आता है। उदाहरण के लिए, यूएस में H-1B वीज़ा धारकों की पत्नियों (H-4 वीज़ा धारकों) को काम करने की अनुमति नहीं होती है और वे अपने पतियों पर पूरी तरह निर्भर होती हैं, जिससे उनके बीच घरेलू हिंसा (domestic violence) की उच्च घटनाएँ रिपोर्ट की गई हैं। यह मेज़बान देश में उच्च-कुशल वर्ग के भीतर भी मानव सुरक्षा की कमी को दर्शाता है।

सारांश

भारतीय प्रवासन और डायस्पोरा की संकल्पना एक वि-प्रादेशिकीकृत (deterritorialised) या पारराष्ट्रीय आबादी को संदर्भित करती है। इसमें राजनीतिक शरणार्थी, अतिथि श्रमिक और अप्रवासी जैसे विभिन्न समूह शामिल हैं। यह पहचान मुख्य रूप से फैलाव के इतिहास और मातृभूमि के मिथकों/स्मृतियों के माध्यम से परिभाषित होती है।

औपनिवेशिक युग का प्रवासन गिरमिटिया श्रम प्रणाली (1834-1917) पर केंद्रित था, जिसे ह्यूग टिंकर ने "गुलामी की एक नई प्रणाली" कहा था। मॉरीशस पहला गंतव्य था जिसने 1834 में इन श्रमिकों को आयात किया। उत्तर-औपनिवेशिक प्रवासन में GCC देशों के श्रम प्रवाह के साथ-साथ उत्तरी अमेरिका और यूरोप में उच्च-कुशल पेशेवरों का उदय हुआ। भारतीय-अमेरिकी इन देशों में सबसे धनी और सबसे शिक्षित समुदायों में से हैं।

राजनीतिक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, भारत विश्व में अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण (remittances) का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता है। केरल, पंजाब और गोवा इन प्रेषणों पर अत्यधिक निर्भर हैं। डायस्पोरा भारत की विदेश नीति का एक "स्तंभ" है, जो भारत की नरम शक्ति (Soft Power) का मुख्य साधन है।

सांस्कृतिक पहचान संकरता (Hybridity) और दोहरी चेतना ('यहां और वहां' होने) की विशेषता प्रदर्शित करती है। 1990 के दशक में, बॉलीवुड ने पुरानी यादों (nostalgia) को संबोधित करने के लिए 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' जैसी फिल्में बनाकर डायस्पोरा को लक्षित किया। हालांकि, प्रवासी समुदायों को मेज़बान समाजों में नस्लवाद और ज़ेनोफोबिया (विदेशी द्वेष) का सामना करना पड़ता है। यू.एस. में आत्मसातीकरण ('पिघलता बर्तन') और कनाडा में बहुसंस्कृतिवाद (Multiculturalism) जैसी अलग-अलग अनुकूलन नीतियाँ उनके एकीकरण को प्रभावित करती हैं।

प्रवासी समुदायों के समक्ष चुनौतियाँ एक ऐसे दोतरफा आईने के समान हैं। एक तरफ, मेज़बान देश की नीतियाँ उन्हें एक निश्चित सांस्कृतिक पहचान देती हैं जो उन्हें 'बाहरी' के रूप में देखती हैं, भले ही वे कई पीढ़ियों से वहीं क्यों न रह रहे हों—जैसे कि आईने में अपनी छवि देखना, लेकिन उस छवि को अप्रासंगिक स्थान से जोड़ा जाना। दूसरी तरफ, उनका श्रम बाज़ार का शोषण और नस्लीय पूर्वाग्रह उस आईने के पीछे की टूटी हुई सतह की तरह है, जो उनकी आर्थिक और सामाजिक भेद्यता को दर्शाता है, जहाँ उनका मूल्य उनके कौशल के बजाय उनके 'विदेशी' होने से निर्धारित होता है।

SUGGESTED READING

- Lal, Brij V., Peter Reeves, and Rajesh Rai (Eds.). (2006). The Encyclopedia of the Indian Diaspora. Honolulu: University of Hawaii Press.
- Appadurai, Arjun. (1996). Modernity at Large: Cultural Dimensions of Globalization. Minneapolis: University of Minnesota Press.
- Mishra, Vijay. (2007). The Literature of the Indian Diaspora: Theorizing the Diasporic Imaginary. London: Routledge.
- Ghosh, Amitav. (2008). Sea of Poppies. London: Penguin. 5. Vertovec, Steven. 1997. "Three Meanings of Diaspora: Exemplified among South Asian Religions". Diaspora, Vol. 6 (3): 277-330.

(खण्ड-2)

भारतीय डायस्पोरा के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास का विस्तृत विवरण

1. भारतीय डायस्पोरा की अवधारणा: वि-क्षेत्रीकरण और पाररराष्ट्रीयता

भारतीय डायस्पोरा का अध्ययन हाल के वर्षों में गति प्राप्त कर रहा है। यह गति मुख्य रूप से इस तथ्य से प्रेरित है कि यह उन आबादी का वर्णन करता है जिन्हें 'डीटेरिटोरियलाइज़्ड' (deterritorialised) या 'पाररराष्ट्रीय' (transnational) माना जाता है। 'वि-क्षेत्रीकरण' उस प्रक्रिया को दर्शाता है जहाँ लोग भौतिक रूप से एक भौगोलिक स्थान से विस्थापित हो जाते हैं, लेकिन सांस्कृतिक, आर्थिक और भावनात्मक रूप से अपनी गृहभूमि से जुड़े रहते हैं। वहीं, 'पाररराष्ट्रीय' समुदाय वे होते हैं जो विभिन्न राष्ट्रीय सीमाओं के पार सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संबंधों का एक नेटवर्क बनाए रखते हैं।

डायस्पोरा शब्द अब केवल 'आप्रवासी' (immigrants), 'अतिथि-श्रमिक' (guest-workers), और 'शरणार्थी' (refugees) जैसी श्रेणियों के लिए एक व्यापक और ढीले संदर्भ के रूप में उपयोग किया जा रहा है। यह दर्शाता है कि यह एक सजातीय (homogenous) अवधारणा नहीं है, बल्कि विभिन्न ऐतिहासिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों से विस्थापित हुए विविध समूहों को समाहित करती है।

डायस्पोरा की अवधारणा को समझने के लिए तीन सामान्य और महत्वपूर्ण अर्थ उभरे हैं:

* डायस्पोरा एक सामाजिक रूप के रूप में (Diaspora as Social Form): भौतिक फैलाव के बावजूद समूह के संबंधों और नेटवर्कों पर ज़ोर देता है।

* डायस्पोरा चेतना के एक प्रकार के रूप में (Diaspora as Type of Consciousness): अनुभव, मन की स्थिति, और द्वैतपूर्ण पहचान की भावना पर ज़ोर देता है।

* सांस्कृतिक उत्पादन के एक मोड के रूप में डायस्पोरा (Diaspora as Mode of Cultural Production): पाररराष्ट्रीय सामाजिक और सांस्कृतिक घटना के निर्माण और पुनरुत्पादन की प्रक्रिया पर ज़ोर देता है।

भारतीय डायस्पोरा के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास में सांस्कृतिक अनुकूलन (cultural adaptations), संकरण (hybridity), समकालिकता (syncretism), सामाजिक श्रेणियाँ, और पहचान निर्माण में भारतीय सिनेमा, साहित्य और लोकप्रिय संस्कृति की भूमिका महत्वपूर्ण है। ये तत्व सामूहिक रूप से बताते हैं कि कैसे डायस्पोरिक समुदाय नई संस्कृतियों के साथ बातचीत करते हैं, अपनी पहचान को फिर से परिभाषित करते हैं, और अपने अस्तित्व के जटिल अनुभव को व्यक्त करते हैं।

2. डायस्पोरा: सामाजिक रूप और त्रिपक्षीय संबंध

डायस्पोरा को अक्सर एक सामाजिक रूप के रूप में समझा जाता है, जो एक ऐसे समूह पर ज़ोर देता है जो भौतिक फैलाव (dispersal) के बावजूद अपने आंतरिक और बाहरी संबंधों को बनाए रखता है। यह एक संरचनात्मक दृष्टिकोण है जो डायस्पोरिक समूहों की कार्यप्रणाली और उनके स्थायित्व को समझने में मदद करता है।

सामाजिक रूप की मुख्य विशेषताएँ

इस सामाजिक रूप की कुछ सामान्य विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य प्रवासी समूहों से अलग करती हैं:

* सामाजिक संबंध: डायस्पोरा के सदस्यों के बीच संबंध विशेष ऐतिहासिक और भौगोलिक अनुभवों से मजबूत होते हैं। डायस्पोरा एक गृह स्थान से कम से कम दो अन्य देशों में स्वैच्छिक या जबरन प्रवास के परिणामस्वरूप बनता है।

* सामूहिक पहचान का रखरखाव: यह अक्सर साझा उत्पत्ति, ऐतिहासिक अनुभव और भौगोलिक स्थान से संबंध की 'जातीय मिथक' (ethnic myth) के संदर्भ में कायम रहता है। यह मिथक एक काल्पनिक एकजुटता प्रदान करता है जो भौगोलिक दूरी के बावजूद समूह को बांधे रखता है।

* नेटवर्क और विनिमय: ये समूह संचार और विनिमय के नेटवर्क को संस्थागत बनाते हैं जो क्षेत्रीय राज्यों से परे जाते हैं। इन नेटवर्कों में आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विनिमय शामिल हैं, जो डायस्पोरा को 'पारराष्ट्रीय' चरित्र प्रदान करते हैं।

* मेजबान समाज द्वारा अस्वीकृति/अलगाव: मेजबान समाज द्वारा पूरी तरह से स्वीकार किए जाने में असमर्थता या अनिच्छा अक्सर अलगाव या बहिष्करण की भावना को बढ़ावा देती है। यह बाहरी दबाव समूह की आंतरिक एकजुटता को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण कारक बन सकता है।

'त्रिपक्षीय संबंध' (Triadic Relationship)

समकालीन अवधि में, डायस्पोरा को 'त्रिपक्षीय संबंध' की विशेषता माना जाता है। यह संबंध तीन ध्रुवों के बीच बनता है:

(ए) विश्व स्तर पर फैले हुए लेकिन सामूहिक रूप से स्व-पहचान वाले जातीय समूह।

(बी) क्षेत्रीय राज्य जहाँ वे निवास करते हैं (मेजबान देश)।

(सी) गृहभूमि राज्य।

भारतीय डायस्पोरिक समूहों के बीच 'त्रिपक्षीय संबंध' के महत्वपूर्ण उदाहरण राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में देखे जाते हैं।

* आर्थिक और राजनीतिक आकर्षण: भारत सरकार ने अनिवासी भारतीयों ('NRIs') के बौद्धिक और वित्तीय संसाधनों को आकर्षित करने के लिए उपाय किए हैं। यह एक स्पष्ट उदाहरण है कि कैसे गृहभूमि राज्य अपनी डायस्पोरा को एक संपत्ति के रूप में देखता है, जो राष्ट्रीय विकास में योगदान दे सकता है।

* गृह-राज्य की राजनीति पर प्रभाव: राजनीतिक रूप से, विस्थापित समूहों में गृह-राज्य की राजनीति के प्रति "आलोचना या लगाव की अतिरंजित और तीव्र भावनाएं" पैदा हो सकती हैं। विदेश में हिंदुओं के बीच सांस्कृतिक पुनरुत्पादन की समस्या को घर पर हिंदू कट्टरवाद की राजनीति से जोड़ा गया है। इसी तरह, खालिस्तान की स्थापना का आंदोलन भी एक 'आविष्कृत गृहभूमि' (invented homeland) का एक उदाहरण है जो कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में सिखों की विस्थापित आबादी के बीच देखा गया।

* सामाजिक और सांस्कृतिक प्रदर्शन: अयोध्या में बाबरी मस्जिद के विध्वंस (दिसंबर 1992) जैसी घटनाएँ ब्रिटेन में हिंदू और मुस्लिम संगठनों के बीच अभियान और संवाद के माध्यम से 'त्रिपक्षीय संबंध' की अन्य

तौर-तरीकों को प्रदर्शित करती हैं। इससे पता चलता है कि गृहभूमि की घटनाएँ डायस्पोरा के भीतर की पहचान और सामाजिक गतिशीलता को सीधे प्रभावित करती हैं।

3. डायस्पोरा चेतना के प्रकार के रूप में: द्वैत और लचीलापन

'डायस्पोरा चेतना' का दृष्टिकोण अनुभव, मन की स्थिति और पहचान की भावना पर अधिक जोर देता है। यह एक विशेष प्रकार की जागरूकता है जो समकालीन पारराष्ट्रीय समुदायों में उत्पन्न होती है, और यह डायस्पोरा के सदस्यों के आंतरिक जीवन और विश्व-दृष्टिकोण को दर्शाती है।

द्वैत या विरोधाभासी प्रकृति (Duality or Paradoxical Nature)

डायस्पोरा चेतना में एक अंतर्निहित द्वैत होता है:

* यह भेदभाव और बहिष्करण के अनुभवों से नकारात्मक रूप से गठित होती है, जो मेजबान समाज में उनके 'अन्य' (other) होने की भावना को मजबूत करता है।

* यह ऐतिहासिक विरासत (जैसे 'भारतीय सभ्यता') या समकालीन विश्व सांस्कृतिक ताकतों के साथ सकारात्मक पहचान से भी गठित होती है।

जेम्स क्लिफोर्ड के अनुसार, डायस्पोरा चेतना "नुकसान और आशा को एक परिभाषित तनाव के रूप में जीती है"। यह एक ऐसा विरोधाभास है जहाँ अतीत की हानि का दुख भविष्य के बेहतर जीवन की आशा के साथ सह-अस्तित्व में रहता है। यह चेतना "यहां रहकर वहां एक एकजुटता और संबंध" को मानती है, यानी भौतिक रूप से मेजबान देश में रहते हुए भी भावनात्मक और वैचारिक रूप से गृहभूमि से जुड़ी रहना।

बहुलता और लचीली पहचान (Multiplicity and Fluid Identities)

डायस्पोरा चेतना में बहु-स्थानीयता (multi-locality) की जागरूकता एक केंद्रीय भूमिका निभाती है। यह जागरूकता 'यहां' और 'वहां' दोनों जगह समान 'मार्गों' (routes) और 'जड़ों' (roots) को साझा करने वालों के साथ वैचारिक रूप से जुड़ने की आवश्यकता को प्रेरित करती है।

* निरंतर आत्म-नवीनीकरण: डायस्पोरा पहचानें वे हैं जो "परिवर्तन और अंतर के माध्यम से लगातार खुद को नया रूप दे रही हैं"।

* तरल पहचान: ये समूह अक्सर कई, तरल (fluid) और बहुल पहचानों को बनाए रखते हैं जो उन्हें मूल समाज और मेजबान समाजों दोनों से जोड़ती हैं। यह तरल प्रकृति उन्हें विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों के अनुकूल होने की क्षमता देती है।

* टूटी हुई यादें: डायस्पोरा चेतना में 'टूटी हुई यादें' (fractured memories) और लगाव के नए नक्शे शामिल हैं, जो जरूरी नहीं कि पहचान को मजबूत करें, बल्कि पीढ़ीगत राजनीति के अनुरूप हो सकते हैं।

धर्म और संस्कृति का अलगाव

प्रवासी समूह धार्मिक बहुलवाद के संदर्भ में आत्म-जागरूकता प्राप्त करते हैं, और अपने विश्वास और अभ्यास के तत्वों को तर्कसंगत बनाने और सही ठहराने के लिए मजबूर होते हैं।

* युवा पीढ़ी में भेद: इस चेतना के कारण, युवा दक्षिण एशियाई मुस्लिम महिलाएँ 'धर्म' और 'संस्कृति'

के बीच एक स्पष्ट अंतर स्थापित कर रही हैं, जिसे उनके माता-पिता काफी हद तक अविभाज्य मानते थे। यह प्रवृत्ति स्व-जागरूक 'धर्म/संस्कृति के भेद का युक्तिकरण' की ओर ले जाती है।

* मौलिक बनाम सांस्कृतिक: प्रवासी हिंदू यह अंतर करने की कोशिश करते हैं कि धर्म की निरंतरता के लिए क्या 'मौलिक और आवश्यक' है और क्या 'सांस्कृतिक संगत' (cultural accoutrements) है। यह अलगाव डायस्पोरा में धार्मिक पहचान को बनाए रखने के लिए एक रणनीतिक प्रयास है।

4. सांस्कृतिक उत्पादन के मोड के रूप में डायस्पोरा

इस अर्थ में, डायस्पोरा को पारराष्ट्रीय सामाजिक और सांस्कृतिक घटना के उत्पादन और पुनरुत्पादन के रूप में वर्णित किया गया है। यह प्रक्रिया वैश्वीकरण के साथ जुड़ी हुई है, जिसके परिणामस्वरूप संकरण (creolisation), वापस-और-आगे हस्तांतरण (back-and-forth transferences), और निरंतर परिवर्तन होते हैं।

संकर सांस्कृतिक रूप (Hybrid Cultural Forms)

सांस्कृतिक उत्पादन में 'संकर' (hybrid), 'क्रियोलाइज़्ड' (creolised), या 'कटाव और मिश्रण' (cut 'n' mix) जैसे रूप शामिल हैं।

- नई जातीयताएँ: ये नई जातीयताएँ (new ethnicities) अक्सर प्रवासी युवाओं में पाई जाती हैं, जो एक से अधिक विरासत से संस्कृति और पहचान के पहलुओं को आत्म-जागरूक रूप से चुनते हैं, समन्वित करते हैं और विस्तृत करते हैं। उदाहरण के लिए, "ब्रिट-एशियन" संगीत या फैशन, जहाँ भारतीय और ब्रिटिश तत्वों का मिश्रण होता है।

सांस्कृतिक पुनरुत्पादन में रुझान (Trends in Cultural Reproduction)

दक्षिण एशियाई धर्मों में धार्मिक अनुष्ठान के संबंध में कुछ रुझान रिपोर्ट किए गए हैं:

* सजातीयता (homogenisation): धार्मिक प्रथाओं का सरलीकरण और मानकीकरण।

* पुन: परंपराकरण (retraditionalisation): परंपराओं को जानबूझकर और अक्सर रूढ़िवादी तरीके से मजबूत करना।

* जटिलता और स्पष्ट उपभोग (complexification and conspicuous consumption): अनुष्ठानों को अधिक भव्य और सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करना, जो आर्थिक समृद्धि को भी दर्शाता है।

मीडिया का प्रभाव (Influence of Media)

वैश्विक मीडिया और संचार सांस्कृतिक घटनाओं के प्रवाह और डायस्पोरिक पहचान के परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण मार्ग हैं।

* पहचान निर्माण में सिनेमा/टीवी: टेलीविजन और फिल्म युवा पंजाबी लंदनवासियों की पहचान के निर्माण और परिवर्तन में भूमिका निभाते हैं।

* पारराष्ट्रीय संबंध: 'वीडियो लेटर' और होम वीडियो जैसे मीडिया संचार प्रणालियों ने भारत और डायस्पोरा के बीच संबंधों को मजबूत किया है, जिससे 'यहाँ' और 'वहाँ' के बीच की दूरी कम हुई है।

5. भारतीय सिनेमा, साहित्य और लोकप्रिय संस्कृति की भूमिका

भारतीय सिनेमा, साहित्य, और लोकप्रिय संस्कृति डायस्पोरिक पहचान को आकार देने और व्यक्त करने के लिए महत्वपूर्ण मंच हैं। ये माध्यम डायस्पोरिक अनुभव के भावनात्मक, राजनीतिक और सामाजिक पहलुओं को चित्रित करते हैं।

डायस्पोरा साहित्य (Diaspora Literature)

डायस्पोरा साहित्य में वे कार्य शामिल हैं जो डायस्पोरा के विषय पर लिखे गए हैं, अक्सर डायस्पोरिक व्यक्ति द्वारा, और यह प्रवासन और डायस्पोरा की घटना पर अकादमिक लेखन से अलग है।

* प्रमुख विषय-वस्तु और आख्यान: इन आख्यानों में सांस्कृतिक पहचान (cultural identity), जातीयता (ethnicity), उदासी (nostalgia), अलगाव (alienation), नस्लवाद (racism), विस्थापन (displacement), और सांस्कृतिक मूल्यों का विरोधाभास शामिल है। सबसे प्रमुख विषय हैं: गृहभूमि की हानि (loss of homeland), पुरानी यादें (nostalgia), और 'अन्यथा' (otherness) की भावना।

* पीढ़ीगत आख्यान (Generational Narratives): भारतीय डायस्पोरा लेखन के दो चरण हैं: औपनिवेशिक (Colonial) और उत्तर-औपनिवेशिक (Post-Colonial)।

* पहली पीढ़ी के लेखक: इन्होंने विस्थापन (displacement) और अव्यवस्था (dislocation) के दर्द का अनुभव किया। इनके लिए भारत एक स्मृति और उदासी थी। उदाहरणों में निरद सी. चौधरी, राजा राव, और जी.वी. देसानी शामिल हैं।

* दूसरी पीढ़ी के लेखक: ये गोद लिए गए देशों में पैदा हुए और पले-बढ़े। इन्हें दो सांस्कृतिक निर्माणों के बीच जड़हीनता और पहचान संकट का सामना करना पड़ा। उदाहरणों में वी. एस. नायपॉल, सलमान रुश्दी, अनीता देसाई, और झुम्पा लाहिड़ी शामिल हैं।

प्रमुख लेखक और उनकी विषय-वस्तु:

* वी. एस. नायपॉल (V.S. Naipaul): उनके पात्र (जैसे मोहन बिस्वास और गणेश रामसुमैर) विस्थापन की सामूहिक स्मृति के साथ अतीत की विरासत को जीने की कोशिश करते हैं और एक घर की निरंतर खोज करते हैं। नायपॉल के अनुसार, घर केवल एक विचार के रूप में, एक बच्चे की कल्पना में मौजूद है।

* सलमान रुश्दी (Salman Rushdie): उनके काम में अक्सर प्रवासन (migration) और अव्यवस्था (translocation) को जादुई यथार्थवाद (magic realism) के साथ allegorical (रूपक) दृष्टिकोण से देखा जाता है। रुश्दी ने 'काल्पनिक गृहभूमि' (Imagined homeland) के विचार को केंद्रीयता दी।

* अनीता देसाई (Anita Desai): विस्थापन की भावना और आप्रवासियों के अकेलेपन को 'फास्टिंग, फीस्टिंग' और 'बाय-बाय ब्लैकबर्ड' जैसे उपन्यासों में व्यक्त किया गया है। उनके पात्र चिंता से भरे जीवन जीते हैं और पहचान तथा संबंध के प्रश्न उनके अस्तित्व का स्थायी हिस्सा बन जाते हैं।

* भारती मुखर्जी (Bharati Mukherjee): इनके उपन्यास अंतरजातीय प्रेम (interracial love), आप्रवासन, आत्मसातीकरण (assimilation), और सांस्कृतिक बहुलवाद की चुनौतियों को दर्शाते हैं। उनके उपन्यास 'वाइफ' में, नायक डिम्पल क्रॉस-कल्चरल संघर्षों में डूब जाती है, क्योंकि वह खुद को दो संस्कृतियों-पूर्व और पश्चिम-के बीच फंसा हुआ महसूस करती है।

* झुम्पा लाहिड़ी (Jhumpa Lahiri): लाहिड़ी पहली और दूसरी पीढ़ी के भारतीय प्रवासियों के जीवन को दर्शाती हैं। उनके पात्र निरंतर संबंध (belonging), पहचान (identity), और गति की तरलता (fluidity of movement) की तलाश में रहते हैं। लाहिड़ी डायस्पोरिक महिलाओं को एक समग्र डायस्पोरिक नारीवाद (composite diasporic feminism) के प्रकाश में देखती हैं।

भारतीय सिनेमा और लोकप्रिय संस्कृति (Indian Cinema and Popular Culture)

भारतीय सिनेमा, विशेष रूप से बॉलीवुड, दुनिया के सबसे संपन्न फिल्म उद्योगों में से एक है। इसने डायस्पोरा के साथ अपने संबंधों को समय के साथ महत्वपूर्ण रूप से बदला है।

* प्रारंभिक चित्रण: दादासाहेब फाल्के को भारतीय सिनेमा का जनक माना जाता है। प्रारंभिक फिल्मों में भारतीय प्रवासियों को दर्शाया गया था; जैसे 1921 में 'द्विपक्षीय फेराट' (Bilet Pherat) एक भारतीय व्यक्ति को दिखाता है जो ब्रिटेन से लौटने पर अजीब आदतों वाला बन जाता है। 1970 की राष्ट्रवादी फिल्म 'पूरब और पश्चिम' में लंदन में भारतीयों को पूरी तरह से पश्चिमीकृत दिखाया गया है।

* डायस्पोरा को लक्षित करना (1990 का दशक): 1990 के दशक में, फिल्म उद्योग ने डायस्पोरा को लक्षित करना शुरू किया। दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (DDLJ, 1995) पहली फिल्म थी जिसने डायस्पोरा को "मजाक" बनाने के बजाय उनकी "उदासी और लालसा की भावनाओं" को गंभीरता से लिया। 1990 के दशक के बाद की फिल्मों, जैसे 'कभी खुशी कभी ग़म' (K3G), ने एनआरआई/पीआईओ (NRI/PIO) को चित्रित किया, जो भारत को संस्कृति, विरासत और राष्ट्रीय पहचान पर केंद्रित लालसा के स्थान के रूप में खोजते हैं।

* एनआरआई चित्रण और पहचान: बॉलीवुड अपनी डायस्पोरिक दर्शकों को "पारंपरिक और समकालीन भारत" के आदर्शवादी चित्रणों के साथ आकर्षित करता है। यह सांस्कृतिक सहानुभूति के माध्यम से, भारत के सांस्कृतिक अधिकार के साथ जुड़ने का एक उपकरण बन गया। वाणिज्यिक भारतीय सिनेमा एनआरआई को अमीर और समृद्ध भारतीयों के रूप में चित्रित करता है।

* सांस्कृतिक अनुकूलन और महिला पहचान: डायस्पोरा फिल्में विस्थापन, असहिष्णुता और कलंक की भावना को व्यक्त कर सकती हैं जो प्रवासियों का सामना करते हैं। बॉलीवुड की बढ़ती लोकप्रियता डायस्पोरा में भारतीय महिलाओं के लिए पहचान बनाने में महत्वपूर्ण है। दूसरी पीढ़ी के भारतीय-अमेरिकी महिलाएं इन फिल्मों का उपयोग अपनी 'भारतीयता' की भावना स्थापित करने के लिए करती हैं।

* फिल्म पर्यटन (Film Tourism): यह एक नया चलन है जहाँ पर्यटन स्थल का चयन सीधे सिनेमाई प्रस्तुतियों से प्रभावित होता है। यह फिल्म देखने, स्थानों के बारे में कल्पना करने, और फिर यात्रा को प्रतिबिंबित करने के पिछले चक्रों में गहराई से निहित है।

6. भारतीय डायस्पोरिक समुदायों के भीतर सामाजिक श्रेणियाँ

डायस्पोरा में सामाजिक श्रेणियाँ और स्तरीकरण जटिल हैं, और इन्हें संरचना (structure) और एजेंसी (agency) दोनों के माध्यम से समझा जाना चाहिए।

त्रिनिदाद में ईस्ट इंडियन (East Indians in Trinidad)

त्रिनिदाद में ईस्ट इंडियन समुदाय शुरू में एक अनन्य (exclusive) और बहिष्कृत (excluded) समूह था।

* उत्पत्ति और जाति: अधिकांश अप्रवासी गंगा के मध्य मैदानों (संयुक्त प्रांत, अवध, बिहार, और उड़ीसा) से आए थे। वे धार्मिक और भाषाई रूप से विषमांगी (heterogeneous) थे। कुछ विद्वानों का मानना है कि अप्रवासी सामान्य श्रेणी की जातियों का प्रतिनिधित्व करते थे, फिर भी सामूहिक पहचान समरूप (homogenous) थी। गाँव में बसने के बाद भी जाति और अन्य भेद बहाल हो गए, जैसे ब्राह्मण और चमार के बीच अंतर।

* गतिशीलता और बहिष्कार: 19वीं शताब्दी के अंत में ईस्ट इंडियंस के लिए गतिशीलता का प्राथमिक साधन भूमि अधिग्रहण और शिक्षा थी। हालांकि, बागान मोड के प्रभुत्व के कारण यह गतिशीलता सीमित थी। शिक्षा के लिए, ईस्ट इंडियंस ने मिशनरी स्कूलों का उपयोग आर्थिक गतिशीलता के लिए उत्तोलक के रूप में किया, लेकिन वे अपना प्राचीन विश्वास छोड़ने को तैयार नहीं थे।

* 'बाहरी' पहचान: त्रिनिदाद में, ईस्ट इंडियन को 'बाहरी' (outsider) माना जाता था। मुनसिंघे (Munasinghe) के अनुसार, जबकि एफ्रो-त्रिनिदादियन और यूरोपीय पहचान रंग पर आधारित हैं, ईस्ट इंडियन पहचान केवल 'वंश' (ancestry) पर आधारित है। रेस-कम-क्लास संरचना के कारण ईस्ट इंडियन जातीयता का बहिष्कार सामाजिक स्तरीकरण का एक प्रतिबिंब था।

पारराष्ट्रीय मध्य वर्ग (Transnational Middle Class – ETMC)

वैश्वीकरण के संदर्भ में, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी (IT) पेशेवरों का प्रवास एक 'जातीय पारराष्ट्रीय मध्य वर्ग' (Ethnic Transnational Middle Class – ETMC) के गठन को दर्शाता है।

* जातीय नेटवर्क (Ethnic Networks): आईटी पेशेवरों के प्रवासन में जातीय नेटवर्क महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये नेटवर्क राज्य और बाजार के बीच सामंजस्य स्थापित करते हैं। ये नेटवर्क 'बॉडी शॉप' (placement agents) को श्रमिकों को चुप रखने में सक्षम बनाते हैं, जब वे बेंच पर होते हैं, और इस प्रकार अस्थिर बाजार की लागत श्रमिकों को हस्तांतरित करते हैं।

* संसाधनों का चैनलिंग (Channeling of Resources): ETMC में संसाधनों को चैनलाइज़ करने का एक उपन्यास तरीका दहेज की संस्था है। दहेज को अक्सर महंगी निजी शिक्षा में निवेश के लिए दूल्हे के माता-पिता को प्रत्यक्ष इनाम के रूप में देखा जाता है, या आईटी अध्ययन/प्रवासन के लिए प्रायोजन (sponsorship) के रूप में। यह दिखाता है कि कैसे पारंपरिक सामाजिक संरचनाएं पारराष्ट्रीय गतिशीलता और आर्थिक निवेश को प्रभावित करती हैं।

7. निष्कर्ष: इंटरकल्चुरेशन और सांस्कृतिक क्षमता

भारतीय डायस्पोरा जटिल और बहुआयामी है। यह सामाजिक रूप, चेतना के प्रकार और सांस्कृतिक उत्पादन के मोड के रूप में प्रकट होता है। डायस्पोरा में पहचान का पुनर्गठन (reconstruction) और पुनरुत्पादन (reproduction) संरचनात्मक, चेतन (conscious) और अचेतन (non-conscious) कारकों के संयुक्त कार्य पर निर्भर करता है।

भारतीय डायस्पोरा साहित्य और सिनेमा सांस्कृतिक संकरता (cultural hybridity), उदासी (nostalgia) और पहचान के संकटों को व्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह प्रक्रिया केवल एकतरफा अनुकूलन नहीं है, बल्कि 'इंटरकल्चुरेशन' (interculturation) की एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है, जैसा कि त्रिनिदाद के संदर्भ में सुझाया गया है। इंटरकल्चुरेशन का अर्थ है दो या दो से अधिक संस्कृतियों

के बीच सक्रिय और पारस्परिक विनिमय और प्रभाव।

जिस तरह एक द्विभाषी व्यक्ति उपयुक्त होने पर कोड स्विच (code switch) कर सकता है, वैसे ही व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक रूप से सक्षम हो सकता है। सांस्कृतिक क्षमता (cultural competence) और सुधार (improvisation) 'हैबिटस' (habitus) की धारणा के मुख्य लक्षण हैं। हैबिटस अनुभवों से प्राप्त किए गए गैर-चेतन स्वभावों का एक सेट है, जो स्थितिजन्य रूप से सक्षम कार्रवाई के लिए एक भंडार प्रदान करता है। यह अचेतन ज्ञान ही डायस्पोरिक व्यक्ति को विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में सहजता से कार्य करने में सक्षम बनाता है।

यूनिट III

प्रवासी भारतीयों में राजनीतिक अर्थव्यवस्था और समकालीन मुद्दे

प्रस्तावना

भारतीय प्रवासन का अध्ययन, चाहे वह गिरमिटिया श्रम (Indentured Labour) के ऐतिहासिक आघात से उत्पन्न हुआ हो या समकालीन उच्च-कुशल प्रवासन (high-skilled migration) से, आज राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में राजनीतिक अर्थव्यवस्था और रणनीतिक हितों के केंद्र में है [Conversation History]। भारतीय डायस्पोरा ने मात्र सांस्कृतिक वारिसों से विकसित होकर भारत के लिए मज़बूत आर्थिक, रणनीतिक, बौद्धिक, और कूटनीतिक संपत्ति (robust economic, strategic, intellectual, and diplomatic assets) का रूप ले लिया है।

यह इकाई डायस्पोरा की भागीदारी के दो केंद्रीय आयामों आर्थिक योगदान और प्रेषण, एवं राजनीति और विदेश नीति में भागीदारी की पड़ताल करती है। वैश्विक स्तर पर, प्रवासियों द्वारा भेजे गए प्रेषण (Remittances) बाहरी विकास वित्त का एक महत्वपूर्ण और स्थिर स्रोत (important and stable source of external development finance) माने जाते हैं। भारत विश्व में अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता है। ये वित्तीय प्रवाह, जो परिवारों की गरीबी कम करने, उपभोग को बढ़ावा देने और विदेशी मुद्रा भंडार को मज़बूत करने में सहायक होते हैं, भारत के कुछ राज्यों (जैसे केरल और पंजाब) की अर्थव्यवस्थाओं पर अत्यधिक केंद्रित हैं। डायस्पोरा आज भारत की विदेश नीति का एक "स्तंभ" (pillar) बन गया है, जो पारंपरिक सरकार-से-सरकार संबंधों से हटकर बहुस्तरीय और समाज-केंद्रित दृष्टिकोण को दर्शाता है। डायस्पोरा भारत की नरम शक्ति (Soft Power) का सबसे बड़ा साधन है। वे अपने निवास के देशों में राजनीतिक पैरवी (lobbying) के माध्यम से भारत के हितों को प्रभावित करते हैं, जैसा कि यू.एस.-भारत नागरिक परमाणु समझौते में देखा गया। हालाँकि, दूरस्थ राष्ट्रवाद (Long-distance Nationalism) और धार्मिक कट्टरपंथ को वित्तपोषित करने जैसे विभाजनकारी पहलुओं ने भी जटिल सुरक्षा चुनौतियाँ पेश की हैं।

यह अध्याय भारतीय प्रवासियों के बढ़ते प्रभाव के पीछे की गतिशीलता का विश्लेषण करता है, यह देखते हुए कि वे किस प्रकार सह-निर्माता (co-creators) के रूप में वैश्विक मंच पर भारत की लोकतांत्रिक छवि और हितों को आकार दे रहे हैं।

1. आर्थिक योगदान और प्रेषण (Economic contributions and remittances to India)

1. आर्थिक योगदान और प्रेषण (Economic contributions and remittances to India)

भारतीय डायस्पोरा का आर्थिक योगदान केवल संख्यात्मक आँकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश की राजनीतिक अर्थव्यवस्था (Political Economy) और रणनीतिक क्षमता (strategic capacity) का एक निर्णायक हिस्सा बन चुका है। प्रवासियों द्वारा भेजे गए प्रेषण (Remittances), जो अंतर्राष्ट्रीय और आंतरिक दोनों प्रकार के हैं, भारत के लिए बाहरी विकास वित्त का एक महत्वपूर्ण और स्थिर स्रोत प्रदान करते हैं।

1.1 प्रेषण का महत्व और सैद्धांतिक संदर्भ

प्रेषण को विकास अध्ययन में एक महत्वपूर्ण और स्थिर स्रोत माना जाता है जो प्राप्तकर्ता परिवारों की गरीबी को कम करने में सहायक होता है, जिसमें क्षणिक गरीबी और कभी-कभी संरचनात्मक गरीबी भी शामिल है।

1.1.1 प्रेषण की प्रकृति और स्थायित्व

1. स्थिरता और लचीलापन: मैक्रो स्तर पर, प्रेषण प्रवाह अक्सर बाहरी पूंजी प्रवाहों की तुलना में अधिक स्थिर साबित हुआ है। भारत जैसे देशों के लिए, जहाँ प्रवासन गंतव्य विविध हैं (जैसे मध्य पूर्व, उत्तरी अमेरिका और यूरोप), प्रेषण प्रवाह एक संकीर्ण प्रवासन गलियारे पर निर्भर देशों की तुलना में मेज़बान देश की आर्थिक स्थितियों के प्रति अधिक लचीला होता है।

2. संकट के दौरान प्रदर्शन: प्रेषण ने 1990 और 2008 के बीच 14% प्रति वर्ष की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) दर्ज की और इस अवधि के दौरान इसमें किसी भी वर्ष गिरावट नहीं आई। 2008 के वित्तीय संकट के बाद, जब वैश्विक प्रेषण प्रवाह 6% गिर गया, तब भी भारत में प्रेषण में केवल 1% की न्यूनतम गिरावट आई, जिससे यह एक स्थिर मौद्रिक प्रवाह बना रहा।

3. विकास का साधन: प्रेषण विकासशील देशों को मूल्यवान विदेशी मुद्रा (foreign exchange) अर्जित करने में सक्षम बनाते हैं।

1.1.2 आर्थिक जोखिम और असमानता

1. वित्तीय निर्भरता: प्रेषण से परिवारों में वित्तीय निर्भरता बढ़ सकती है।

2. असमानता में वृद्धि: प्रवासन की स्व-चयन प्रकृति के कारण—चूंकि उच्च शिक्षा और आय वाले लोग अक्सर प्रवास करते हैं—प्रेषण का वितरण भी असमान होता है। यह संकेंद्रण प्रेषण स्रोत क्षेत्रों में मौजूदा असमानताओं को संभावित रूप से बढ़ा सकता है। उदाहरण के लिए, घरेलू प्रेषण का लगभग 50% हिस्सा शीर्ष 25% उपभोग वर्ग के परिवारों को प्राप्त होता है।

3. गैर-उत्पादक निवेश: सैद्धांतिक रूप से, प्रेषण उत्पादक निवेशों से ध्यान हटा सकते हैं।

1.2 अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण: आयतन, स्रोत और घटक

भारत विश्व में अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता (largest recipient) है।

1.2.1 प्रेषण का आयतन और प्रकार

1. कुल निजी हस्तांतरण: 2007-08 में, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने ₹1.74 लाख करोड़ (लगभग $43.5 बिलियन) को 'निजी हस्तांतरण' के रूप में दर्ज किया। RBI के अनुमान अनौपचारिक प्रवाहों को शामिल नहीं करते हैं, हालांकि 1990 के दशक में विनिमय दर उदारीकरण के बाद अनौपचारिक प्रवाहों का महत्व कम माना गया है।

2. घटक और उद्देश्य: इस कुल निजी हस्तांतरण को RBI तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत करता है:

- पारिवारिक भरण-पोषण, आदि: कुल प्रेषण का लगभग 50% हिस्सा इस मद के तहत आता है, जो

मुख्य रूप से उपभोग व्यय (household consumption) को बनाए रखता है और वायर ट्रांसफर या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से होता है।

◦ अनिवासी भारतीय (NRI) जमाओं से स्थानीय निकासी/भुगतान: लगभग 43% हिस्सा इस श्रेणी से आता है। यह पूंजी प्रवाह नहीं बल्कि पूंजीगत आहरण होता है।

◦ व्यक्तिगत उपहार/दान: लगभग 6% हिस्सा व्यक्तिगत उपहार या धर्मार्थ/धार्मिक संस्थानों को दान के रूप में जाता है।

3. घरेलू बनाम कुल प्रेषण: राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO) का 64वाँ दौर (2007-08) 'परिवार प्रेषण' (household remittances) को ₹16,700 करोड़ (लगभग $4 बिलियन) के रूप में आंकता है। यह आंकड़ा RBI के कुल 'निजी हस्तांतरण' (लगभग $43.5 बिलियन) या RBI के 'पारिवारिक भरण-पोषण' भाग (लगभग $9 बिलियन) से काफी कम है।

1.2.2 NSS डेटा में पूर्वाग्रह (Bias in NSS Data)

NSSO के परिवार प्रेषण अनुमान 30% तक नीचे की ओर पूर्वाग्रहित (downward biased) माने जाते हैं। इस पूर्वाग्रह के कई कारण हैं:

1. घरेलू संख्या का कम आकलन: NSS, भारत के कुल परिवारों की संख्या का कम आकलन करता है (114 करोड़ की अनुमानित आबादी के बजाय 101 करोड़ आबादी पर 22.254 करोड़ परिवार)।

2. प्रेषण प्राप्त करने वाले परिवारों का कम अनुपात: NSS डेटा में प्रेषण प्राप्त करने वाले परिवारों का अनुपात केरल प्रवास सर्वेक्षण (KMS) की तुलना में लगभग 20% कम पाया गया।

3. संपूर्ण-परिवार प्रवासन का बहिष्करण: स्रोत क्षेत्र सर्वेक्षण संपूर्ण-परिवार प्रवासन (entire-household migration) को छोड़ देते हैं। NSS रिपोर्ट में भारत के बाहर रहने वाले भारतीयों की संख्या 44.4 लाख अनुमानित की गई है, जबकि अन्य अनुमान (World Bank, MOIA) 80 लाख से 1 करोड़ तक हैं।

1.2.3 अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण की उत्पत्ति

RBI (2006) के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण प्रवाह के प्रमुख स्रोत हैं: मध्य पूर्वी क्षेत्र (35%), उत्तरी अमेरिका (35%), और यूरोप (20%)। इस विविध गंतव्य संरचना के कारण ही भारत का प्रेषण प्रवाह बाहरी आर्थिक संकटों के प्रति लचीला बना रहता है।

1.3 राज्य-स्तरीय निर्भरता और संकेंद्रण (State-Level Dependency and Concentration)

भारत की अर्थव्यवस्था समग्र रूप से अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण पर निर्भर नहीं मानी जाती है, लेकिन कुछ राज्यों में अत्यधिक संकेंद्रण और निर्भरता है।

1.3.1 शीर्ष प्राप्तकर्ता और निर्भरता अनुपात

1. परिवार प्रेषण में हिस्सेदारी: NSS परिवार प्रेषण डेटा के अनुसार, केरल की हिस्सेदारी लगभग 39.9% थी। पंजाब (12.7%) और तमिलनाडु (12.4%) भी प्रमुख प्राप्तकर्ता थे।

2. निर्भरता का मापन (प्रेषण/सकल घरेलू उत्पाद): कुल अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण (RBI $43.5 बिलियन) को

GDP के अनुपात के रूप में देखने पर, केरल (30.9%), गोवा (20.8%), और पंजाब (11.4%) अत्यधिक निर्भर राज्य थे। इन राज्यों को विश्व की शीर्ष प्रेषण-निर्भर अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है।

3. NRI जमाओं का संकेंद्रण: महाराष्ट्र (26.8%) में सभी विदेशी जमाओं का लगभग एक चौथाई हिस्सा जमा होता है। मुंबई (महाराष्ट्र) भारत का वित्तीय केंद्र होने के कारण वित्तीय निवेशों के लिए भारी मात्रा में धन आकर्षित करता है, जो मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में केंद्रित है, जबकि केरल और पंजाब के प्रेषण ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक जाते हैं।

1.3.2 ग्रामीण-शहरी प्रभाव

1. ग्रामीण-शहरी खाई को पाटना: केरल और पंजाब में प्रेषण का अधिकांश भाग ग्रामीण परिवारों को प्राप्त होता है (केरल और पंजाब में तीन-चौथाई से अधिक)। प्रेषणों के इस भारी प्रवाह ने इन राज्यों में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच उपभोग व्यय की खाई को पाटने में मदद की, जहाँ ग्रामीण उपभोग व्यय अखिल भारतीय औसत (73%) की तुलना में कम भिन्न था।

1.4 घरेलू प्रेषण: आयतन, उपयोग और समावेशन

अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण के विपरीत, भारत में आंतरिक प्रवासन (Internal Migration) के कारण होने वाले घरेलू प्रेषण के संबंध में डेटा की कमी रही है।

1.4.1 घरेलू प्रेषण का आयतन और वितरण

1. आयतन: 2007-08 में घरेलू 'परिवार' प्रेषण का अनुमान ₹32,500 करोड़ (लगभग 10 बिलियन) के दायरे में था।

2. ग्रामीण गंतव्य: लगभग 80% घरेलू प्रेषण ग्रामीण क्षेत्रों में गए।

3. राज्य-स्तरीय वितरण और निर्भरता:

- सर्वाधिक प्राप्तकर्ता: उत्तर प्रदेश (20%) और बिहार (12%) शीर्ष घरेलू प्रेषण प्राप्तकर्ता राज्य थे।

- निर्भरता: घरेलू प्रेषण/GDP अनुपात बिहार में लगभग 5% था, जो इस राज्य की घरेलू प्रेषण पर उच्च निर्भरता को दर्शाता है।

4. अंतर-राज्य बनाम अंतर-राज्य हस्तांतरण: अखिल भारतीय स्तर पर, 60% घरेलू प्रेषण अंतर-राज्य हस्तांतरण (Inter-State transfers) थे, जो इन राज्यों से पर्याप्त बहिर्प्रवासन को दर्शाते हैं। शेष 40% अंतर-राज्य हस्तांतरण थे।

1.4.2 प्रेषण का उपयोग और क्षेत्रीय भिन्नताएँ

1. प्राथमिक उपयोग: अखिल भारतीय स्तर पर, 90% से अधिक प्रेषण प्राप्त करने वाले परिवार इसका उपयोग उपभोग व्यय (household consumption expenditure) के लिए करते थे, जो उनके घरेलू उपभोग व्यय का एक तिहाई तक वित्तपोषित करता था।

2. क्षेत्रीय भिन्नताएँ:

- ऋण चुकौती: केरल और तमिलनाडु में, प्रवासियों के ऋण चुकौती (debt repayment) के लिए

प्रेषण का उपयोग करने की अधिक रिपोर्टें थीं, संभवतः इसलिए क्योंकि खाड़ी देशों में प्रवास की उच्च लेनदेन लागत को दूर करने के लिए ऋण लिया जाता था।

◦ आवास और समारोह: ओडिशा में आवास में सुधार और विवाह तथा समारोहों पर प्रेषण का उपयोग करने की उच्च रिपोर्टें थीं।

◦ शिक्षा: पूर्वोत्तर राज्यों (जैसे अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम) और जम्मू-कश्मीर में प्रेषण का एक बड़ा हिस्सा शिक्षा पर खर्च किया जाता था (55% से अधिक परिवार रिपोर्ट करते हैं)।

1.4.3 वित्तीय समावेशन की चुनौतियाँ

1. अनौपचारिक बाज़ार पर प्रभुत्व: औपचारिक क्षेत्र (बैंक और डाकघर) घरेलू प्रेषण बाज़ार के 30% से भी कम हिस्से को संभालता है। इसकी तुलना में, चीन में औपचारिक क्षेत्र 75% प्रेषण बाज़ार को संभालता है।

2. प्रमुख औपचारिक माध्यम: डाकघर मनी ऑर्डर एक लोकप्रिय औपचारिक साधन रहा है, लेकिन इसकी सेवा शुल्क लगभग 5% है। 2007-08 में डाकघर ने ₹8,363 करोड़ के मनी ऑर्डर संभाले।

3. अनौपचारिक माध्यमों पर निर्भरता: अधिकांश घरेलू प्रेषण अभी भी अनौपचारिक माध्यमों (informal channels) से आते हैं, जैसे दोस्तों और रिश्तेदारों के माध्यम से जो घर लौट रहे हैं। यह माध्यम चोरी के जोखिम, कम आवृत्ति और समय पर डिलीवरी की कमी जैसे नुकसानों के साथ आता है, जबकि प्रवासियों के लिए 'समय पर डिलीवरी' सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

4. वित्तीय समाधान की आवश्यकता: अप्रशिक्षित प्रवासी आबादी के लिए सस्ते और सुलभ प्रेषण सेवाओं की तत्काल आवश्यकता है। बेहतर पहचान और मोबाइल बैंकिंग जैसी तकनीकों के माध्यम से वित्तीय समावेशन बढ़ाया जा सकता है, विशेष रूप से ऐसे लोगों के लिए जिनके पास बैंक खाता नहीं है या जो इंटरनेट का उपयोग नहीं करते हैं।

1.5 प्रेषण से परे: डायस्पोरा का व्यापक आर्थिक और बौद्धिक योगदान

प्रेषण के प्रत्यक्ष मौद्रिक लाभों से परे, भारतीय डायस्पोरा ने भारत के आर्थिक और कूटनीतिक विकास में कई अन्य महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं, जिससे वे रणनीतिक संपत्ति (strategic asset) बन गए हैं।

1.5.1 बौद्धिक पूंजी और ब्रेन सर्कुलेशन

1. ब्रेन ड्रेन से ब्रेन सर्कुलेशन: उच्च-कुशल प्रवासियों (इंजीनियरों, डॉक्टरों, आईटी पेशेवरों) का प्रवास 'ब्रेन ड्रेन' (Brain Drain) की पारंपरिक धारणा को 'ब्रेन सर्कुलेशन' (Brain Circulation) के विचार से प्रतिस्थापित करता है। यह प्रवासी नृजातीय पारराष्ट्रीय मध्य वर्ग (Ethnic Transnational Middle Class - ETMC) का निर्माण करते हैं।

2. बौद्धिक कूटनीति: भारतीय मूल के विशेषज्ञ वैश्विक विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों और बहुराष्ट्रीय निगमों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे 'बौद्धिक कूटनीति' (Intellectual Diplomacy) को बढ़ावा मिलता है।

3. तकनीकी और उद्यमशीलता का योगदान: डायस्पोरा नवाचार, तकनीकी निवेश, स्टार्टअप पारिस्थितिकी

तंत्र और कौशल विकास के माध्यम से भारत की आर्थिक संरचना को मज़बूत कर रहा है। प्रवासी भारतीय आईटी कार्यकर्ता तेजी से पारराष्ट्रीय उद्यमी (transnational entrepreneurs) बन गए हैं। उदाहरण के लिए, 2000 ईस्वी में कैलिफ़ोर्निया में 7,000 से अधिक उच्च-तकनीकी कंपनियाँ भारतीयों द्वारा चलाई जा रही थीं, जो भारत में अपने नेटवर्क पर निर्भर थीं।

1.5.2 निवेश और पूंजी का प्रवाह

1. सरकारी प्रोत्साहन: राजीव गांधी (1980 के दशक) और वाजपेयी सरकारों ने NRI निवेशकों के लिए अनुकूल दरें और विदेशी मुद्रा जमा के लिए रियायतें प्रदान कीं। उदारीकरण के बाद, NRI को भारतीय कंपनियों में बहुमत हिस्सेदारी हासिल करने, नए औद्योगिक उद्यम स्थापित करने, और भारत विकास बॉन्ड (India Development Bonds) में निवेश करने की अनुमति दी गई।

2. वैश्विक पूंजी को सुगम बनाना: ETMC वैश्विक और स्थानीय के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है, और वैश्विक पूँजी को विकासशील दुनिया में प्रवेश करने में मदद करता है। प्रवासी भारतीयों का सामूहिकवाद (collectivism) उनकी आर्थिक रणनीतियों में सफलता की कुंजी है, जिसमें संसाधनों का साझाकरण और पूंजी का निवेश शामिल है।

1.5.3 मानव और सामाजिक लागत

ETMC का यह आर्थिक मॉडल, जिसे 'भारतीय प्रणाली' कहा जाता है, उच्च मानवीय लागतों के साथ आता है।

1. घरेलू हिंसा और निर्भरता: यू.एस. में H-1B वीज़ा धारकों की पत्नियाँ (H-4 वीज़ा धारक) काम करने की अनुमति नहीं होने के कारण अपने पतियों पर पूरी तरह से निर्भर होती हैं। इस निर्भरता के कारण घरेलू हिंसा की उच्च घटनाएँ रिपोर्ट की गई हैं।

2. संसाधनों का हस्तांतरण: भारत में, विशेष रूप से आंध्र प्रदेश में, दहेज (dowry) की संस्था का उपयोग आईटी प्रशिक्षण और उत्प्रवास को वित्तपोषित करने के लिए किया जाता है, जो 'संगठित क्षेत्र को असंगठित क्षेत्र से, ग्रामीण से शहरी, और स्थानीय से वैश्विक तक अधिशेष मूल्य का प्रत्यक्ष हस्तांतरण है। अमेरिका-आधारित दूल्हे के लिए दहेज की दर ऑस्ट्रेलिया-आधारित दूल्हे की तुलना में दोगुनी थी।

2. भारतीय राजनीति और विदेश नीति में डायस्पोरा की भागीदारी

भारतीय प्रवासन की प्रक्रिया और डायस्पोरा (प्रवासी) समूहों का उदय भारत की राजनीतिक अर्थव्यवस्था और विदेश नीति का एक अभिन्न अंग बन चुका है। डायस्पोरा समूहों को आज भारत के लिए एक रणनीतिक, आर्थिक, बौद्धिक, और कूटनीतिक संपत्ति (strategic, economic, intellectual, and diplomatic asset) के रूप में देखा जाता है। पारंपरिक सरकार-से-सरकार संबंधों, द्विपक्षीय वार्ताओं, या बहुपक्षीय मंचों से दूर हटकर, भारत ने अब डायस्पोरा के साथ जुड़ने के लिए एक व्यापक, बहुस्तरीय, और समाज-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया है।

2.1 ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: राष्ट्रवादी संघर्ष और नेहरूवादी उदासीनता

भारतीय प्रवासन के शुरुआती काल से ही डायस्पोरा ने भारत के राष्ट्रवादी संघर्ष और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित किया है, हालाँकि स्वतंत्रता के बाद भारत की नीति में एक बड़ा बदलाव आया।

2.1.1 गिरमिटिया संघर्ष और राष्ट्रवादी नेताओं की भूमिका

औपनिवेशिक काल के दौरान, गिरमिटिया श्रमिक चाहे वेस्ट इंडीज, मॉरीशस, बर्मा, फिजी, सीलोन या मलाया भेजे गए हों, उन्हें जहाँ भी वे थे, वहाँ शोषण (oppression) का सामना करना पड़ा। भारतीय राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने इन उत्प्रवासियों के कारण को उठाया। गोपाल कृष्ण गोखले और सी.एफ. एंड्रयूज जैसे राष्ट्रवादी नेताओं ने उत्प्रवासियों की दुर्दशा पर ध्यान केंद्रित किया और आरोपों की जाँच के लिए एक आयोग नियुक्त करने हेतु सरकार पर दबाव डालने में सफल रहे। वास्तव में, जाने-माने राष्ट्रवादी नेता गोपाल कृष्ण गोखले ने स्वयं दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया। उन्होंने भारतीय उत्प्रवासियों की दयनीय स्थिति को उठाया, जिसने अंततः ब्रिटिश भारतीय सरकार को 1911 में नेटाल में गिरमिटिया श्रमिकों के उत्प्रवास पर प्रतिबंध लगाने के लिए मजबूर किया।

इस अवधि के दौरान गांधी, जो दक्षिण अफ्रीकी भारतीय संघर्ष का नेतृत्व कर रहे थे, ने दो बार भारत का दौरा किया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, चैंबर्स ऑफ कॉमर्स तथा अन्य संगठनों की संयुक्त बैठक को संबोधित किया ताकि भारतीयों का ध्यान इन समस्याओं की ओर आकर्षित किया जा सके। पट्टाभि सीतारमैया, जो तब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे, ने सार्वजनिक रूप से इस बात को स्वीकार किया था कि विदेशों में भारतीयों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

2.1.2 स्वतंत्रता के बाद की नीति: नेहरू का दृष्टिकोण

स्वतंत्रता के बाद, भारत के पहले प्रधानमंत्री, जवाहरलाल नेहरू, ने विदेशों में रहने वाले भारतीयों के प्रति एक सतर्क रुख अपनाया। उन्होंने उत्प्रवासी भारतीयों को सलाह दी कि वे अपने निवास के देश की राष्ट्रीयता (nationality) को अपनाएँ। यदि उन्होंने ऐसा करने का विकल्प चुना, तो वे विदेश में केवल 'सर्वाधिक अनुकूल विदेशी व्यवहार' (most favoured alien treatment) का ही दावा कर सकते थे। नेहरू ने आगे कहा कि भारत यह कतई नहीं चाहेगा कि कोई भी देश भारतीय नागरिकों के साथ बुरा व्यवहार करे या उन्हें दूसरों की तुलना में निम्न स्थान दे। नेहरू का यह दृष्टिकोण विदेशों में भारतीयों के साथ जुड़ाव की कमी को दर्शाता था, लेकिन बाद के दशकों में यह नीति बदल गई।

2.2 नीतिगत बदलाव: डायस्पोरा को एक रणनीतिक संपत्ति के रूप में मान्यता

1980 के दशक से भारतीय डायस्पोरा के प्रति भारत के दृष्टिकोण में एक मौलिक परिवर्तन आया, जहाँ उन्हें एक मूल्यवान कूटनीतिक और आर्थिक संपत्ति के रूप में देखा जाने लगा।

2.2.1 राजीव गांधी युग और आर्थिक उदारीकरण

1980 के दशक में राजीव गांधी के प्रधानमंत्री बनने के साथ ही भारतीय दृष्टिकोण में बदलाव आया। उन्होंने भारत की आर्थिक और विदेश नीति को एक नया आयाम दिया। 1985 में संयुक्त राज्य अमेरिका की उनकी पहली यात्रा ने भारतीय अमेरिकी डायस्पोरा को दोनों देशों के बीच एक संभावित मूल्यवान सेतु (potential valuable bridge) के रूप में पहचानने की शुरुआत को चिह्नित किया। तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने एक राजकीय रात्रिभोज में कहा था कि शायद भारत का सबसे कीमती उपहार कई भारतीय हैं जो अमेरिका के गर्वित नागरिक बन गए हैं, और वे दोनों देशों के बीच मानवीय बंधन का प्रतीक हैं।

भारतीय आर्थिक नीति के उदारीकरण ने डायस्पोरा निवेशकों के लिए पहली बार रास्ते खोले। उन्हें भारतीय कंपनियों में बहुमत की हिस्सेदारी (majority share holding) हासिल करने की अनुमति दी गई। इस

सुधार के तहत अनिवासी भारतीयों (Non-Resident Indians - NRIs) के लिए कई रियायतें और प्रोत्साहन शामिल थे:

1. निवेश के अवसर: वे भारतीय उद्योगों में निवेश कर सकते थे, नए औद्योगिक उद्यम स्थापित कर सकते थे, या भारतीय बैंकों में अपनी विदेशी मुद्रा जमा कर सकते थे।

2. उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में निवेश: 34 उच्च प्राथमिकता वाले उद्योगों में 100 प्रतिशत निवेश की अनुमति दी गई।

3. वित्तीय उत्पाद: इंडिया डेवलपमेंट बॉन्ड (India Development Bonds) में निवेश।

4. प्रशासनिक सुधार: अनिवासी भारतीयों के लिए एक मुख्य आयुक्त (Chief Commissioner) की स्थापना और विभिन्न मुद्दों पर विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम (FERA) से छूट।

इन लाभों ने डायस्पोरा के अपने मातृभूमि (native land) के साथ बंधन को और मजबूत किया।

2.2.2 वाजपेयी सरकार और संस्थागत जुड़ाव

बीजेपी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के सत्ता में आने से डायस्पोरा के प्रति भारत की नीति में मौलिक बदलाव आया। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने डायस्पोरा के महत्व को स्वीकार किया और उनके लिए अधिक सार्थक भूमिका (more meaningful role) की तलाश कर रही थी।

इस पृष्ठभूमि में, भारत सरकार ने सितंबर 2000 में एल.एम. सिंघवी (सांसद, राज्यसभा) की अध्यक्षता में भारतीय डायस्पोरा पर एक उच्च स्तरीय समिति (High Level Committee - HLC) का गठन किया। इस समिति को अनिवासी भारतीयों (NRIs) और भारतीय मूल के व्यक्तियों (PIOs) से संबंधित मुद्दों, उनकी उपलब्धियों, समस्याओं और उनकी मातृदेश से अपेक्षाओं पर एक व्यापक रिपोर्ट तैयार करने का काम सौंपा गया था।

सिंघवी समिति ने निम्नलिखित प्रमुख सिफारिशें कीं:

1. भारतीय मूल के व्यक्तियों के कार्ड (PIO Card): ऐसी योजना की शुरुआत जिससे भारतीय मूल के व्यक्तियों के लिए वीज़ा मुक्त व्यवस्था (visa free regime) सुगम हो सके।

2. प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार: विदेशों में भारतीयों की उपलब्धियों और योगदानों को पहचानने के लिए ये पुरस्कार स्थापित किए गए।

3. प्रवासी भारतीय दिवस (PBD): 9 जनवरी को महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष प्रवासी भारतीय दिवस मनाने का सुझाव दिया गया। पहला समारोह 2003 में आयोजित किया गया था।

2.2.3 प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय का गठन

2004 में मनमोहन सिंह सरकार के सत्ता में आने पर, डायस्पोरा के साथ जुड़ने की प्रक्रिया को और औपचारिक रूप दिया गया। सरकार ने प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय (Ministry of Overseas Indian Affairs) नामक एक अलग मंत्रालय का गठन किया। इस मंत्रालय का उद्देश्य विभिन्न कार्यक्रमों, जिसमें प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन जारी रखना भी शामिल था, के माध्यम से भारतीय डायस्पोरा के साथ

भागीदारी स्थापित करना था।

2.3 कूटनीतिक प्रभाव और राजनीतिक पैरवी

डायस्पोरा आज भारत की विदेश नीति को प्रभावित करने वाले एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है, विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे प्रभावशाली देशों में।

2.3.1 अमेरिकी विदेश नीति पर डायस्पोरा का प्रभाव

1990 के दशक की शुरुआत से ही भारतीय अमेरिकी डायस्पोरा ने अमेरिकी विदेश नीति को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। यह प्रभाव दो प्रमुख कारकों के कारण बढ़ा:

1. भारत की आर्थिक आत्मविश्वास में वृद्धि: 1990 के दशक में नीतिगत परिवर्तनों और डायस्पोरा की सफलता, विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका में, ने भारत के आत्मविश्वास को बढ़ाया।

2. पारराष्ट्रीय नेटवर्क का विकास: डायस्पोरा समूह ने भारत और मेज़बान देशों के बीच पुल बनाने का कार्य किया।

परमाणु प्रतिबंधों में नरमी: 1998 के परमाणु परीक्षण के बाद भारत पर लगाए गए प्रतिबंधों को कम करने में भारतीय अमेरिकी समुदाय सहायक था।

आतंकवाद पर रुख: 2001 में भारतीय संसद पर आतंकवादी हमले के बाद, भारतीय डायस्पोरा ने अमेरिकी दृष्टिकोण को प्रभावित करने में भी इसी तरह की भूमिका निभाई। यूएस इंडिया पॉलिटिकल एक्शन कमेटी (USINPAC) ने अमेरिकी सांसदों पर पाकिस्तान को सहायता देने वाले कानून में संशोधन करने के लिए दबाव डाला।

उच्च प्रौद्योगिकी हस्तांतरण (High Technology Transfers): 1990 के दशक के मध्य में, भारत सरकार संयुक्त राज्य अमेरिका से उच्च प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए प्रयास कर रही थी, लेकिन 1998 के परमाणु परीक्षण के कारण अमेरिकी सरकार सहमत नहीं थी। भारतीय अमेरिकी डायस्पोरा के सदस्य, विशेष रूप से प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों और व्यापारियों के एक समूह ने अमेरिकी वाणिज्य विभाग से संपर्क किया और भारतीय सरकार के साथ बातचीत करने के लिए उन्हें प्रभावित किया। इसके परिणामस्वरूप सितंबर 2004 में संयुक्त वक्तव्य, "नेक्स्ट स्टेप्स इन स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप" (NSSP) जारी हुआ।

2.3.2 यू.एस.-भारत नागरिक परमाणु समझौता

यू.एस.-भारत नागरिक परमाणु समझौता भारतीय डायस्पोरा द्वारा निभाई गई मध्यस्थ भूमिका (intermediary role) का एक बहुत अच्छा उदाहरण है। इस समझौते को अमेरिकी विदेश नीति प्रतिष्ठान के कई सदस्यों के भारी विरोध के बावजूद पारित किया गया।

यह समझौता भारतीय अमेरिकी लॉबी की शक्ति को दर्शाता है। राष्ट्रपति बराक ओबामा, जो तब सीनेट विदेश संबंध समिति के सदस्य थे, ने मतदान से पहले टिप्पणी की थी कि उन्हें इस समझौते के समर्थन में "हर भारतीय-अमेरिकी व्यक्ति" द्वारा संपर्क किया जा रहा है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि भारतीय डायस्पोरा द्वारा गहन पैरवी (lobbying) की गई थी।

आर्थिक प्रभाव: लगभग 50 बड़ी सेवा-उन्मुख अमेरिकी कंपनियाँ, जहाँ भारतीय अमेरिकी मुख्य कार्यकारी

अधिकारी (chief executive officer), मुख्य वित्तीय अधिकारी (chief financial officer) या मुख्य सूचना अधिकारी (chief information officer) के रूप में कार्यरत थे, अपनी संबंधित कंपनियों को भारत में निवेश करने के लिए राजी करने में सक्षम थे। इस कारण डायस्पोरा की गतिविधियाँ और प्रभाव निजी क्षेत्र में बढ़ा, जिससे दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए एक बड़ी और अधिक शक्तिशाली अमेरिकी व्यापारिक समुदाय को पैरवी बल के रूप में कार्य करने की अनुमति मिली।

2.3.3 मेज़बान देश की नीतियों का अंतर: पैरवी पर प्रभाव

मेज़बान देश की अनुकूलन नीतियाँ (acculturation policies) डायस्पोरा के राजनीतिक जुड़ाव के परिणामों को प्रभावित करती हैं।

• संयुक्त राज्य अमेरिका (आत्मसात्करण/पिघलता बर्तन): संयुक्त राज्य अमेरिका में, जो एक पिघलते बर्तन (melting pot) वाला समाज माना जाता है, भारतीय अमेरिकी समुदाय द्वारा मातृदेश के लिए पैरवी के प्रयास (lobbying efforts for the home country) इंडो-कनाडाई लोगों की तुलना में बहुत अधिक मजबूत हैं।

• कनाडा (बहुसंस्कृतिवाद): कनाडा में बहुसंस्कृतिवाद (multiculturalism) की नीति है, जो सांस्कृतिक संवाद और सहिष्णुता को बढ़ावा देती है। यहाँ इंडो-कनाडाई समुदाय में राजनीतिक भागीदारी अधिक है, और वे तीनों प्रमुख राष्ट्रीय पार्टियों के लिए चुने जाते हैं, लेकिन मातृभूमि के लिए पैरवी के मामले में उनका प्रभाव भारतीय अमेरिकियों से कम है। इसका कारण आंशिक रूप से यह है कि भारत सरकार अधिक प्रभावशाली और बड़े देश (यू.एस.) में अपने डायस्पोरा को विकसित करने के लिए अधिक प्रयास करेगी।

2.4 डायस्पोरा की नरम शक्ति (Soft Power) और सांस्कृतिक प्रभाव

डायस्पोरा भारत की सभ्यतागत भावना (civilizational ethos) को मूर्त रूप देता है और वैश्विक स्तर पर भारत के आर्थिक, बौद्धिक, और रणनीतिक हितों का प्रतिनिधित्व करता है। यह भारत की नरम शक्ति (Soft Power) का सबसे बड़ा साधन है।

2.4.1 नरम शक्ति के घटक

1. सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व: संस्कृति, मूल्य और भाषा (जैसे हिंदी, तमिल, मलयालम, और गुजराती) के माध्यम से प्रवासी समूह भारत की लोकतांत्रिक छवि का निर्माण करते हैं,।

2. शैक्षणिक और बौद्धिक योगदान: व्यापार गुरुओं से लेकर धार्मिक गुरुओं तक, बौद्ध धर्म से लेकर योग तक, शास्त्रीय संगीत से लेकर सौंदर्य प्रतियोगिताओं तक, शिक्षाविदों से लेकर व्यंजनों तक—भारतीय नरम शक्ति की भरमार है।

3. सिनेमा का प्रभाव: बॉलीवुड से लेकर भांगड़ा तक, डायस्पोरा ने सांस्कृतिक प्रभाव को बढ़ाया है।

4. पहचान का पुनर्परिभाषा: डायस्पोरा मीडिया और साहित्य न केवल भारतीय विश्वदृष्टि को प्रस्तुत करते हैं, बल्कि आधुनिक संदर्भों में भारतीय पहचान को पुनर्परिभाषित करने वाले विमर्शों को भी आकार देते हैं।

2.4.2 भारत की वैश्विक पहुँच के सह-निर्माता

प्रोफेसर अनिल सुकलाल (दक्षिण अफ्रीका में भारत के उच्चायुक्त) ने कहा है कि गिरमिटिया (Girmitiyas) सिर्फ भारत के अतीत का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि उसकी वर्तमान नीतिगत रूपरेखा में सक्रिय एजेंट (active agents) हैं। गांधी का दक्षिण अफ्रीका में डायस्पोरा सदस्य के रूप में अनुभव विशेष रूप से उल्लेखनीय है। डायस्पोरा भारत की 'लुक ईस्ट,' 'एक्ट वेस्ट,' और 'इंडो-अफ्रीका' रणनीतियों में भागीदारी करके अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी को मजबूत कर रहा है। इस प्रकार, डायस्पोरा भारत की वैश्विक दृष्टि के सह-निर्माता (co-creators of India's global vision) हैं।

2.5 विभाजनकारी भूमिका और सुरक्षा चुनौतियाँ

डायस्पोरा की भागीदारी हमेशा सकारात्मक नहीं रही है; यह दूरस्थ राष्ट्रवाद (Long-distance Nationalism) और कट्टरपंथ को बढ़ावा देने में भी सहायक रहा है।

2.5.1 दूरस्थ राष्ट्रवाद और अलगाववाद

डायस्पोरा समूह दूरस्थ राष्ट्रवाद में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, जिससे अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में संबंधों का राजनीतिकरण होता है।

1. खालिस्तान आंदोलन: पंजाब उग्रवाद को कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में बसे सिख डायस्पोरा द्वारा भारी समर्थन मिला था। उन्होंने धन और जनशक्ति के साथ खालिस्तान आंदोलन का समर्थन किया। 1985 में एयर इंडिया की बमबारी, जिसमें 329 लोग मारे गए थे, ने भारत-कनाडा संबंधों पर 'एक काला धब्बा' डाल दिया था। कनाडा के प्रधान मंत्री की 2018 की यात्रा के दौरान भी भारत सरकार ने उन्हें snubbed किया था क्योंकि उनकी सरकार में कुछ मंत्री खालिस्तान समर्थक थे।

2. नृजातीय संचेतना का राजनीतिकरण: स्टुअर्ट हॉल जैसे सिद्धांतकारों ने डायस्पोरा की पहचान को आवश्यक विषमता के रूप में परिभाषित किया है, लेकिन यह नृजातीय संचेतना मेज़बान समाज में संघर्ष और बातचीत की प्रक्रिया में बनती है।

3. जातीय संघर्षों का समर्थन: डायस्पोरा का एक बड़ा हिस्सा धार्मिक पहचान और वित्त के एक जटिल नेटवर्क के माध्यम से हिंदू कट्टरपंथ से जुड़ा हुआ है। विश्व हिंदू परिषद (VHP) और भारतीय जनता पार्टी (BJP) जैसे दक्षिणपंथी धार्मिक संगठनों को अक्सर प्रवासी आबादी से भारी समर्थन प्राप्त होता है। यह आरोप लगाया गया है कि 1980 और 1990 के दशक में हिंदू राष्ट्रवाद को पश्चिमी देशों में बसे भारतीय डायस्पोरा से समर्थन मिला।

4. विभाजनकारी वित्तपोषण: यह भी आरोप लगाया गया है कि 2002 में गुजरात में हुए मुस्लिम विरोधी हिंसा को आरएसएस के समर्थकों द्वारा डायस्पोरा परोपकार (diaspora philanthropy) के माध्यम से वित्तपोषित किया गया था।

2.5.2 मातृभूमि के संघर्ष का डायस्पोरा पर प्रभाव

मेज़बान समाजों में नस्लवाद, विदेशी द्वेष और धार्मिक कट्टरता की प्रति-शक्तियाँ बढ़ रही हैं।

1. बाबरी मस्जिद विवाद: दिसंबर 1992 में अयोध्या में बाबरी मस्जिद के विध्वंस के आसपास एक

त्रिपक्षीय संबंध (triadic relationship) उभरा। इस घटना से पहले, यूके में हिंदू संगठनों (विशेषकर VHP से जुड़े) द्वारा मस्जिद को हटाने और मंदिर बनाने के लिए ज़ोरदार अभियान चलाया गया था। मस्जिद के विध्वंस के बाद, यूके में कई हिंदू मंदिरों और सांस्कृतिक केंद्रों को क्षति पहुँचाई गई, जिससे डायस्पोरा के भीतर सांप्रदायिक ध्रुवीकरण हुआ। यह दर्शाता है कि मातृभूमि में होने वाली घटनाएँ तुरंत पारराष्ट्रीय मीडिया के माध्यम से प्रसारित होकर डायस्पोरा को प्रभावित करती हैं।

3. निष्कर्ष

भारतीय डायस्पोरा का आर्थिक योगदान और प्रेषण प्रणाली एक बहुमुखी सिंचाई प्रणाली के समान है। जहाँ अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण बड़ी मुख्य नदियों की तरह हैं जो राष्ट्रीय खजाने (विदेशी मुद्रा भंडार) और कुछ विशेष राज्यों (केरल, पंजाब) की ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को स्थिर रूप से सिंचित करते हैं, वहीं घरेलू प्रेषण उन छोटी नहरों की तरह हैं जो विशाल गंगा-यमुना मैदान (उत्तर प्रदेश, बिहार) की स्थानीय और वंचित ग्रामीण आबादी के उपभोग और दैनिक निर्वाह को वित्तपोषित करती हैं। हालाँकि, यदि वितरण प्रणाली (वित्तीय समावेशन) पुरानी और अनौपचारिक हो, तो सिंचाई का पानी असमान रूप से वितरित होता है, जिससे आर्थिक असमानता की दरारें और चौड़ी हो सकती हैं।

डायस्पोरा की भागीदारी आज भारत की विदेश नीति का केंद्रीय तत्व है। राजीव गांधी के तहत नीतिगत परिवर्तन और वाजपेयी सरकार द्वारा संस्थागत पहचान (पीआईओ कार्ड, प्रवासी भारतीय दिवस) ने डायस्पोरा को रणनीतिक संपत्ति में बदल दिया,। डायस्पोरा ने न केवल अंतर्राष्ट्रीय प्रेषण और निवेश के माध्यम से भारत की अर्थव्यवस्था को मज़बूत किया है, बल्कि पैरवी, बौद्धिक पूंजी और नरम शक्ति के माध्यम से भारत के वैश्विक हितों को भी आगे बढ़ाया है,। हालाँकि, दूरस्थ राष्ट्रवाद और कट्टरता के वित्तपोषण जैसी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा है। भारत की विदेश नीति डायस्पोरा को भारत की सभ्यतागत भावना को मूर्त रूप देने वाले और वैश्विक मंच पर भारत के सह-निर्माता के रूप में देखती है,।

भारतीय राजनीति और विदेश नीति में डायस्पोरा की भागीदारी एक वैश्विक संचार उपग्रह की तरह है। यह भारत की संस्कृति, मूल्यों और आर्थिक हितों के संकेतों को दुनिया भर में प्रसारित करता है (नरम शक्ति और पैरवी),। लेकिन साथ ही, यह मातृभूमि के राजनीतिक विभाजनों (जैसे खालिस्तान या सांप्रदायिक कट्टरता) की आवाज़ों को भी प्रवर्धित करता है, जिससे सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के दूरगामी प्रभाव पड़ते हैं, और भारत की घरेलू राजनीति का वैश्वीकरण हो जाता है,।

SUGGESTED READING

- Khadria, Binod. (1999). The Migration of Knowledge Workers: Second-generation Effects of India's Brain Drain. New Delhi: Sage.
- Shain, Yossi, and Aharon Barth. (2003). "Diasporas and International Relations Theory." International Organization, 57(3), pp. 449–479.
- Kapur, Devesh. (2014). Diaspora, Development, and Democracy: The Domestic Impact of International Migration from India. Princeton University Press
- Parekh, Bhikhu, Gurhapal Singh and Steven Vertovec (eds.). 2003. Culture and Economy in the Indian Diaspora. London: Routledge. [Introduction]

भारतीय प्रवासी समुदायों के समक्ष चुनौतियाँ

1. परिचय

डायस्पोरा समुदायों का अस्तित्व तथा भौगोलिक प्रसार, सांस्कृतिक अनुकूलन और उनके पहचान के निरंतर निर्माण की एक जटिल कहानी है। भारतीय डायस्पोरा, अपने विशाल आकार एवं ऐतिहासिकता के कारण, मेज़बान समाजों में अनेक वैधानिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना करता रहा है।

सैद्धांतिक रूप से, डायस्पोरा प्रवासन को अनेक समूहों के मिश्रण के रूप में देखा जाता है| उदारण स्वरूप इसमें राजनीतिक शरणार्थी, अतिथि श्रमिक, अप्रवासी, निष्कासित व्यक्ति और विदेशी समुदायों के लोग है। ये समूह एक सामूहिक पहचान का निर्माण करते हैं जो प्रवासन के इतिहास, मातृभूमि के मिथकों, स्मृतियों, मेज़बान देश में अलगाव की भावना, तथा अंततः वापसी की इच्छा (जो अस्पष्ट या काल्पनिक हो सकती है) जैसे तत्वों से परिभाषित होता है। डायस्पोरा के लोग अपनी पिछली संस्कृति और विशेष रूप से मातृभूमि के प्रति एक निरंतर या पुनः जागृत लगाव और निष्ठा बनाए रखते हैं, जो उन्हें अन्य प्रकार के प्रवासियों से अलग करता है। यह लगाव मेज़बान समाज में उनके एकीकरण में तभी बाधा नहीं डालता जब मेज़बान समाज प्रतिस्पर्धी निष्ठाओं (competing loyalties) को स्वीकार करता हो।

भारतीय डायस्पोरा के समक्ष चुनौतियाँ मुख्य रूप से तीन प्रमुख घटकों, मातृभूमि (homeland), डायस्पोरा समूह (diaspora group), और मेज़बान समाज (host society) के बीच बहुआयामी और गतिशील संबंधों से संरचित होती हैं। इन तीन घटकों में से किसी में भी होने वाले परिवर्तन (जैसे मेज़बान देश की आप्रवासन नीति, या मातृभूमि में राजनीतिक घटनाएँ) डायस्पोरा समूहों की चुनौतियों की प्रकृति और तीव्रता को बदल देते हैं।

2. ऐतिहासिक चुनौतियाँ: गिरमिटिया व्यवस्था में शोषण और बंधन

भारतीय प्रवासन के इतिहास में सबसे कठोर और दमनकारी चरण गिरमिटिया श्रम प्रणाली (Indentured Labour System) थी, जो 1834 में मॉरीशस में शुरू हुई और 1917 में समाप्त हुई। इस प्रणाली के तहत लाखों भारतीय श्रमिकों को ब्रिटिश उपनिवेशों में चीनी बागानों पर काम करने के लिए भेजा गया था।

2.1 'गुलामी की एक नई प्रणाली'

गिरमिटिया व्यवस्था को ब्रिटिश इतिहासकार ह्यूग टिंकर (Hugh Tinker) ने "गुलामी की एक नई प्रणाली" (A New System of Slavery) के रूप में वर्णित किया था। टिंकर का यह वर्णन इस बात को उजागर करता है कि यद्यपि यह व्यवस्था कानूनी रूप से दासता (Slavery) नहीं थी, लेकिन इसने श्रमिकों को बंधन (bondage) में रखा और उन्हें दासता के समान ही गरीबी और अधीनता (servitude) के एक रूप से दूसरे रूप में धकेल दिया।

2.1.1 भर्ती में छल और प्रवासन का आघात

अधिकांश प्रवासी हाशिए पर पड़े किसान, भूमिहीन खेतिहर मज़दूर, निरक्षर और भोले-भाले गरीब ग्रामीण लोग थे। उन्हें अरकाटियों (arkatis) या दलालों द्वारा धोखे (deception) से भर्ती किया जाता था, जो उन्हें बाहर की दुनिया की वास्तविकता से अनभिज्ञ रखते हुए बागानों पर काम करने की एक आकर्षक तस्वीर पेश करते थे। सैंडरसन समिति ने ब्रिटिश संसद को रिपोर्ट दी थी कि कई भारतीय उत्प्रवासी गिरमिटिया व्यवस्था और प्रवासन के सभी निहितार्थों को पूरी तरह से नहीं समझते थे। श्रमिकों को मेलों, तीर्थस्थलों और कस्बों में बहका कर जाल में फँसाया जाता था।

2.1.2 काम की कठोर शर्तें और शारीरिक उत्पीड़न

गिरमिटिया व्यवस्था के तहत श्रमिकों को कठोर और उत्पीड़क परिस्थितियों का सामना करना पड़ा।

1. अनुबंध की अवधि और मज़दूरी: अनुबंध की अवधि अलग-अलग उपनिवेशों में अलग-अलग थी, लेकिन मॉरीशस में यह अंततः पाँच साल कर दी गई, जबकि वेस्टइंडीज में शुरू में दस साल थी जिसे बाद में घटाकर पाँच साल कर दिया गया। मज़दूरी की दर अनुबंध की पूरी अवधि के लिए निश्चित (fixed rate) थी।

2. दमनकारी कार्य घंटे: ब्रिटिश गुयाना में पाँच दिन और सात घंटे काम करना होता था, जबकि त्रिनिदाद, जमैका, सेंट लूसिया और ग्रेनाडा में छुट्टियों को छोड़कर सप्ताह में छह दिन और प्रति दिन नौ घंटे काम करना पड़ता था, जो एक वर्ष में कुल 280 दिन होता था। मॉरीशस में मज़दूरों को सोमवार से शनिवार तक नौ घंटे और रविवार को दो घंटे काम करना पड़ता था।

3. दंड और नियंत्रण: काम से अनुपस्थित रहने पर मज़दूरी और राशन से वंचित कर दिया जाता था, मासिक मज़दूरी में कटौती होती थी, या 14 दिनों तक की कैद और अनुबंध को बढ़ाने का दंड मिलता था। बागान मालिकों, जिनकी मानसिकता हाल ही में दासता से मुक्त हुए दासों के प्रति जबरदस्त नियंत्रण (coercive control) की थी, उन्हें नए श्रमिकों में और पुराने दासों में कोई खास फर्क नहीं दिखता था। बागान प्रबंधकों द्वारा क्रूरतापूर्वक चाबुक मारने और घायल करने के मामले भी अदालत में लाए जाते थे।

4. जीवन की गुणवत्ता- बागानों पर जीवन दयनीय था। फिजी के गिरमिटिया (Girmitiyas) ने 1950 के दशक में बागान जीवन को 'नर्क' (narak) और 1970 के दशक में 'वेश्यालय' (kasbhigar/brothel) के रूप में वर्णित किया था। श्रमिक अत्यधिक गरीबी, कुपोषण, पुरानी बीमारी और अनुबंध के उल्लंघन के लिए जेल की सज़ा पाने के लिए मजबूर थे।

2.1.3 वापसी यात्रा का भ्रम और उच्च मृत्यु दर

1. वापसी का धोखा: अनुबंध पूरा होने के बाद वापसी यात्रा का प्रावधान था। लेकिन 'मुफ्त वापसी मार्ग' (free return passage) एक भ्रामक शब्द था। वास्तव में, मज़दूर स्वयं इसके लिए भुगतान कर रहे थे, क्योंकि वापसी यात्रा के लिए उपयोग किया जाने वाला पैसा श्रमिकों की मज़दूरी से की गई कटौती से आता था। उदाहरण के लिए, मॉरीशस में अनुबंध समझौते ने नियोक्ता को अनुबंध के अंत तक मज़दूरी का पाँचवाँ हिस्सा रोकने की अनुमति दी। त्रिनिदाद में 1898 तक, पुरुष श्रमिकों को वापसी मार्ग की आधी लागत और महिलाओं को एक तिहाई लागत का भुगतान करना आवश्यक था।

2. उच्च मृत्यु दर: शुरुआती दौर में, विशेषकर ब्रिटिश गुयाना में, अत्यधिक उच्च मृत्यु दर दर्ज की गई। 1855 से 1872 तक औसत मृत्यु दर प्रति हज़ार 44.8 थी। 1864 से 1868 के बीच गिरमिटिया प्रवासियों के बीच मृत्यु दर प्रति वर्ष 4% थी। इस अनावश्यक रूप से उच्च मृत्यु दर को वेस्ट इंडियन दासता की सबसे चौंकाने वाली विशेषताओं में से एक का पुनरुत्पादन माना गया।

2.2 शुरुआती विरोध और सुधार की मांग

इस शोषणकारी व्यवस्था को रोकने के लिए ब्रिटेन में विरोध शुरू हुआ। एंटी-स्लेवरी सोसाइटी (Anti-Slavery Society) ने भारतीय प्रवासियों के साथ अन्यायपूर्ण और सम्मानजनक व्यवहार की गारंटी न होने के आधार पर ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स में याचिका दायर की।

1. जॉन स्कोबल की रिपोर्ट: सोसाइटी ने जॉन स्कोबल (John Scoble) को ब्रिटिश गुयाना में भारतीय प्रवासियों की स्थिति की जाँच के लिए भेजा। उनकी रिपोर्ट, "ब्रीफ एक्सपोजर" (Brief exposure), ने "पहाड़ी कुलियों" (Hill Coolies) की दयनीय स्थिति को उजागर किया और कार्यकारी हस्तक्षेप के लिए आवाज़ उठाई।

2. लॉर्ड जॉन रसेल की चेतावनी: फरवरी 1840 में, लॉर्ड जॉन रसेल ने चेतावनी दी थी कि वे ऐसा कोई कदम उठाने को तैयार नहीं हैं जो "एक ओर भयानक जानमाल के नुकसान" या "दूसरी ओर गुलामी की एक नई प्रणाली" को जन्म दे।

3. विलियम डेस वोक्स की भूमिका: ब्रिटिश गुयाना में मजिस्ट्रेट के रूप में कार्यरत विलियम डेस वोक्स (William Des Voeux) ने 1869 में उपनिवेशों के राज्य सचिव को 100,000 शब्दों का पत्र लिखकर दुर्व्यवहारों को उजागर (expose abuses) करने का प्रयास किया। उन्होंने पाया कि मजिस्ट्रेट सक्रिय रूप से बागान प्रबंधकों के साथ मिलकर श्रम कानूनों का उल्लंघन कर रहे थे।

3. नागरिकता और कानूनी बहिष्करण

ऐतिहासिक शोषण के अतिरिक्त, प्रवासी भारतीयों को मेज़बान समाजों में अपनी पहचान और स्थिति को लेकर कानूनी और राजनीतिक बहिष्कार का सामना करना पड़ा।

3.1 उत्तरी अमेरिका में वैधानिक भेदभाव

3.1.1 कनाडा में बहिष्कार की नीति

20वीं सदी की शुरुआत में कनाडा में सिखों को खुले तौर पर भेदभाव (blatantly discriminated against) का सामना करना पड़ा, भले ही वे ब्रिटिश साम्राज्य के नागरिक थे।

1. निरंतर यात्रा नियम: 1908 में, कनाडाई सरकार ने 'निरंतर यात्रा' (continuous journey) नियम लागू किया, जिसने भारत से कनाडा आने वाले भारतीयों के प्रवेश को प्रभावी ढंग से प्रतिबंधित कर दिया, क्योंकि उस समय भारत से कोई सीधी यात्रा नहीं आती थी (जहाज़ों को ईंधन भरने के लिए हवाई में रुकना पड़ता था)। यह नियम विशेष रूप से एशियाई मूल के अप्रवासियों को बाहर रखने के लिए बनाया गया था, क्योंकि कनाडा ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा होने के कारण ब्रिटिश शाही नीति को सीधे तौर पर रद्द नहीं कर सकता था।

2. कोमागाटा मारू घटना: 1914 में कोमागाटा मारू नामक जहाज को वैंकूवर में उतरने की अनुमति नहीं दी गई और यात्रियों को बंदूक की नोक पर भारत वापस भेज दिया गया। यह एशियाई मूल के अप्रवासियों को बाहर रखने के लिए बनाए गए कानूनों के इतिहास में एक सबसे कुख्यात घटना थी।

3.1.2 संयुक्त राज्य अमेरिका में नागरिकता का हनन

संयुक्त राज्य अमेरिका में, भारतीयों को 1965 के आव्रजन अधिनियम से पहले तक नागरिकता प्राप्त करने में गंभीर कानूनी बाधाओं का सामना करना पड़ा।

1. भगत सिंह थिंड मामला (1923): 1923 में यूएस बनाम भगत सिंह थिंड मामले में अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि भारतीय लोग नागरिकता के लिए 'अयोग्य विदेशी' (aliens ineligible for citizenship) थे।

2. पिछला नागरिकता हनन: इस फैसले ने न केवल भारतीयों को प्राकृतिक नागरिकता प्राप्त करने से रोका, बल्कि पिछली प्राकृतिक नागरिकता प्राप्त कर चुके भारतीयों की नागरिकता को भी रेट्रोएक्टिव रूप से छीनने (retroactive stripping) की अनुमति दी, क्योंकि अब उन्हें गैर-श्वेत एशियाई के रूप में वर्गीकृत किया गया था।

इन भेदभावपूर्ण कानूनों को अंततः द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत के सहयोगी देशों से सार्वजनिक समर्थन बढ़ने के कारण समाप्त कर दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप 1946 में लूज़-सेलार अधिनियम (Luce-Cellar Act) पर हस्ताक्षर किए गए, जिसने भारतीयों को नागरिकता की अनुमति दी।

3.2 'दो बार प्रवासी' बनने का आघात (Twice Migration)

डायस्पोरा समुदायों के सामने एक और गंभीर चुनौती बहुसंख्यक राष्ट्रवाद (majoritarian nationalism) के कारण उनके निवास के पहले देश से पुनः विस्थापन (re-migration) की थी।

1. फिजी में तख्तापलट: फिजी में 1987 और 2000 में स्वदेशी फिजीवासियों के नेतृत्व में सैन्य तख्तापलट (military coups) हुए।

2. उत्प्रवासन का कारण: सैन्य तख्तापलट के परिणामस्वरूप, भेदभावपूर्ण कानूनी प्रावधानों और बढ़ते रूढ़िवाद के कारण इंडो-फिजी समुदाय को देश छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस समुदाय को न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे विविध देशों में फिर से उत्प्रवास करना पड़ा, जिससे वे एक पारराष्ट्रीय समुदाय (transnational community) के रूप में उभरे। इस अनुभव को 'दो बार प्रवासन' (twice migration) का आघात कहा जा सकता है, जहाँ उन्हें अपने पहले मेजबान देश में नस्लीय या जातीय शत्रुता के कारण फिर से विस्थापित होना पड़ा।

4. मेज़बान देशों की आत्मसातीकरण नीतियाँ और पहचान का संकट

मेज़बान देश की नीतियाँ डायस्पोरा के एकीकरण और पहचान निर्माण को गहराई से प्रभावित करती हैं। ये नीतियाँ मुख्य रूप से आत्मसातीकरण (assimilation) और बहुसंस्कृतिवाद (multiculturalism) के इर्द-गिर्द घूमती हैं।

4.1 आत्मसातीकरण बनाम बहुसंस्कृतिवाद

4.1.1 आत्मसातीकरण

1. अपेक्षित अनुरूपता: संयुक्त राज्य अमेरिका, जिसे ऐतिहासिक रूप से 'पिघलता बर्तन' (melting pot) कहा जाता है, अल्पसंख्यक समूहों से पूर्ण नागरिकता प्राप्त करने के लिए प्रमुख संस्कृति के अनुरूप होने की अपेक्षा करता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि संरचनात्मक समावेशन के लिए सांस्कृतिक जड़ों का त्याग आवश्यक हो सकता है।

2. भारतीय अमेरिकी परिणाम: 'पिघलते बर्तन' की नीति के बावजूद, भारतीय अमेरिकी समुदाय की मातृभूमि के लिए पैरवी के प्रयास (lobbying efforts for the home country) बहुत मज़बूत हैं। इसके विपरीत, मेज़बान समाज में सफल होने वाले प्रमुख भारतीय अमेरिकी राजनेता और टिप्पणीकार अक्सर अधिक रूढ़िवादी (conservative) होते हैं, जो यह दिखाता है कि सफल होने पर वे 'मॉडल अल्पसंख्यक' (model minority) बनने के लिए प्रमुख संस्कृति के मानदंडों का पालन करने की इच्छा रखते हैं।

4.1.2 बहुसंस्कृतिवाद (कनाडा और यूके)

1. **सां**स्कृतिक बहुलता का जश्न: कनाडा और यूनाइटेड किंगडम में, बहुसंस्कृतिवाद की आधिकारिक नीति सांस्कृतिक अंतरों को एक मूल्यवान संसाधन और सांस्कृतिक शक्ति की नींव के रूप में देखती है। यह एक पारस्परिक संबंध (reciprocal relationship) के लिए प्रयास करता है जिसमें सभी संस्कृतियों को स्थान दिया जाता है।

2. आलोचना: बहुसंस्कृतिवाद की आलोचना इसलिए की जाती है क्योंकि यह सांस्कृतिक भिन्नता को बनाए रखकर पहचानों के परिरोध, सीमांतीकरण और बस्तीकरण (containment, marginalization, and ghettoization) में योगदान कर सकता है। आलोचकों का मानना है कि यह सांस्कृतिक आवश्यकवाद (cultural essentialism) को पुन: उत्पन्न करता है।

3. इंडो-कनाडाई परिणाम: बहुसंस्कृतिवाद की नीति के कारण, इंडो-कनाडाई समुदाय में राजनीतिक भागीदारी अधिक है, और वे तीनों प्रमुख राष्ट्रीय पार्टियों के लिए चुने जाते हैं। हालाँकि, कनाडा में भारतीयों के एक विशेष क्षेत्र (जैसे पंजाब) से होने के कारण 'छोटा भारत' (Little Indias) जैसे सजातीय पड़ोस बनने की संभावना अधिक होती है, जिससे स्व-अलगाव (self segregation) बढ़ सकता है।

4.2 "आप मूल रूप से कहाँ से हैं?" (पहचान का संकट)

डायस्पोरा के सदस्यों को मेज़बान समाज में अक्सर "सदैव अन्य" (perpetual other) के रूप में देखा जाता है, एक ऐसी चुनौती जो पहचान के प्रमाणीकरण (auditing difference) से उत्पन्न होती है।

1. विदेशीपन का सिद्धांत: ब्रिटेन में, प्रवासी हिंदुओं पर किए गए अध्ययन बताते हैं कि यह सवाल: "आप मूल रूप से कहाँ से हैं?" (Where are you originally from?) प्रवासी को एक विस्थापित स्थान (displaced location) से जोड़कर मेज़बान समाज में उसके जुड़ाव को नकारता है। यह स्वदेशी विदेशीपन (autochthonous foreignness) के सिद्धांत पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि प्रवासी स्थायी आगंतुक है [Conversation History]।

2. पहचान का प्रमाणीकरण: ब्रिटेन की जनगणना में 'भारतीय' जैसे जातीय वर्गीकरण का उपयोग किया

जाता है, जो अप्रवासी या उनके बच्चों के लिए सदैव एक आप्रवासी सिंड्रोम (constant immigrant syndrome) और एक दूरस्थ राष्ट्र-राज्य के प्रति निष्ठा को दर्शाता है। पहचान का यह प्रमाणीकरण (audit of difference) बहुसंस्कृतिवाद के 'शून्य योग' (zero-sum) का निर्माण करता है, जिसमें सांस्कृतिक अंतरों को एक निश्चित स्थान से जोड़ा जाता है।

4.3 सांस्कृतिक पहचान का संकुचन

प्रवासी समुदायों में पहचान के प्रति एक तीव्र आत्म-चेतना (heightened self-consciousness) उत्पन्न होती है।

1. धर्म का संकुचन: अतुल नांदी (Ashis Nandy) का तर्क है कि डायस्पोरा ने पुरानी भारतीय पहचानों को संकीर्ण (narrow them) कर दिया है। डायस्पोरा में हिंदू धर्म अधिक विशिष्ट और सजातीय (more exclusive and homogenic) है, क्योंकि कई हिंदुओं ने प्रमुख पश्चिमी धर्म की संकल्पना के अनुसार इसे फिर से परिभाषित करने की कोशिश की है, जिससे यह एक 'अधिक ब्राह्मणवादी' और 'अधिक सेमिटिक' संस्करण बन गया है।

2. धर्म और संस्कृति का पृथक्करण: प्रवासी समुदायों में धर्म और संस्कृति के तत्वों को जागरूकतापूर्वक अलग करने (self-consciously distinguishing) की प्रक्रिया देखी गई है। प्रवासी अनुकूलन के लिए धर्म के आवश्यक और मूलभूत पहलुओं को सांस्कृतिक अनुषंगों (cultural accoutrements) से अलग करने का प्रयास करते हैं।

5. समकालीन सामाजिक चुनौतियाँ: नस्लवाद, विदेशी द्वेष और भेदभाव

समकालीन डायस्पोरा को भी नस्लीय घृणा और ज़ेनोफोबिया (विदेशी द्वेष) के कारण गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

5.1 नस्लवाद और विदेशी द्वेष की प्रकृति

1. विदेशी द्वेष की परिभाषा: विदेशी द्वेष (Xenophobia) उन दृष्टिकोणों, पूर्वाग्रहों और व्यवहारों का वर्णन करता है जो व्यक्तियों को समुदाय, समाज या राष्ट्रीय पहचान के लिए बाहरी या विदेशी (outsiders or foreigners) मानकर उन्हें अस्वीकार, बहिष्कृत और अक्सर कलंकित (reject, exclude and often vilify) करते हैं।

2. उत्प्रेरक कारक: विदेशी द्वेष और नस्लवाद की अभिव्यक्तियाँ अक्सर गंभीर आर्थिक असमानताओं और सीमांतीकरण (marginalization) की भावनाओं से प्रेरित होती हैं, जहाँ प्रवासी, शरणार्थी और गैर-नागरिक जैसे बाहरी माने जाने वाले समूह मुख्य लक्ष्य होते हैं।

3. आप्रवासन नीति की भूमिका: प्रतिबंधात्मक आप्रवासन नीतियों से भी नस्लवाद को बढ़ावा मिलता है। अवैध प्रवासियों (illegal migrants) को अपराधीकरण की दृष्टि से देखने और उन्हें बेरोज़गारी या अपराध का कारण बताने से विदेशी द्वेष बढ़ता है।

5.2 नस्लीय हिंसा और भेदभाव

1. अमेरिका में लक्षित हमले: 11 सितंबर के आतंकवादी हमलों के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका में सिखों

पर हमलों की खबरें आई थीं, जिन्हें गलती से अरब समझ लिया गया था।

2. भेदभावपूर्ण भाषा: वर्जीनिया के सीनेटर जॉर्ज एलन ने 2006 में एक भारतीय-अमेरिकी राजनीतिक कर्मचारी को "मैकाका" (अफ्रीका में अश्वेतों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला फ्रांसीसी अपशब्द) कहकर अपमानित किया था। भारतीय-अमेरिकी समुदाय ने इस अपमान को एक सांस्कृतिक मोड़ माना, जिसने भारतीय-जन्मे अमेरिकी नागरिकों के नवजात आत्मविश्वास को प्रदर्शित किया।

3. रोजगार में भेदभाव: यूरोपीय देशों में किए गए सर्वेक्षणों से पता चला है कि रोजगार तक पहुँच में सीधा भेदभाव मौजूद है। यूरोपीय देशों में अप्रवासी श्रमिकों और जातीय अल्पसंख्यकों के बीच उच्च बेरोजगारी दर दर्ज की गई है।

6. श्रम बाज़ार में शोषण और उच्च मानवीय लागत

डायस्पोरा, चाहे वह पारंपरिक हो या उच्च-कुशल, श्रम बाज़ार में शोषण और असुरक्षा के विभिन्न रूपों का सामना करता है।

6.1 कम कुशल और अनाधिकृत श्रमिकों का शोषण

1. मज़दूरी में अंतर: कोरिया में विनिर्माण फर्मों के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि विदेशी श्रमिकों को राष्ट्रीय श्रमिकों द्वारा अर्जित मज़दूरी का आधे से भी कम प्राप्त होता था। यह प्रवृत्ति कई अन्य देशों में भी मौजूद है।

2. अनधिकृत प्रवासियों की असुरक्षा: जिन प्रवासियों के पास कानूनी दर्जा नहीं होता, वे मेज़बान देश की एजेंसियों के लिए 'अदृश्य' (invisible) हो जाते हैं, जिससे उनके शोषण और भेदभाव का जोखिम बढ़ जाता है। उन्हें अक्सर निर्वासन (deportation) की धमकी देकर संघों में शामिल होने या विरोध करने से रोका जाता है।

6.2 उच्च-कुशल प्रवासियों की मानवीय लागत

यहां तक कि आर्थिक रूप से सफल और उच्च-कुशल डायस्पोरा को भी सामाजिक सुरक्षा और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उच्च मानवीय लागत (high human costs) का कारण बनती हैं।

1. पारिवारिक निर्भरता और घरेलू हिंसा: संयुक्त राज्य अमेरिका में, H-1B वीज़ा धारकों की पत्नियों को H-4 वीज़ा दिया जाता है, जिसके तहत उन्हें काम करने की अनुमति नहीं होती है। वे पूरी तरह से अपने पतियों पर निर्भर हो जाती हैं। सैन फ्रांसिस्को स्थित एक दक्षिण एशियाई महिला संगठन मैत्री को 2000-2001 में घरेलू हिंसा (domestic violence) की रिपोर्ट करने वाली 1,500 से अधिक H-4 महिलाओं के फोन आए थे। यह निर्भरता और अलगाव एक मानव सुरक्षा की कमी को दर्शाता है [Conversation History]।

2. दहेज का नया स्वरूप: उच्च-कुशल प्रवासियों के संदर्भ में, दहेज (dowry) की संस्था ने एक नया रूप ले लिया है। आंध्र प्रदेश में, दहेज को आईटी प्रशिक्षण और उत्प्रवास के लिए प्रायोजन (sponsorship) के रूप में इस्तेमाल किया गया है। यह 'असंगठित क्षेत्र से संगठित क्षेत्र में, ग्रामीण से शहरी, और स्थानीय से वैश्विक तक अधिशेष मूल्य का प्रत्यक्ष हस्तांतरण है। अमेरिका-आधारित दूल्हे के लिए दहेज की दर ऑस्ट्रेलिया-आधारित दूल्हे की तुलना में लगभग **दोगुनी** थी।

7. पारराष्ट्रीय सक्रियता के नकारात्मक परिणाम: दूरस्थ राष्ट्रवाद और कट्टरपंथ

डायस्पोरा अपनी मातृभूमि के प्रति अतिरंजित लगाव (exaggerated and intensified senses of attachment) या आलोचना की भावनाओं के माध्यम से पारराष्ट्रीय राजनीति में शामिल होता है, जिसे 'दूरस्थ राष्ट्रवाद' (Long-distance Nationalism) कहा जाता है। यह जुड़ाव कभी-कभी भारत की सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए नकारात्मक परिणाम उत्पन्न करता है।

7.1 कट्टरपंथ और वित्तीय नेटवर्क

स्टीवन वर्टोवेक (Steven Vertovec) बताते हैं कि पारराष्ट्रीय वि-प्रादेशिकीकरण (deterritorialization) अक्सर वैश्विक कट्टरपंथों (global fundamentalisms) को जन्म देता है, जिसमें इस्लामी और हिंदू कट्टरपंथ शामिल हैं।

1. खालिस्तान आंदोलन: खालिस्तान की स्थापना का आंदोलन, जिसे 'वि-प्रादेशिकीकृत सिख आबादी' (deterritorialized Sikh population) का एक 'आविष्कृत मातृभूमि' (invented homeland) कहा जाता है, को कनाडा, यूके और यू.एस. में बसे सिखों से भारी समर्थन और वित्तपोषण प्राप्त हुआ।

2. हिंदू कट्टरपंथ: विश्व हिंदू परिषद (VHP) और भारतीय जनता पार्टी (BJP) जैसे भारत में दक्षिणपंथी धार्मिक संगठनों को विदेशी आबादी से पर्याप्त समर्थन और वित्तपोषण प्राप्त होता है। यह आरोप भी लगाया गया है कि गुजरात में हुए मुस्लिम विरोधी हिंसा को डायस्पोरा परोपकार के माध्यम से वित्तपोषित किया गया था।

7.2 धार्मिक संघर्षों का वैश्विक प्रभाव

मातृभूमि की राजनीतिक और धार्मिक घटनाएँ तुरंत डायस्पोरा समुदायों के त्रिपक्षीय संबंधों (triadic relationships) को प्रभावित करती हैं।

1. बाबरी मस्जिद विध्वंस (1992): अयोध्या में बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद, यह घटना तुरंत पारराष्ट्रीय मीडिया के माध्यम से प्रसारित हुई। इसके परिणामस्वरूप, यूके में कई हिंदू मंदिरों और सांस्कृतिक केंद्रों को क्षति पहुँचाई गई, जिससे डायस्पोरा के भीतर सांप्रदायिक ध्रुवीकरण हुआ। इस घटना ने दिखाया कि कैसे मातृभूमि की राजनीति में सांप्रदायिक तनाव (communal tensions) तत्काल वैश्विक प्रभाव डाल सकते हैं।

8. निष्कर्ष: निरंतर संघर्ष और संकरता

भारतीय डायस्पोरा ने ऐतिहासिक गिरमिटिया गुलामी के बंधन से लेकर उच्च-कुशल पेशेवर बनने तक एक लंबी यात्रा तय की है। उनकी सफलता को आर्थिक समृद्धि (जैसे उच्चतम औसत घरेलू आय) और शैक्षिक उपलब्धियों (जैसे अमेरिका और कनाडा में उच्च डिग्री) के संदर्भ में मापा जाता है।

लेकिन यह सफलता चुनौतियों के बिना नहीं आई है। कानूनी बहिष्करण (थिंड मामला), सामाजिक भेदभाव (जैसे नस्लीय हमले), और मेज़बान समाज में पहचान का संकट (आत्मसातीकरण का दबाव) निरंतर चुनौतियाँ रही हैं। बहुसंस्कृतिवाद जैसी उदार नीतियाँ भी 'छोटा भारत' जैसे स्व-अलगाव और पहचान के प्रमाणीकरण (accountable ethnic) को जन्म दे सकती हैं। इसके अलावा, दूरस्थ राष्ट्रवाद के माध्यम से मातृभूमि के संघर्षों में भागीदारी वैश्विक सुरक्षा और भारत के हितों के लिए नकारात्मक परिणाम ला सकती

है।

डायस्पोरा समुदाय एक गतिशील, संकरित पहचान (fluid, hybridized identity) के साथ इन चुनौतियों का सामना करते हैं, जो मेज़बान संस्कृति से समझौता किए बिना अपनी सांस्कृतिक जड़ों को बनाए रखती है, लेकिन इन प्रक्रियाओं में उन्हें अक्सर उच्च मानवीय और सामाजिक लागतों का भुगतान करना पड़ता है। उनकी कहानी लचीलेपन, सांस्कृतिक रूपांतरण और मेज़बान समाज तथा मातृभूमि दोनों के साथ निरंतर संवाद की आवश्यकता को दर्शाती है।

SUGGESTED READINGS

- Raj, Dhooleka Sarhadi. (2003). Where Are You From?: Middle-Class Migrants in the Modern World. Berkeley: University of California Press.
- Varadarajan, Latha. (2010). The Domestic Abroad: Diasporas in International Relations. Oxford: Oxford University Press.
- Clarke, C et al. (1990). South Asians Overseas: Migration and Ethnicity by. Cambridge: Cambridge University Press.

20CUS01671

20CUS01671